आर्यावर्त की महागाथा—२

# लोमहर्षिणी

कन्हैयालाल माणिकलाल मुन्शी

सर्वाधिकार सुरक्षित
प्रथम बार १९४८

---

गोपीनाथ सेठ द्वारा नवीन प्रेस दिल्ली से मुद्रित।
राजकमल पब्लिकेशन्स लिमिटेड द्वारा भारतीय
विद्याभवन बम्बई के लिए प्रकाशित।

---

मूल्य साढ़े चार रुपये

# आमुख

१९२१-२२ में [illegible] पुराणों को [illegible] मैंने पौराणिक विषयों पर नाटक लिखना प्रारम्भ किया। उस समय से मेरा [illegible] था कि मैं महाभारत के [illegible] की [illegible] की कृतियों को एक माला लिखूँ।

इसके लिए जो मैंने कुछ [illegible] अध्ययन किया था वह निम्नांकित लेखों में प्रकट किया है।

(१) प्राचीन भारत व इतिहास के [illegible] ([illegible] १९२२)।

(२) [illegible] ([illegible] १९२१)।

(३) [illegible] पुराण ([illegible] विश्वविद्यालय में १९२८ में दिये हुए [illegible] व्याख्यान)।

(४) [illegible] (सन् १९२७ में पूने के [illegible] में [illegible] पढ़ा हुआ [illegible])।

(५) [illegible] ([illegible] प्रथम खंड)।

इसके [illegible] (इसे [illegible] महाभारत ही कहा जा सकता है) [illegible] लिखने का [illegible] था। इसके अनुसार मैंने १९२१ में '[illegible]' १९३१ में '[illegible]', १९३४ में '[illegible]', [illegible] १९३२ में [illegible] [illegible] महाभारत के [illegible] के [illegible] से [illegible] [illegible]। फिर तीन नाटक '[illegible]' [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] के चार भागों में प्रकट हुआ है। तब मैंने [illegible] लिखने का ही विचार [illegible] [illegible] नाम, [illegible] और [illegible] होता है। [illegible] के चार [illegible] में [illegible] जाता है।

पहला स्कन्ध

(१) [illegible] को गुरु। [illegible] का [illegible] करता है [illegible] और [illegible] किया गया है। [illegible] और [illegible] की [illegible] आदि [illegible] होता है। ( [illegible] )

( ) [illegible] [illegible] जिला वालों का [illegible]

(३) [illegible]

और इनकी रचना हुई है उनमें से कितनी ही ऋग्वेद के मन्त्रों से ली गई हैं।

(१) आर्यों और दस्युओं के बीच युद्ध चल रहा है। भृगुओं का राजा दिवोदास दस्युओं के राजा शम्बर को मारकर उसके गढ़ ले लेता है।

(२) ऋषि लोपामुद्रा महर्षि अगस्त्य का सत्कार करती है और उनसे विवाह कर लेती है।

(३) भृगुओं का पुरोहितपद जो भृगुओं के पास था, विश्वामित्र को प्राप्त होता है।

(४) विश्वामित्र ऋषि गायत्री मन्त्र का दर्शन करते हैं। इसके साथ कितने ही पुराणों की बातें भी ले ली गई हैं।

(५) भार्गव ऋचीक नर्मदा तटपर स्थित महिष्मती को हैहय जाति के राजा सहस्रार्जुन का शासन रहता। नर्मदा-तट से सरस्वती तट पर आते हैं गाधि-राज की लड़की से वे विवाह करते हैं। उन्हें जमदग्नि नाम का पुत्र उत्पन्न होता है। गाधि-राज के भी विश्वरथ नाम का पुत्र उत्पन्न होता है। मामा भांजे दोनों साथ ही पाले-पोसे जाते हैं।

(ख) विश्वामित्र और वशिष्ठ में वैर स्थापित होता है।

(ग) विश्वरथ भी राजपद छोड़कर ऋषि बन जाते हैं और विश्वामित्र के नाम से पुकारे जाते हैं।

इन बातों के आधार पर 'विश्वरथ' 'ऋचीक कन्या' और 'गायत्री' और 'विश्वामित्र ऋषि' रचे गए हैं।

## तीसरा स्कन्ध

"ऋग्वेद" में सम्मिलित मुनि वशिष्ठ और भार्गव के मन्त्र जिस काल में प्रकाशित किये गए—जिसे सम्भवतः ऋग्वेद काल कहा जा सकता है—उस समय की यह कथा लोमहर्षिणी है। इसे निम्नांकित घटनाओं के आधार पर विकसित किया गया है—

(१) भृगुओं के राजा सुदास का पुरोहित विश्वामित्र के पास था

उसे वशिष्ठ से लेते हैं।

(२) एक ओर वशिष्ठ द्वारा प्रेरित सुदास और दूसरी ओर विश्वामित्र द्वारा प्रेरित दस राजाओं में परस्पर युद्ध छिड़ जाता है जिसे 'दश राज्ञ' कहा गया है।

(३) विश्वामित्र आर्य दस्यु के भेद को दूर करने के लिए प्रयत्नशील थे। व शिष्ठ मुनि आर्यों की सनातन शुद्धि और विद्या के प्रतिनिधि थे।

(४) अजीगर्त के पुत्र शुनःशेप का नरमेध हो रहा था उसे विश्वामित्र ने रोका। इस प्रसङ्ग का उल्लेख ऐतरेय ब्राह्मण में आता है।

(५) राजा सुदास के सहायक जो वीतहव्य थे वे ही पुराणों में वर्णित नर्मदा तट पर स्थित हैहय तालजंघ जाति के लोग थे। पुराणों में कहीं भी परशुराम का बालपन वर्णित नहीं है।

चौथा स्कन्ध

(१) इसमें भगवान् परशुराम का जीवन आजाता है। इसका कथानक पुराणों में लिया गया है। ऋग्वेद के काल और ब्राह्मण ग्रन्थों में वर्णित काल में कैसे परिवर्तन हुआ तत्सम्बन्धी कथा इसमें है।

(२) इसके उपसंहार रूप तपस्या हो सकता है जिसमें श्रीराम जाकर परशुराम से आग्नेयास्त्र प्राप्त करते हैं।

इस प्रकार शुक्राचार्य से लेकर सगर राजा तक की कथाओं का इन चार स्कन्धों में समावेश होता है।

इस महानाटक के लिए जो आधार हैं वे कुछ नाटकों में श्री गुणाकर शास्त्री जी द्वारा दी गई टिप्पणियों में और ऊपर दिये हुए रूशों नाटक प्रकरणों में प्राप्त होंगे।

ये पुराण-कथाएं एक अर्वाचीन उप यामकार द्वारा गत पचास वर्षों में रची गई कृतियां हैं। महाभारत, रामायण और भागवत के कर्ताओं ने बहुत सी काल्पनिक सामग्री का समावेश किया है पर उस शताब्दियों ने पवित्र बना लिया है। मैंने जिस सामग्री का समावेश किया है उस कितने ही सज्जन अपाप भी मानेंगे।

किन्तु मेरे सम्मुख तो एक ही प्रश्न था—वैदिक और पुराणकाल के दर्शन करने पर कराने का। यह स्वनिर्धारित कर्तव्य पूरा करने में सामग्री के शोध के लिए मैंने ऋग्वेद और पुराण की यथासम्भव सहायता ली है। पर यह तो सामग्री ही है। यह महानाटक तो उससे कहीं कुछ अनन्य कलाकृति है। मानव-जीवन के जो आदर्श और मर्म का इस सांस्कृतिक है उन्हीं से यह प्रयत्न किया गया है।

१९२२ से १९४२ तक २१ वर्षों में यह महानाटक पूरा हुआ है। उज्ज्वल ध्वनियों और प्रखर प्रसंगों के जो स्वप्न देखे थे उन्हें इसमें अभिलिखित करने का प्रयत्न किया गया है।

वशिष्ठ सरस्वती के अनुसार हव्य-कव्य और विवाद का प्रश्न कोसलपुत्र की मर्यादिनी शक्ति राम दाशरथि की बात यहाँ विश्वामित्र का अपहरण-अपमान और परशुराम के जितने ही जीवन प्रसंग में प्रधान कथानक में एकत्रित करना मानता हूँ।

इक्ष्वाकु से राम तक की अविच्छिन्न परम्परा इसमें है। इस प्रकार की एकसूत्री व्यवस्था के बिना सनातन धर्म परम्परा का ज्ञान कभी नहीं हो सकता था। भारत और भारतीय इतिहास के एक-एक युग इसके द्वारा हुए हैं।

मुझ पर एक आक्षेप अवश्य किया जायगा कि इस महानाटक में मैंने अनुश्रुत के अन्तरालों से ही कथा प्रारम्भ की है। मैं सदैव का अनन्य साधक हूँ इसलिए पुराणों ऐसा ही करेंगे। किन्तु जो कथा उपलब्ध है व तो मान्य करेंगे कि अनुश्रुत वैदिक और पुराणकाल का महत्त्वपूर्ण क्षेत्र था। इक्ष्वाकु देवयानी, च्यवन सुकन्या, मन वती और रेणुका, वसिष्ठ अगस्त्य, परशुराम और कवि वाल्मीकि और और मन्वन्तर आदि बड़े अपनी कथा हैं। इन्हीं पौराणिकों का स्थान-स्थान पर उल्लेख मिलता है। महाभारत अनुश्रुतों का महाग्रन्थ है, पर तो एक का मुकाबला वैसे विद्वान भी स्वीकार कर रहे हैं। और ऋषियों में यदि कोई ईसा के पहले स्वीकृत किए गए हों तो

वे अकेले भगवान् परशुराम ही हैं। हिमालय में स्थित परशुरामकुंड से लेकर त्रावणकोर तक के स्थान स्थान उनकी पुण्य-स्मृति से अंकित हैं। सम्पूर्ण महाभारत उनके प्रताप से देदीप्यमान हो जाता है।

• भारतीय कल्पना ने सहस्रों वर्षों तक इस मनुष्य के आदर्श सजीव रक्खे हैं। इस सजीवता में अर्वाचीन काल के उपयुक्त यदि मैं अणुमात्र भी वृद्धि कर सकूं तो अपनी एक-चतुर्थ शताब्दि की उत्कण्ठामय तपस्या को पूर्णतया सफल मानूंगा।

२६ रीज रोड
२१।५२

कन्हैयालाल मुन्शी

# पहला खण्ड

# मुनियों में श्रेष्ठ

१

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

कुछ पल चलकर सुदास ने चारों ओर देखा। नदी में कोई स्नान करता दिखाई दिया और वह उसकी प्रतीक्षा करता हुआ खड़ा रहा।

मुनि अगस्त्य के भाई और तपस्वियों में श्रेष्ठ वसिष्ठ स्नान करके पीने के पानी का घड़ा कन्धे पर रखकर नदी से बाहर निकले।

जब इनके ज्येष्ठ भाई अगस्त्य [illegible] की [illegible] करके [illegible] में निवास किया तब [illegible] के साथ भरतों के राजा दिवोदास [illegible] तब [illegible] से [illegible] होकर उन्होंने राजा दिवोदास का पुरोहित पद और आश्रम दोनों का परित्याग कर दिया। [illegible] और [illegible] में [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] की [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] की [illegible] [illegible] किया। अब [illegible] ने [illegible] और [illegible] में [illegible] और [illegible] को [illegible] हुए मुनियों को भी [illegible] किया था।

राजा ने मुनि के पास पहुँच [illegible] [illegible] मुनिवर [illegible] प्रणाम करता हूँ।

"[illegible] [illegible]।"

"मुनिवर! आपने मुझको [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" कहकर [illegible] [illegible] के साथ चलने लगा।

"हाँ क्या बात है?"

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] नहीं। [illegible] और [illegible] का [illegible] [illegible]"

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] करने के [illegible] से [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]"

मुनि ने कहा।

कर बरबराने लगे और वे कुछ दूर तक सुदास पर चलते रहे। केवल उनके पद में घुसकर हुए पानी की ध्वनि सुनाई पड़ रही थी।

'सुनो सुदास,' मुनिश्रेष्ठ ने धीरे-धीरे कहा, 'जब विश्वामित्र मुनि अगस्त्य ने अपनी लोपामुद्रा से विवाह किया और विश्वामित्र ने ब्राह्मणत्व प्राप्त कर तुम्हारे पिता के पुरोहित बने तभी मुझे प्रतीत होने लगा था कि मेरे तप का अन्त हो गया। जब यह माना जाने लगा कि आर्यों की शुद्धि में तप नहीं है, मैं मंत्रद्रष्टा न रहा, मैं असमर्थ का द्रष्टा हूँ तब मैं तुम्हारे पिता को छोड़कर यहाँ आश्रम में आकर रहने लगा। जो मुझे सत्य प्रतीत होता था उसे छोड़ने के लिए मैं तैयार नहीं था।' वसिष्ठ मुनि रुक गए और उन्होंने आकाश की ओर देखा।

पूर्व क्षितिज पर श्वेत रेखाएँ दिखाई देने लगी थीं। उसके प्रकाश में सुदास ने धवलश्वेत दाढ़ी और जटाजूटों में भरे हुए वसिष्ठ के तेजस्वी मुख पर छाई हुई गंभीरता की छाया ध्यानपूर्वक देखी।

'सुदास!' वसिष्ठ बोले, 'अन्य देवों ने मेरे पास सैकड़ों शिष्य भिजवाए। मेरा पुत्र शक्ति मेरा शिष्य और तप के कारण मुनियों में श्रेष्ठ पद प्राप्त कर सका। कितने ही आर्य राजाओं ने मुझे गुरुपद पर स्थापित किया। जिस संस्कार शुद्धि के लिए मैं प्रेरित हूँ वह असत्य नहीं है, यही ज्ञान है तथा इन्द्र का विश्वास भी हुआ। तुम्हारे पिता जैसे महान् राजा के पुरोहित पद पर रहकर गुरुपद का उपभोग करना जो सरल काम थी किन्तु आज बीस वर्ष हुए, केवल मेरे तपोबल से ही देवों ने मुझे अधिक शक्ति दी। निःसन्देह देवगण मेरा उपयोग करना चाहते थे।'

'गुरुवर! आप तो समस्त [illegible] के उद्धारक हैं।'

वसिष्ठ ने सुदास की आँखों में देखा और उनके मुख पर गांभीर्य छाया और वे हँस दिए। 'सुदास! तुम मेरे पास अपने स्वार्थ के लिए आए हो। विश्वामित्र का [illegible] तुम्हारी नस-नस में विष फैला जाता है और मेरे बिना तुम उसमें पार नहीं पा सकते।'

"गुरुदेव ! मैं उस सम्मान का भी इच्छुक हूँ।"

"यह मैं जानता हूँ," वसिष्ठ मुनि ने मुस्कराकर कहा, "तुम्हारे द्वारा यज्ञ-कार्यों में ध्यान रखे जा रहे हैं इसलिए तुम और तुम्हारे सम्बन्धी अब व्याकुल होते हैं।"

"यह सत्य है," सुदास ने कहा।

"तात को तुम तब बुलाने गए थे जब मैंने तुम्हें एक पद का अधिकारी बनाया था। इसको क्या अब जानते हो? न, तुम्हारा विश्वास इस कसौटी पर कमला बनता था।"

"आज जिस कसौटी पर आप मुझे कसना चाहते हैं मैं तत्पर हूँ। इसीलिए तो आज मैं आपके पास चला आया हूँ।"

"मुझे प्रसन्नता होगी कि तुम्हें ज्ञात हुआ कि मुझे तुम्हारा पुरोहित स्वीकार करने का अवसर हो जायेगा।" वसिष्ठ ने कहा।

"क्या विलम्ब किसलिए?"

"कल सूर्योदय तक मैं देव की आज्ञा लूँगा। यदि आज्ञा प्राप्त हुई तो मैं तुम्हें 'हाँ' कहूँगा।"

"गुरुदेव ऐसा न करना," सुदास ने विनती की।

"यह बात मेरे हाथ में नहीं है, औरों के हाथ में है। अतः फिर तुम्हारा मन विचलित होने का कुछ नहीं बनता है।"

"वे ?" सुदास ने पूछा।

"तुम कल जाकर अपने सहायकों से मिल बातें करना और वो कहें उनके सूचना कल निकालना।"

"इसका तो आशय है हाँ।"

"नहीं, इन्होंने मेरे प्रतिद्वन्द्वियों का लिया जान तो समझ ही है। फिर तो तुम इस प्रकार चिन्तित क्यों होते ?"

सुदास को यह उत्तर सुनकर जैसा आश्चर्यजनक अनुभव हुआ, पर इस समय उस प्रश्न करने के अतिरिक्त दूसरा चारा भी नहीं था।

[illegible] यदि [illegible] ने मुझे [illegible] करने की [illegible] है तो [illegible] ने कहा।

[illegible] विद्यालय के पास [illegible] भेजना [illegible] ने कहा।

विद्यालय के पास? [illegible] ने चौंककर पूछा [illegible]?

[illegible] कि [illegible] मुझे देना चाहते [illegible]

[illegible] या नहीं। [illegible] ने कहा।

[illegible] क्या यह भी [illegible] है? इससे उसका क्या सम्बन्ध?

[illegible] दिखाई दिया।

[illegible] और मेरा [illegible] भिन्न है। [illegible]

[illegible] नहीं हूँ [illegible]

[illegible]

[illegible] क्या होता? [illegible] मुस्करा दिया।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

विचार करें पर एक बात लोगों को स्पष्ट दिखाई देती थी कि जब तक वशिष्ठ उनकी पीठ पर न हों तब तक विश्वामित्र से वे छोड़ा नहीं ले सकते थे।

परन्तु महाजन तो आर्तों के मारे टूट करने को तैयार हो बैठे थे। अतएव उन्हें तो यही चाहिए था कि वशिष्ठ पुरोहितपद स्वीकार करें। दासों को जो स्वातन्त्र्य मिला था वह उन्हें पसन्द न था। कितने ही आर्य भी दासियों से विवाह करने लगे थे यह बात भी बहुत से आर्यों को खटकती थी। इसलिए दासों पर अंकुश रखने वाला शासन उनके बहुत मन का ही था, पर आर्याओं पर अंकुश रखने का शासन उन्हें अच्छा नहीं लगेगा। इससे घर घर झगड़े होंगे। महाजन यदि इस शासन का अनुमोदन भी करेंगे तो भी एक-दूसरे पर कटाक्ष किये बिना न रहेंगे। वह स्वतः लोपा द्वारा ही इस शासन का पालन कैसे करावेगा?

लोपा को वश में रखना कठिन काम था। राजा दिवोदास ने इस लड़की को बहुत सिर चढ़ाया था। जो बचा-खुचा था वह लोपामुद्रा ने पूरा कर दिया था। आर्यों का एक भी ऐसा शिष्टाचार नहीं था जिसे वह तोड़ती नहीं थी। प्रायः वह पुरुषों का वेश बनाती, धनुष बाण चढ़ाती, जंगल में घूमती, दासों के घर जाती और बड़े बड़े आर्यों की लड़कियों पर प्रभुत्व जमाकर उनके घर फोड़ती थी। वह जंगली बिल्ली है, गुरु ने स्नेह से विचार किया। उसमें लोपामुद्रा के सब दोष आगए थे यह बात सच थी किन्तु उसके अनुपस्थित होने के पश्चात् तो वह अत्यन्त निर्लज्ज हो गई थी। किसी का कहा मानने को वह तैयार न थी। तब उसके आचार को वह किस प्रकार ठीक करता? इस बिल्ली के लिए उसे बहुत बड़ा स्नेह था। जब वह आती तब तो वह अपने साथ प्रोत्साहन लाती थी। उसके अल्हड़पन में जो आवेश था वह उसे लाल पड़ता था मानो मेरे अपने हृदय में उठती हुई महत्त्वाकांक्षा का ही स्वरूप हो। सब लोग उसके डर से या स्वार्थ से उसकी ओर आकृष्ट होते थे किन्तु लोपा ही एक

दृष्टी थी या किसी की चिन्ता किए बिना निःस्वार्थ भाव से हो सब की भला के कामना थी।

इस अच्छा विद्रोह को किस प्रकार शान्त-बन्द किया जाय यह पहेली उसके सामने उपस्थित हुई। उसने तो सोचा था कि वसिष्ठ आर्यगण और उस कुमन्त्रणा को रोक कर देंगे। उसके मन में कुछ ऐसा भी था कि लोपा ही वसिष्ठ को तंग करके कुछ ठीक मार्ग पर ले आयेगी।

कुछ समय पूर्व जब पुरु से प्रथम वसिष्ठ रूठ से लोपा के साथ बात करते थे। तब किस चातुर्य से लोपा ने रोक कर लिया था? उसी प्रकार यदि वह वसिष्ठ को भी रोक करे तो क्या आनन्द आवे। पर वसिष्ठ ने तो यह काम उस पर ही छोड़ लिया। इस सम्बन्ध में वसिष्ठ स्वयं को ही दोषी-स्वयं समझ रहे थे। लोपा स्वच्छन्द और स्वच्छन्दप्रिया था। वहाँ उसमें वह को ही कुछ भी पर उसका कारण विचलित था। हो [illegible] पक्षों को इतना हो चुका था।

यह काम राजा सुदास का ठीक था न लगा। राजा के परन्तु भावों का यदि पुरोहित से लिए भेद तो यह है इस काम का? उसके अनेक को मन यदा इस वसिष्ठ के बिना ऐसा नहीं हो सकता था।

न उसी दृढ़ता के कारण में ऊँच नीच के पहले ही सुदास तृत्सुगण पहुँच गया था। पहुँचकर सबसे पहले इधर का पता था कि तृत्सु महाजनों का गुरु हो चुका।

इधर तृत्सु महाजनों का अधिपति था। वह राजा दिवोदास के पौत्र मित्र का पुत्र और तृत्सु सभा का नायक था। तृत्सु का वह नाम मित्र और राजनीति का था पर राजनीति इस बहुत अभिमान था। वह कभी इस बात को नहीं भूलता था कि मैं तृत्सु हूँ तृत्सु विश्वामित्र का प्रमुख, राजाओं का प्रकाश और भावों का इच्छा हुआ स्वाभाव उस कोट के समान समझता था। किन्तु तृत्सु महासभा के अधिवक्ता राजा दिवोदास ने उस राजव्यवस्था को सहन किया था और मतानुसार बनाया था भ्रकुटि चढ़ाकर उस हस्त [illegible] था में विराजा इसके गुरु व [illegible]

५

राजा और सेनापति दोनों उद्यान में टहलते हुए आगे बढ़ रहे थे।

इतने में ही उन्हें चिड़ियों के गाते हुए आने की आवाज सुनाई दी और एक युवती को [illegible] आता हुआ देखा, जिसका [illegible]।

राजा और सेनापति मानों जहाँ-के-तहाँ खड़े हो गए। युवती का हृदय भरा हुआ। जिसकी वह प्रतीक्षा कर रहा था वह उसीकी [illegible] थी। यदि इस समय वह उसे न सुनाई पड़ी होती तो बहुत कुछ हो जाता। वह अपनी निराशा में न जाने क्या क्या कर बैठे।

यहाँ की सुगन्ध से एक युवती आगे बढ़ [illegible] रह गई।

[illegible] की [illegible] का मन्द माता-सा गुलाबी [illegible] इस समय दौड़ने से और व्याकुलता से लाल हो गया था। उसकी आँखें चंचलता से भरी हुई थीं और उसके सुन्दर बाल खुल पड़े रह गए थे। उसके सब अङ्ग सुन्दर और सुडौल थे।

चन्द्र के समान उसने भी सौन्दर्य का जादू [illegible] रखा था। कमल पुष्पों पर रखे हुए चन्द्र के प्रकाश में उसने अपना सौन्दर्य स्वीकार किया था। जैसे इसको देखना उस [illegible] मानो, कोई सुन्दर चाँदनी [illegible] मारती हुई पवन वेग से दौड़ी चली आ रही हो।

[illegible] के साथ [illegible] वाली बालिका होगी तो लगभग बारह वर्ष की पर लगती थी सत्रह अठारह वर्ष की। उसका शरीर [illegible] और सुन्दर था। उसके [illegible] हुए मुख पर इस अवस्था की [illegible] था। उसका [illegible] —बहुत कम ही— [illegible] था। और [illegible] में रहने वाला प्रसन्नता और स्थिर [illegible] इस समय उसमें चमक रही थी।

सुगन्ध से [illegible] पर वाला खड़ी हो गई—हाँफती हुई अपने [illegible] हुए छोटे-छोटे स्तनों से [illegible] हुई और अपनी

दोनों ने मान उसका किया । आज हा राज्य सदा की गद्दी है क्या उसको ग्रहण न करोगे पाहन हो ? मूँदी नेत्र कहा ! कहकर इसके मुँह पर हाथ रख कर सम्मान को उसने अनुभव किया "इस राज्य का शासन अपना तो की है पर उसका रहना अपने पुत्रवधू देवी के कारण हानि नित्य करके भी पश्चात् भाये दुःख में न होगी ।

इतना ही नहीं कि इन दोनों के बाद में यह स्पष्ट हो पर्व ट किया गया न्युन करना कृतता कार मर्यादा के वधू के भी नवापि की पर्वों प्रारंभ होने इस हप से आवश्यकता रह गया ।

बाबा' सुनाथ ने कहा ग़ुरु हो जाओगे नहीं तो—

"नहीं तो क्या कर गो फिर कमर पर हाथ रखकर बाबान ने हँस कहा । सुदास न बाबा का हाथ पकड़कर उस हक्का लिया आया बार में उसका । पर लियों में शत्रु न मारा है न ? तब शुद्ध बुद्धन में रहा बिना न रहूँगा ।

हरिनाक ममन उठकर उसने अपना हाथ छुड़ाया इसके रखना व स्पष्ट मुनि को जो बुझावना उसके न मारू व दूँगा । अपने पिता की बनाई हुई व्यवस्था में किसी का विरोध न दूँगी समझे ? अब मैं समझा कि पुत्र के रहते हुए भी राजा दिवान्स ने विश्वामित्र को पुत्र क्यों माना था !

इन वाक्यों से सुनाम का हृदय बिंध गया । वह कातरता हो गया । काफी बहुत दूर तो किया हुआ भी यह अपमान सहन नहीं किया जा सकता था । उसने बाबा के एक तमाचा लगा दिया । तत्काल ही एक के हाने हो सुनाग के मुँह से एक पसा धार निकली मानो उसके दाँत निकल रहे हों दुख !"

इस तरह मारकर शान्ति खींचकर इगन लगा । तब ने सुनाम के बाएँ हाथ पर हरिहम वरिष्ठ कवच डाकर बना लिया था और राजा भी उस समय हाथ भूककर बच्चा का अनुभव करने लगे थे ।

बच्चा होते ही सुनाम ने तलवार खींचनी चाही पर उस तो विद्युत्

सुरम्य वन में आश्रमों के आसपास के वातावरण में शान्ति छाई रहती थे। उनके पास से निकलकर वे सघन वनों के बीच से होते हुए एक रमणीय स्थान में आ पहुँचे। सुरम्य सरोवर के समीप हम दो थे उस के पास एक छोटी-सी झोंपड़ी थी जो गुरु की झोंपड़ी कहलाती थी। उसके पास ही एक दूसरी झोंपड़ी थी जिसमें वह बालक में रहता था।

अपार हर्ष हृदय में हुआ भय उस छोटी झोंपड़ी में घुसा और सौन्दर्य तथा सुरूप की प्रतिमा एक लावण्यमयी युवती निर्मलिनी लता हुए उससे लिपट गई।

"प्रिय भय!"

भय ने अपने सशक्त हाथों से उसका आलिंगन किया। "क्या है? कुछ कह भी तो?"

"अब हम दोनों का अन्त आ पहुँचा। तुम्हारा क्या होगा?" उस युवती ने उदास हृदय से कहा।

"पर बात क्या है यह तो बताओ?" हृदयेश्वरी के कंधे पर झुककर भय ने पूछा।

"राजा चाहते हैं कि विश्वामित्र को हटाकर वशिष्ठ को पुरोहित पद दे दें।"

"तो उससे क्या?" भय समझ न पाया।

"अर्थात् तुम घोर संकट में पड़ जाओगे। अभी राजा ने घोषणा की है कि जो भी इन अपराधों के साथ सम्बन्ध रखता है उसका तत्काल वध कर दिया जाय। इसलिए मैं चाहती हूँ भय! तुम भाग जाओ मुझे मृत्यु नहीं छुएगी।" हृदयेश्वरी की आँखों से आँसू बह पड़े। भय ने उसका चुम्बन ले लिया।

"तुम क्यों घबराती हो? किसकी ताकत है कि मेरा बाल भी बाँका कर सके?"

"नहीं! तुम इन बातों को जानते नहीं हो। कितने ही समय से

"क्यों वे दोनों भीतर हैं ?" कप्तान ने पूछा।

"हाँ, कोठरी में दो हैं। सब लोगों को अपनी आँखों से भीतर जाते देखा है।"

बूढ़े के इस कथन का मज़ा हुआ और उसे निश्चय समझकर हृदय को धैर्य बँधा, सन्देह का भाव नहीं रहा। इन लड़कों के सामने अपनी लिखी हुई मर्यादा किसी भी प्रकार बचाना हो तो ऐसा संकल्प करके वह कप्तान का अनुग हो गया।

"क्या तुम्हें विश्वास है कि राजपथी चोर के समान इस सुरंग द्वार से आनी होगी ?"

"जी हाँ, बहुत बार। वह तो अपने मामा के मकान में होकर या इस चोर रास्ते के साधन में होकर आती है।"

"अच्छा ?" शंकायुक्त स्वर में इंस्पेक्टर ने पूछा।

"हाँ, मैंने स्वयं उसे आते देखा है।"

"तब हम लोग एक काम करें। मैं कोठरी के पीछे खड़ा रहता हूँ और तुम अपने दो मित्रों के साथ कोठरी के द्वार पर खड़े रहो। यदि वह राजपथी निकलेगी तो मैं पकड़ लूँगा और तुम अन्य को पकड़ लेना। मैं नहीं जानता था कि तुम लोगों की बुद्धि कठिनाई में भी ऐसी चलेगी ! अगर पकड़ जायगा तो कार्यों में हम सबकी बड़ी सफलता होगी।"

कप्तान भी इंस्पेक्टर का आदर करता था। इसलिए उस पर दया कर उसने यह योजना स्वीकार कर ली। इंस्पेक्टर जाकर गुफा की कोठरी के पीछे खड़ा हो गया और लड़के सब उसके द्वार पर लाठियाँ उठाकर खड़े हो गए। पत्तों की छाया के कारण कोठरी में अँधेरा था। केवल किसी पक्षी के पंखों की फड़फड़ाहट से ही नीरवता भंग होती थी।

एक बड़ी देर तक वहाँ पर कोठरी में से निःश्वास तक सुनाई न दिया। अन्त में लड़कों ने द्वार पर कान लगाए तो जान पड़ा कि कोठरी निर्जन है।

कप्तान भी जाकर इंस्पेक्टर को बुला लाया और उसने द्वार में धक्का

लगे। इन प्रयत्नों में व अधिक सफल न हुए तो वे ब्राह्मण और इस कोट में आग लगे वाले अपने सब मिलकर उधर पहुँचे जिधर दूसरे लोग रहते थे। वहाँ जितने लोग मिले उन सबको मारा और स्त्रियों के घर भस्म कर दिये। मन्त्रकाल को देखा विकट जान पर वे कुछ वीर अतिशय सन्नद्ध बनाकर अपने अपने घर लौट गए।

८

राजा सुदास के पास आने पर मुनि-श्रेष्ठ वशिष्ठ पुनः स्वयं की कल्पना में लीन बैठे। यह स्वाभाविक पुरोहितपद में था न थे यह प्रश्न उन्होंने इस अवस्था में पूछा पर व वर्षों के इस जीवन वाले स्वाभिमान ने उन्हें यह पद लेने का चाव दिया था या नहीं यह वे निश्चित न कर सके। किन्तु जिस अवसर के लिए वे आजन्म से प्रयत्नशील रहे वह सामने उपस्थित हो गया है यह उन्हें निश्चित प्रतीत होने लगा।

प्राचीन ऋषियों में इन वशिष्ठों का स्थान सर्वाधिक प्रिय स्थान था उनका पिता और तप की पैतृक सम्पत्ति प्रथम उन्हें गुरु के आश्रम में प्राप्त हुई थी तथा स जीवन के इस परम कर्तव्य के बारे में उन्हें कभी शंका नहीं हुई।

यदि उन्हें यह परम कर्तव्य पूरा करना न होता तो बाल्यकाल में ही वशिष्ठों के विशाल आश्रम में तप करने वाले सैकड़ों शिष्यों में उनको प्रमुख क्यों स्वीकार किया जाता और युवा ही अवस्था में उन्हें वशिष्ठों का कुलपति पद क्यों प्राप्त हुआ? उन्हें तभी से स्पष्ट भान होने लगा था कि आर्यों के संस्कार विद्या और विधि को यथावत् पूर्णतया शुद्ध रखने का परम कर्तव्य उन्हीं के उनके ही सिर डाला है। गत सत्तर वर्षों के सतत आत्म-चिन्तन पर वशिष्ठ ने दृष्टिपात किया तो उन्हें स्पष्ट दिखाई देने लगा कि इस कर्तव्य को पूरा करने की आवश्यक योग्यता प्राप्त करने में उन्होंने प्रत्येक क्षण और प्रत्येक वृत्ति का उपयोग किया है।

आज तो देवों ने उन्हें कसौटी पर कसने में कुछ कसर उठा न रक्खी

थी। उनके बड़े भाई भगवन्त के प्रखर व्यक्तित्व के विरुद्ध उन्हें कितने ही वर्षों तक अकेले ही आगे बढ़ना पड़ा था। राजा दिवोदास निरन्तर दस्युओं के साथ युद्ध किया करते थे। उनके परिणामस्वरूप आर्य अपने कुलाचार छोड़कर अपने घरों में दास रखने लगे उनकी स्त्रियों के साथ सम्बन्ध करने लगे और उनके पुत्र आर्यों के संस्कार अनुसार करने लगे। कितनी ही आर्या भी दासों के साथ सम्बन्ध रखने लगी थीं। देवों की आराधना में स्खलन होने लगा था। कितने ही आर्य तो दस्युओं के देवों की भी आराधना करने लगे थे।

इन्होंने बहुत तप भी किया किन्तु इस अधोगति से आर्यों के उद्धार करने का मार्ग उन्हें नहीं सूझा। अपने तप के बल से वे केवल मन्त्रों के आधार शुद्ध रख सके।

आज उनके विस्मय और आनन्द प्रसंगोंकी कल्पना पुनः हरी हो उठी। जब ऋत ने भी गंगा ने अपना न किया। [illegible] और [illegible] ने [illegible] के [illegible] पुत्र ने दासों के साथ [illegible] करके उनके संस्कार के [illegible] को भी तिरस्कार किया था इस को कम करना [illegible] फिर तो इन्हें न वसिष्ठ को कभी पर कथन में कोई [illegible] न [illegible]।

फिर [illegible] को वध किया गया पर आगे आगे भी जब आर्य न [illegible] [illegible] कर [illegible] था। [illegible] इस [illegible] आर्यों के [illegible] में न रही [illegible] लगा। [illegible] उनको [illegible] के [illegible] [illegible] होगया [illegible] [illegible] में [illegible] [illegible] और [illegible] मित्र ने इस का [illegible] [illegible]।

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है [illegible] मुँह में [illegible]।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], इस [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] उनको [illegible] [illegible] है [illegible] इस [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] उनके मन में [illegible] था।

[illegible] उन्हें [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] कि [illegible] [illegible] [illegible] के [illegible] [illegible] उन्हें [illegible] [illegible] हुए हैं [illegible] [illegible] भी [illegible] [illegible] [illegible]

उन्होंने धीमान्-शिष्य को वहाँ विश्रामित वहीं में नहीं। जहां आत्मा की शुद्धि न हो, वहाँ बन्धन नहीं रह सकता।

क्यों न उन्हें विचित्र शक्ति प्राप्त हो और सम्पूर्ण आत्म सहित व सुगुणधाम में चल दिए। अन्धमतता के विरुद्ध ज्योति प्रदान उन्होंने निराभिमान होकर अपने मन में उत्पन्न हुए अभि सत्यमय का वरण किया।

इन्हीं द्वारा दिया हुआ आत्मधन आज उन्हें सफल होता दिखाई देता था। अब हम उन्हीं के द्वारा भावों के संस्कार सरल करने की आशा का समय आ पहुँचा था। तभी गिरि गुफियों में ध्यान बलिष्ठ मुनीन्द्र का रूप देखकर सब के मन में ... अनुसरण के साथ वह ... की आराधना कर रहे थे।

आराधना पथ का अधिकारी उनका भावी उनकी प्रत्येक श्वास में तल्लीन रही थी। उनका बड़ा पुत्र शक्ति और उनके प्रमुख शिष्य सब गुरु पर हाथ जोड़कर बैठे थे।

सब जानते थे कि गुरुदेव आज देव की जो आज्ञा माँग रहे थे वह अभी तक प्राप्त नहीं हो सकी है। किन्तु उस कर्तव्य के लिए उन्होंने ... देखकर वे सब अननुभूत आनन्द का अनुभव कर रहे थे। मुनि जो कर रहे थे उसमें संयम दृष्टिगोचर होता था। वे जो अभिप्राय ध्यान में डाल रहे थे वह भी अभ्यास से पार विचार पूर्वक। वे मुनि की आराधना करते समय मग्न होकर ... के रहस्य साधन में ध्यान-मग्न हो गए। मुनि में ज्योति प्रज्ज्वलित हुई। इससे ... सूचित होता था कि एक शिष्य ... इस प्रश्न का उत्तर-सा सूचित किया कि मैं ... पारखी ... उनका पुत्र ... और ... महाराज आए हैं।

वे सब चले आए।

... अब जोड़ में ... हृदय में बह ... के साथ चली गई। ... ने अपने परिवार के साथ ज्यों-ज्यों उस ... को अपने पास पर बैठाकर उसे राजप्रासाद के पास उतार दिया।

"ओ हो!

लोपावती ने एक हूक भरी दृष्टि वशिष्ठ पर डाला। वशिष्ठ तो कलश की ओर ही देख रहे थे।

हम सब आपका स्वागत करने के लिए व्याकुल हो रहे हैं कौशकी ने कहा।

राम के मुख पर मृदु हास्य छा गया "अब!

इन बातों का अब हो क्या जानना हो रानी ने पुकार किया।

"क्या आप अब भी ऋषि विश्वामित्र को लौट जाने की आवश्यकता समझते हैं?" हय रव ने पूछा हमें तो आवश्यकता नहीं जान पड़ती।

'तुम्हें न जान पड़ती हो यह मैं समझता हूँ किन्तु उनकी अनुमति के बिना मैं नहीं जा सकता। बस!" उन्होंने दूर बैठे हुए शक्ति की ओर देखकर कहा "तुम तत्काल पहले हो चले आओ। फिर हम उनकी ओर देखकर उन्होंने कहा किन्तु जान पड़ता है अभी राजा सुदाम का स त पूरा नहीं हुआ।

रानी ने कहा "राजा ने आपके बहन को स्थान में बंधना आरम्भ किया है। लोपावती ध्यान से सुनने लगी।

वह मैं नहीं जानना चाहता था मुनि ने कहा।

तब?"

"मैंने तो पूछवाया था कि वह क्या करना चाहती है? मुनि ने कहा।

'वह त या राजा कहँगा नहीं करेगा रानी ने विश्वास दिलाया।

अच्छा? मुनि ने शंका की म नहीं मानता।

मुनि की शंका का मूर्तिमान करते हुए सहसा लोमहर्षिणी और राम वहाँ आ पहुँचे। आगे ब्रह्मचारी के वेष में था।

राम ने हाथ म ऊपर कहा ' राम ।"

यह रूप विनय और कान्ति देखकर मुनि और भी अधिक आकर्षित हुए। आप दूसरा आयो करकर उन्होंने उनका हाथ खींचकर अपने पास बिठा लिया आयो की कान्ति उज्ज्वल करता था ? विनय ने अकर प्रणाम किया था। मुनि ने अयोध्या तथा रेणुका के समाचार पूछे।

मुनिवर आप म कहा ' मैं आपसे कुछ कहने आ हूँ। ]

मुनि कुछ उत्तर दिया कहा ? पर फिर अन्ति की ओर देखने लगा।

कहा कि मेरा आ, ने आपको पुत्र करने का निमंत्रण दिया है उसे आप स्वीकार न करें।

"अरे ! यह क्या कहती है ? राजा कहना म घबराकर बोली।

"कहने दो राम। मुनि ने कुछ हँसकर पूछा 'क्या ?"

"अच्छा बात कह दूँ ?

"यहाँ सच हो कहने आई है न ?"

ऐसा मुनिने विश्वामित्र का मेरे पिताजी पुरोहित बना गए हैं। मैं अपने पिताजी के वचन अपने मुँह के द्वारा मिथ्या न होने दूँगी।

"आ राजा हो वह पुराहित का प्रतिष्ठा करे मुनि ने कहा।

"इतने वर्षों के पश्चात् आप क्यों आते हैं ? आप अस्वीकार कर दीजिए

"मुझे इस की आज्ञा होगी तो अवश्य आऊँगा।

"किन्तु इन्हें तो विश्वामित्र ही चाहिए। ज

' मेरे प्रति इतनी अरुचि क्यों ? हूँ

"मेरे पिता कुछ आलस्य और भगवती शताक्षुधा के लोकों को कुछ कर गए हैं वह सब आप लिया आप चाहते हैं इसलिए ! कहो

"यदि ईश्वरकृपा को पुन स्थापना में राम हो तो अवश्य दोष हो करने के लिए मन ने मुझे आपकी आज्ञा की है।" अन्तिम

“[illegible] ।”

“[illegible] हो ?”

[illegible] के [illegible] हूँ ।”

“[illegible]

[illegible] ।”

[illegible] ।

[illegible] ।

[illegible] ने पूछा ।

“[illegible] हो ।” [illegible] ने कहा ।

“[illegible] ही है [illegible] ।”

“[illegible] करता है ।”

“[illegible]

[illegible] ।

“[illegible] ।

[illegible] ।”

“[illegible] ने पूछा ।

“[illegible]

[illegible] ।

[illegible]

[illegible]

थी। उसने बहुत-बहुत यत्न करके [illegible] का भी सामना किया [illegible] भी वह [illegible] वस्तु के [illegible] उसने वध किया [illegible] जिस [illegible] था कि [illegible] हो कानों के साथ [illegible] [illegible] उसको [illegible] [illegible] करने को [illegible] हैं। [illegible]

[illegible] उसके [illegible] और [illegible] [illegible] उसके [illegible] यही दिखाई दे रहा था। [illegible] ही [illegible] [illegible] था। वह [illegible] था। वह [illegible] था।

[illegible] उसे [illegible] में [illegible] को [illegible] थी। यदि [illegible] हो गया तो [illegible] होगा। [illegible] को [illegible] के [illegible] के साथ [illegible] थे।

[illegible] पूर्वक [illegible] ने [illegible] स्थिति का विचार किया। [illegible] वह [illegible] था [illegible] वह [illegible] हुए [illegible] उसके लिए [illegible] परस्पर विरुद्ध कैसे हो सकते हैं? यह तो [illegible] का [illegible] था।

[illegible] उसके कान में [illegible] रहे।

इतने में [illegible] महाराज [illegible] [illegible] उसका [illegible] दिख [illegible] [illegible] किसी-किसी के घर [illegible] भी [illegible] [illegible] की [illegible] हुई था।

अन्त का [illegible] हुआ।

यह उसका राजा, राजा [illegible] का पुत्र इस प्रकार कायर के समान छिपकर घूम रहा था। [illegible] यह [illegible] प्रकार [illegible] गया। [illegible] वह [illegible] गया। [illegible] यह तो [illegible] था [illegible] का था

[illegible] व बाधा [illegible] वह तो वध करने के काम है

इस बालक [illegible] हो वह ऐसी थी [illegible] हो व [illegible] मुख का [illegible] थी [illegible] मुख में [illegible] वह [illegible] थी। [illegible] वह [illegible] हो [illegible] [illegible] था [illegible] था। [illegible] वह [illegible] हो व

इसके [illegible] दिन [illegible] किन्तु [illegible] थी [illegible] वह क्या [illegible] कि वह राजा [illegible] का पुत्र है [illegible] हैं [illegible] के लिए हो [illegible] इसको [illegible] हुए [illegible] वह [illegible] हो तो [illegible] कर सकते हैं ? इस [illegible] इसके [illegible] का भी [illegible] कि [illegible] नहीं था तो [illegible] [illegible] का [illegible] कर सकेगा ?

इस प्रकार विचार करते हुए [illegible] ने [illegible] का [illegible] किया। [illegible] पर वह [illegible] इसके [illegible] इसके [illegible] [illegible] हुए [illegible] को [illegible] का [illegible] कर [illegible] [illegible] कर दी।

कुछ [illegible] पर [illegible] का [illegible] किया। [illegible] हो गया [illegible] सब [illegible] को [illegible] [illegible] के [illegible]। उन्होंने [illegible] की [illegible] इसको [illegible] के लिए [illegible] का प्रबन्ध [illegible] किया था। [illegible] दिन इस [illegible] वह समझ [illegible]।

[illegible] के [illegible] हो [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] दरवाजा [illegible] का [illegible] थे। [illegible] [illegible] हुआ कि [illegible] राजा सुदाम का था।

[illegible] होने पर भी वह [illegible] न [illegible]। [illegible] [illegible] पर [illegible] के [illegible] में यह [illegible] में [illegible] हुआ कि [illegible] में [illegible] रहा है।

आश्रम के पास से वह विवाहित भामा को उठा ले जाय तो ? ठीक ठीक यही वसिष्ठ को उसका सीधा और सच्चा उत्तर होगा ।

वह शम्बर के निन्यानवे गढ़ों का स्वामी था । पल भर में उसने खड्ग निकाला और अपने घोर स्वर का युद्ध घोष किया— इ इ इ ऊ ऊ ऊ।

वसिष्ठ ऋषि इस गर्जना को सुनकर चौंककर पीछे घूमे ।

सुवर्णमय कवचों से सुसज्जित काला काला प्रचण्ड घोड़े पर हाथ में अंकुश लिये टकड़ी पर से उतर कर चला आ रहा था

आर्यों की युद्ध घोषणा सुनाई न पड़ी होती और सुदास के शरीर का श्याम वर्ण दिखाई न पड़ा होता तो वे समझते कि वृत्र को मारने वाला इन्द्र ही चला आ रहा है, पर यह तो कोई दस्यु था ।

वे जहाँ खड़े थे वहीं खड़े रहे । उनकी आँखों से चिनगारियाँ निकलने लगीं । निरायुध दशरथ और महाजन घबराहट से दूर हट गए । इस आकस्मिक भय को रोकने में असमर्थ गांधारी रानी घबराहट से चिल्लाने लगी और बेसुध होकर भूमि पर गिर पड़ी ।

अरुन्धती जहाँ की-तहाँ स्तब्ध खड़ी रह गई । घबराई हुई आँखों से उसने अपने राजा भरत का मुँह देखा ।

इन्द्र के वज्र के समान घोड़ा उनकी ओर बढ़ता चला आया । उसे हाथ से रोक लेने के कारण वह बड़े झटके से खड़ा हो गया ।

दशरथ और हनुमान महाउग्र भाव में बढ़ चुके अपने धनुष बाण तान लिए ।

राजा भरत ने घोड़े को सँभाला, अद्भुत कला से उसे घुमाया और दूसरे ही क्षण पास में खड़ी हुई अरुन्धती की कमर में हाथ डालकर उसे घोड़े पर चढ़ा लिया । वह चिल्लाई ।

वसिष्ठ और दो महाजन घोड़ा पकड़ने के लिए आगे बढ़े ।

पीछे से छलाँग मारी और इस प्रकार टकड़ी पर चढ़ गया मानो

# दूसरा खण्ड

# चतुरदेव

। १ ।

कान्हविदी राम और विमद साथों घोड़े पर चढ़कर राजा हरिश्चन्द्र के यहाँ जाने के लिए चल पड़े।

कामना बड़ी प्रसन्न थी। इधर कुछ ही अरसे में सुनाम और बलिष्ठ दादा को पुकारा था गुरुकुल का संकुचित वातावरण छोड़कर बाहर चली गई थी और राम के साथ घूमने निकली थी। राजा हरिश्चन्द्र की सन्तान और भगवती शाकम्भरी की शिष्या के नाते वह स्वरचित मन्त्र में दिव्य देवता की प्रार्थना करने जा रही थी। इस कारण उसके हृदय में कल्याणेच्छा का भाव भी मिश्रित था।

वह और राम दोनों बराबर-बराबर घोड़े पर चढ़ चले जा रहे थे। वह उसके लिए बहुत सुख की बात था। राम के अश्व-संचालन-कौशल पर वह मन में मुग्ध हुई जा रही है। जब वह घोड़े पर बैठता था तब उसका रूप बन जाता था। चौदह वर्ष की अवस्था में ही वह अश्व विद्या में निपुण हो गया था। ... भी उसका स्वर सुनकर ही ... हो जाता था। अन्य पशुओं को भी ठीक करना ... पक्षियों को इशारे और ... का भी वह जानता था।

इस समय भी वह एक ऊँचे घोड़े पर तना बैठा था—... गम्भीर ... । उसका मस्तक सुख तेज से तप रहा था। उसकी कजरी-कजरी आँखों का तेज बड़ी ... लगता था ... थी।

कहीं बच्चा को दुःखकर सचमुच न चला जाना पड़े इसलिए उसने आँसू रोककर रोना बन्द कर दिया था, ऐसा कुछ उसे स्मरण था।

वह ऋषि के पास बैठा रहा। ऋषि भी पत्नी को बिछुड़न से घबराये हुए थे। सामने वृद्ध कवि बैठे थे। वे वृद्ध भगवत् कुछ इधर उधर की बातों में बहलाकर ऋषि को आश्वासन देते थे।

बालक को स्मरण था कि उसी समय से वृद्ध कवि ने यह गीत करना प्रारंभ कर दी था ... सुनो वत्स! वे कह रहे थे, यदि इस समय भगवती का युद्ध ठान दो तो उस बालक को हाथों सौंपना पड़ेगा। कौरवों का युद्ध विद्या का स्वामी मैं हूँ। तुमने तो कुछ सीखा नहीं। मैंने सब विद्या सुरक्षित रख रखी है। वह सब तुम्हारा इस पुत्र को मुझे सिखानी है।

वृद्ध कवि इस प्रकार बोलते ही रहे। ऋषि वह बन्दनाद भाव से मग्न पढ़ते जा रहे थे। बाहर सरस्वती के बहते हुए जल की ध्वनि आ रही थी ऊपर से मूसलाधार वर्षा हो रही थी रह-रहकर बादल गरज रहे थे बिजली चमक रही थी और रात्रि की अँधेरी में से कहीं की चिल्लाहट सुनाई दे रही थी।

बालक को वह रात अभी तक स्मरण थी। सबने आराम किया था और घेरे की झोंपड़ी में वृद्ध स्त्रियाँ आ दौड़ धूप कर रही थीं वह भी सुनाई दे रहा था।

वह कितनी दूर तक जगी थी और कितनी दूर तक उसने स्वप्न के झोंके खाए थे यह उसे स्मरण न था। रात के पिछले पहर में एक एक कच्ची चिल्लाहट सुनाई दी थी कि वह हक्का ... बालक का हृदय धड़कने लगा था और वह अनमनेपन में विरत हुए थे वृद्ध कवि भी उस समय सब ... उठे थे।

फिर इस प्रकार चिल्लाएँ कि जैसे किसी ने ... हनन किया हो और बालक भयभीत होकर रो पड़ा। वृद्ध कवि ने उसे उठाकर गोद में ले लिया।

के समान चमकती थीं उसके गहर-गम्भीर स्वर का गर्जन दूर तक सुनाई देता था और उसकी छोटी-सी वज्रमुष्टि पर्वत में ही शक्ति के समान पड़ती थी। किसी और को विश्वास हो या न हो। किन्तु सम्पा और वृद्ध कवि तो दोनों उस इन्द्र ही मानते थे।

जैसे-जैसे वीर आगे बढ़ते जाते थे वैसे-वैसे आशा को ये दिन स्मरण होते जाते थे।

राम अब दो महीने का था तभी से इस सम्बन्ध में झगड़ा प्रारम्भ हुआ कि वह किसका है। सम्पा तो इस पुत्र के पीछे पागल होगई थी और सब काम-काज छोड़कर उसी को स्नेहमात्र में मग्न रहती थी। वृद्ध और वे दोनों मिलकर पागल के समान राम को हँसाने का प्रयत्न करते थे किन्तु उनके प्रयत्नों का तिरस्कार करते हुए राम सदा रहता और आँखें निकालकर घूरता रहता था। वह जब कुछ चाहता तो रोता नहीं था वरन् वृषभ के समान चिल्लाता था। और जब वह अपने आप हँसता तब तो ऐसा लगता था मानो चारों ओर वसन्त रंगोलियाँ कर रहा हो। वृद्ध कवि भी वर्षों के मन का भूजकर सा कुछ-कुछ पागलपन ... वह भी आमोद आई था। मात मृत्यु और मृत्यु को सतुष्ट सभा ... पति सहस्रों स्थल श्रोता उद्भट बार बार हास्यविधाने सर्वोपरि आप ... जिनके हुँकार से समस्त कलरव शान्त हो उठता था वे कवि आप ... वृद्ध के समान होगए। वे सम्पा के पास की झोंपड़ी में रहने चले ... । वृद्धाओं का एकत्र करके छोटे बच्चों का पालन-पोषण की सब ... उन्होंने स्वयं का और राम की स्वभाव में माया पड़ती जान ...

वृद्ध कवि और सम्पा किन्हीं प्रश्नों पर लड़ पड़ते थे। राम को हवा में रखा जाय या न रखा जाय किस ओर से इस धूप ... चाहिए इस धूप किस प्रकार दिखाया जाय उनके सिर पर तब ... या नहीं इन सब बातों पर वृद्ध कवि और सम्पा जब बहुत ... सम्पूर्ण ऋषि के सिर [illegible] निपटाने का कुछ भार आता

सच्चा स्वभाव निश्चित करता थी? इसमें कितना परिवर्तन किस प्रकार हो? इस विषय में उत्कण्ठा भी स्पष्ट हुई। विश्वामित्र जैसे ऋषि द्वारा शिक्षा का लाभ यदि राम को न मिलता तो उस समय प्रचलित परिस्थिति में वह कुल का नाम किस प्रकार उज्ज्वल रख सकता है? इसकी भी चिन्ता उन्हें हुई। और इतने कष्ट सहकर जो उच्च पद्धति का लाभ न मिलता तो क्या परिणाम होता इसका भी विचार उन्होंने किया। उन्होंने ऋषि विश्वामित्र से बातें कीं। उन्होंने सम्मति भी प्रकट की। उन्होंने भगवती लोपामुद्रा से पूछा। शिक्षा पद्धति के विशेषज्ञ कुछ तपस्वियों से भी इस विषय में पूछा गया।

बहु परिश्रम से अन्त में यही निश्चय हुआ कि सनातन धर्म प्रणालिका के अनुसार गुरु के आश्रम में रहकर ही शिक्षा शोभा पा सकती है और शास्त्रीय धर्म के परिशिष्ट [illegible] के आश्रम में रहकर विद्या [illegible] के लिए अनुपयुक्त कहा जायगा। [illegible] अनुभव की शिक्षा में वह तो निम्न श्रेणी की ही रहेगी और उस [illegible] कोई स्वीकार नहीं कर सकता। परिणामस्वरूप राम को विश्वामित्र के साथ वन के लिए रवाना कर दिया गया।

अन्त में विश्वामित्र ने वृद्ध ऋषि का सम्मान कर उनका आशीर्वाद ग्रहण किया [illegible] सन्ध्या के समय बहुत ही धैर्य और सुरुचि के साथ उन्होंने राम के विषय में छिपा हुआ रहस्य सुनाया। यह सुन [illegible]। [illegible] हुए, [illegible] ऋषि विश्वामित्र ने समझाकर कहा कि विद्या का विषय [illegible] से अधिक है। [illegible] दूसरे को उसे समझाना बहुत कठिन है। [illegible] वहाँ से उठकर चले गए।

उस रात को वृद्ध [illegible] अपनी कुटिया में चले गए। दूसरे दिन सवेरे उनका कुछ पता नहीं चला। सब [illegible] करने लगे। [illegible] के [illegible] और [illegible] में [illegible] भाव को छोड़कर चले गए इससे सब ओर हाहाकार मच गया। [illegible] और विश्वामित्र

कि समन्गिनि की आत्मा के अनुसार इनके साथ बन्द अनुमान चला गया है। वह सुनकर भी यह एक शब्द तक न बोला।

सन्ध्या हो चुकने पर वह पुनः पूजागृह में गया। पूजन की तैयारी कर साथ लिया था उस आश्रम के बाहर एक पेड़ से हाथ बाँधा।

भोजन के पश्चात् उस रात जाग लगी थी। रेणुका ने सदन की सौंप उस भोजन के लिए कहा। उसकी आँखों में नींद भर गई थी।

प्रतिदिन नींद कम आती है इस समय भी राम को कुछ ज्ञान था। इन्द्र ने जिस ... पुत्र को हराया था उसका निद्रासुर नाम का एक पुत्र था। रात होते ही उस पहले के लिए वह दुष्ट आता था। इन दोनों को आपस में लड़ना पड़ता था पर अब राम उसे मारकर हटाता था तब पूर्व प्रातःकाल होता था। आज उसने निद्रासुर को बड़े ध्यान के लिए बहुत समझाया पर उसने एक न मानी। राम चौंक पड़ा कर उठा। आज उस अन्धकार के स्वामी को मारकर भगाना ही था। उसे लगा कि वह दुष्ट असुर उसके बाएँ हाथ की उँगली पर बैठा है।

वह उठकर बाहर गया और एक कोठे में बाएँ हाथ की उँगली पर बैठे हुए असुर पर घाव किया। विकराल आँखों से वह उँगली को घूर रहा और उसमें से जब असुर का रक्त बह निकला तभी उसे शान्ति हुई। वह मासरी में लौट आया। असुर भाग गया। राम की आँखों में नींद उड़ गई। और फिर जब असुर आकर उसकी आँख पर बैठा कि तुरन्त उसने बाएँ हाथ की वह उँगली दबाकर असुर का रक्त निचोड़कर उसे हटाया।

रात होनेपर उसके सिर पर वात्सल्यपूर्ण हाथ फेरकर रेणुका समन्गिनि की झोंपड़ी में चली गई। राम के साथ जो घर सोती थी वह सोने लगी तब तक उँगली दबाकर वह निद्रासुर के साथ लड़ा। फिर वह उठा और स्नानकर्म वगैरा पावन किया और झोंपड़ी से बाहर निकल आया।

से उसे पुकारा। पर कुछ उत्तर न मिला। वह स्वप्न में नवागत भी दुर्दमनीय राम को गले लगाए। फिर कमरे में आकर हाथ फेरा फिर भी राम बिस्तरे में नहीं था। वह घबराकर उठा 'राम! राम!' कोई उत्तर न मिला। तब वह घबराकर बाहर आई 'राम! राम!' वह चिल्लाई। राम का कोई पता न था।

वह जमदग्नि की झोंपड़ी के पास जाकर चिल्लाई। 'अम्बा! अम्बा! राम न जाने कहाँ चला गया।' चारों ओर की झोंपड़ियों के लोग जाग उठे। रेणुका घबराई हुई बाहर आई और भाग की बात सुनी। उसके मातृहृदय में तुरन्त ही भय का सञ्चार हुआ और वह भूमि पर गिर पड़ी। विवाह के दिवस से उसने अपने पति-पुत्र को इष्ट से भी अधिक माना था। आज उसकी यह आशापूर्ण मधु टपकती आँखों से बहती रही।

'पु… मेरे राम…' अश्रुपूर्ण उसका स्वर सबने सुना। 'तुम मुझे छोड़कर कहाँ चले गए? मैं जानती ही थी कि ये सब हाथ धोकर तुम्हारे पीछे पड़े हैं व तुम्हें सुख से शान्तिपूर्वक नहीं रहने देंगे।'

ऋषि जमदग्नि इस विलाप का कारण नहीं समझ पाए। "इस प्रकार क्यों रोती हो? वह इधर उधर गया होगा, अभी आ जायगा।"

इन शब्दों से रेणुका को तनिक सा आश्वासन न मिला। माता की दृष्टि से ही ऐसी अनचाही कितनी ही सूक्ष्म बातें उसे स्मरण हो आईं। जब राम का दूर जाने की बातें होती थीं तब उसके बालमुख पर प्रकट होने वाले हठपन और उमंग का उसे स्मरण था। वृद्ध कवि का जाना सुनकर राम की आँखों में उत्पन्न होने वाले तेज की स्मृति हो आई। उन बड़ी-बड़ी काली आँखों के तेज की भाषा वह अच्छी जानती थी। उसमें एक ही अर्थ उसने पढ़ा था— मैं विश्वामित्र के आश्रम में नहीं जाऊँगा।

अम्बा की आँखों से आँसू बहने लगे 'मेरे लाल इन्द्र! तुम मेरे पास क्यों नहीं रहे? तुम्हें तो सब मेरे पास से छुड़ा लेना चाहते थे। मेरे बड़े और तीन लाल पुत्र मेरे पास से दूर हुए यह तो मैंने ज्यों-त्यों सहा,

आश्रम के भृगुओं के हृदय में कटु असन्तोष और विपरीत भावना भय छा गया।

महाअथर्वण जानते थे कि जिस समय समुद्र के इस पार से भृगुओं को सप्तसिन्धु में ले आये थे उसी सभ्यता और प्राचीन समय के वे थे। इस समय की धारणा और विद्या उन्हें स्वयं ज्ञात नहीं थी। अगस्त्य, लोपामुद्रा, वसिष्ठ, विश्वामित्र और जमदग्नि ने जहाँ तक आर्य संस्कार का विस्तार किया था उन्हें वे अधार्मिक मानते थे।

आर्यों द्वारा प्राप्त विजय और समृद्धि से जो आनन्द और उल्लास बढ़ा था उसके प्रति इनका तिरस्कार समस्त सप्तसिन्धु में ज्ञात था।

उन्हें भृगुओं पर बहुत गर्व था। भृगुओं की अथर्वण मंत्र विद्या उन्हें पसन्द थी। इस विद्या से शत्रु मर जाते थे। वसिष्ठ विश्वामित्र और जमदग्नि की विद्या को वे समझते भी न थे और उन्हें वह अच्छी भी नहीं लगती थी। इस महाअथर्वण के शिष्य की वृद्धावस्था की एक ही इच्छा थी कि भृगुओं की मंत्र विद्या और शस्त्र विद्या की पैतृक सम्पत्ति वे किसी योग्य भृगु को दें।

विश्वामित्र की सम्मति में जमदग्नि भृगुश्रेष्ठ के योग्य न निकले। यह उनके हृदय में गड़ा हुआ कष्टजनक अभिशाप था। अपने पुत्रों को उन्होंने अच्छी तरह शिक्षित किया था किन्तु फिर भी उन्हें शान्ति नहीं मिली थी। विनम्र बुद्धिशाली थे किन्तु शस्त्र विद्या के अतिरिक्त उन्हें और कुछ अच्छा नहीं लगता था। जमदग्नि के तीनों पुत्र मंत्र विद्या और कर्मकांड में कुशल थे पर इन सब में महाअथर्वण होने योग्य एक भी नहीं था।

निराशा उनके हृदय में घर करने लगी। पर बिजली की चमक, बादल की गरज और वज्रपात के साथ राम का जन्म हुआ तब ऐसी श्रद्धा उनके हृदय में हुई कि उनकी आशा सफल होगी।

सहस्रों वर्षों की सब अभिलाषाएँ उन्होंने राम के ऊपर केन्द्रित की थीं। इस विराट् और तपस्वी बालक पर उन्होंने अपना प्रेम ही

घोड़ों के टापों की ध्वनि दूर से सुनाई दी। और वृद्ध कवि का ध्यान टूटा।

कौन है?  बाहर निकल आते हुए उन्होंने पूछा।

"गिनाओ  कश्यप हम और मैं हूँ  विनय का स्वर सुनाई दिया। घोड़ों से उतर कर वृद्ध कवि के पैर छुए।

बैठो  उन्होंने कहा था। उनके हृदय में ममता का संचार हुआ।

गुरुदेव  ने हाथ जोड़कर कहा "महर्षि अगस्त्य और राजा विश्वामित्र ने हमें भेजा है।

किसलिए?" आश्चर्य चकित से वृद्ध ने पूछा। उनके मुख पर उदासीनता थी और क्रोध था।

"आप इस प्रकार क्यों  क्या  आपकी शोभा होती है? इससे समस्त सप्तसिन्धु में सबकी अपकीर्ति होगी।

तुम्हारी कीर्ति और अपकीर्ति से मेरा क्या सम्बन्ध है? आज साठ हजार वर्ष का मैं तुम्हारी कीर्ति बढ़ाने में विलग्न हूँ। अब मेरा रक्त पीना चाह रहा है।

वृद्ध कवि को उनसे इस बैर के समय समझाना बहुत कठिन था और इन सब का बचपन से इसका अनुभव था। इसलिए इस समय बात वहीं खत्म करने का उसने प्रयत्न किया। पर वृद्ध कवि कब मानने वाले थे। वह उच्च स्वर से कुछ कहने वाले  थे  उन्होंने पत्नी दी।

आप राम के हैं  इनमें से एक ने व्याकुलता से कहा  राम के लिए—

राम का क्या?

"महर्षि अगस्त्य ने ऐसा मार्ग निकाला है कि अब राम विश्वामित्र के आश्रम में पढ़ने के लिए जायें तब आप वहीं रहें।"

वृद्ध कवि की आँखें लाल हुईं। विश्वामित्र के आश्रम में रह कर राम को मृगचर्म  ढँक बनाया जा सकता है? क्या उसने य सब मूल

दूत के साथ बैठे हुए थे जब इस प्रकार बात कर रहे थे तब नदी के उत्तर तीर पर लगभग पचास घुड़सवार वेग से आगे बढ़ते हुए उन्होंने देखे। इन के चार विमद पता लगाने के लिए उठे।

घुड़सवार बैठे वृद्ध के कानमें पुनः ध्वनि सुनाई दी— 'वृद्धा वृद्धा मैं आया हूँ' अधीर आँखों से वे नदी के उस पार देखते रहे।

घोड़ों को इस तीर पर छोड़कर घुड़सवारों के नायकों को नाव में बैठकर इस पार आते उन्होंने देखा। उन्होंने सोचा कि उनका राम आया होगा पर वह नाव में नहीं था। वृद्ध के हताश हृदय पर आघात हुआ। आँखों में अंधेरा छागया और सिर पर हाथ रखकर वे बैठ गए। राम उनका कहाँ से हो सकता है? वह तो जमदग्नि का पुत्र विश्वामित्र का शिष्य है।

इतने में विमद और इन्द्र के पुत्र कुशाश्व ये तीनों उनके सामने आकर खड़े होगए। काँपते हुए ओठों और चिंतातुर नयनों से कुशाश्व ने वृद्ध को प्रणाम किया।

विमद आगे बढ़ा गला सँभालकर धीरे से बोला 'पिताजी!'

'क्यों?' नींद से जागे हुए के समान वृद्ध कवि ने पूछा।

'पिताजी' विमद का स्वर रोता सा होरहा था 'राम आश्रम से चले गए हैं।'

निश्चलता की मूर्ति के समान दिखाई देते हुए वृद्ध खड़े हुए और उनकी आँखों में भयङ्कर प्रकाश आ गया, "क्या?" वे चिल्लाए।

'हमारे निकलने के पश्चात् ऐसा जान पड़ता है कि लोमा को राम कह आये कि मुझे वृद्धाके पास जाना है। फिर जान पड़ता है कि रात को राम अकेले ही सुरथ पर बैठकर आश्रम मिलने यहाँ आने के लिए चल पड़े। भृगुश्रेष्ठ ने कुशाश्व को खोज करने के लिए भेजा है।'

'धन्य मेरे पुत्र! पर वह है कहाँ?' वृद्धकी आँखों में प्रमाद छा गए, 'कहाँ है वह?'

'कुशाश्व को पता लगाने के लिए ही यहाँ भेजा है' विमद ने

आग की धार वह अभी और समस्त दूर तक दमकती रहती थी। उस पर विश्वास था कि इस आग के इस द्वार पर उनका नाम था इस आग में ही उनका नाम आने वाला है आ रहा है। उनके कान में सुग्रीव राम की ध्वनि निरंतर आया करती थी।

आत्मा के हृदय में श्रद्धा का ज्वार न जाने कहाँ थी वैसा ही बढ़ता जाता था। उसे इतनी ही चिन्ता थी कि जब इस आग से इनका नाम बार बार वह स्वयं उनके दर्शनों के लिए उपस्थित न हो तो।

राम की खोज में वृद्ध कवि वाल्मीकि ने आकाश पाताल एक कर दिया। मार्ग में स्थान स्थान पर भूखे-प्यासे वृक्षों के नीचे घूमते हुए आग में इतने वर्ष इतनी रातें, इतने वर्ष और मनुष्य पाँव-पाँव चलते थे कि सुग्रीव के सुरक्षित मिलना कठिन था।

वृद्धकवि भूखे-प्यासे आकर यह पता लगाया कि राम और सीता के साथ राम ने क्या-क्या बातें कीं सुग्रीव को किस प्रकार धन्य किया कौशल्या राम के साथ में जिये थे। सुग्रीव आग नहीं भूल सकता इस बात का उन्हें पूरा विश्वास था।

उनके शिष्य दशरथ के पुत्र राजा भरत को सत्य पुत्र के नाम सभी तक अपना राजा मानते थे इसलिए भरत को इन्द्र ने साथ में लिया और वह मार्ग से कट हुए इधर-उधर टीलों पर चढ़ कर चारों ओर देखा करते थे, निराश हो कर नगर की ओर लौटने लगे। कितने दिन बीत गए, सभी थकें हो गए पर राम का कहीं पता न चला। जब सब प्रयत्न निष्फल होने लगे तब इधर-उधर की बातों में वृद्ध कवि से विचार करने लगे और उनका अनुमान लगा।

विश्वास था कि अधिक खोज करना व्यर्थ है, यदि वह जीवित होता तो मिले बिना न रहता। पर वृद्ध कवि ने यह कहा था कि पुत्र-बन्धु पर फिर उनके शरीर का अन्त न हो जाय इस भय से उसने भी पिता के साथ रहकर राम की खोज की।

वृद्धकवि ने अभी आशा छोड़ी नहीं थी। अनुभवी सनातन की

उसके मन में विचारधाराएँ उठ रही थीं। वह आश्रम में रही है न
तो उसका [illegible] किसी [illegible] होंगे। व [illegible] के [illegible] होने पर [illegible]
कहीं [illegible] कर [illegible] जाता [illegible] था वह उस [illegible]
आया। वह [illegible] भावना तो इन गायों की ओर हुए, ऐसा [illegible] थी कभी
हो [illegible] क्या समझकर [illegible] बहुत बना। उसने विचार किया
कि दुष्यन्त इस प्रकार [illegible] यह [illegible] न किया। इस
साथ [illegible] कैसा [illegible] जाता। पर विश्वामित्र ने भी कहा
था। विश्वामित्र क्यों उसे [illegible] चाहते हैं? उस तो सब जाता है
कि दुष्यन्त कहते थे कि उसके [illegible] का सब जाता था। फिर
उस विश्वामित्र के पास पहुँचने की क्या आवश्यकता है।

[illegible] उसका ध्यान ठीक बन रही था। मुँह से "सबदक" "सबदक"
शब्दों को [illegible] से [illegible] है यह वह जानता था। उसने सबदक
सबदक करना प्रारम्भ किया।

[illegible] बार जंगल में छिपे हुए पक्षी के [illegible] राम राम राम राम
कहकर उसका [illegible] करते थे। उस वृक्ष [illegible] के पास [illegible] जाता [illegible]
[illegible] उनके साथ बैठकर बातें करता।

उसे [illegible] था कि [illegible] वस्तुएँ [illegible] हैं [illegible] उनको
छिपायी जाती हैं। [illegible] को [illegible] में [illegible] जाता थी इस
[illegible] वस्तु का [illegible] गिर [illegible] था इस से [illegible] वायु बहता था। उस
ने और [illegible] वायु मुँह में खींचना [illegible] किया। [illegible] में वह
[illegible] लगा। [illegible] है यह भी
वह [illegible] था। वहाँ पर जुगनू की [illegible] उड़ रही थीं [illegible] वह उन-
[illegible] पर [illegible] [illegible]-[illegible] व [illegible]-[illegible] और [illegible]-[illegible] रहता
थी। जब [illegible] पृथ्वी पर [illegible] हैं तो जुगनू बनकर [illegible] हैं। उन्हें [illegible]
[illegible] उसने [illegible] जुगनू [illegible]
[illegible] किया पर वह सफल नहीं हुआ।

[illegible] उसका [illegible] करते हुए बढ़ रहीं। वह पहुँचकर आश्रम में

[illegible]

[illegible] था। [illegible] दिन [illegible]।

[illegible] में [illegible]।

[illegible] है।

[illegible] में [illegible]। [illegible] में [illegible] है। [illegible]

[illegible]।

[illegible] में [illegible]?

[illegible] में [illegible]।

[illegible] में [illegible]।

[illegible]

[illegible] के अनन्त दुर्दिन [illegible] हुआ [illegible] का गया । वे हाथ को उसके [illegible] [illegible] [illegible] है वह उसने [illegible] लिया । वह [illegible] [illegible] इस प्रकार [illegible] का जैसा इस [illegible] रहा था ।

[illegible] इस [illegible] । वह [illegible] के [illegible] में [illegible] । [illegible] हो वह [illegible] और [illegible] गिर पड़ा । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] में गए ।

[illegible] के [illegible] [illegible] । वह [illegible] था कि [illegible] [illegible] और [illegible] का [illegible] फिर वह भी [illegible] था ।

[illegible] ने [illegible] का [illegible] [illegible] का [illegible] पर [illegible] दिया । वह [illegible] [illegible] पर बैठ और [illegible] को एक [illegible] पर [illegible] [illegible] । [illegible] के [illegible] हाथ इस प्रकार [illegible] थे कि उसके [illegible] [illegible] जाए ।

[illegible] [illegible] में [illegible] हो रही थी । [illegible] [illegible] [illegible] रही थी [illegible] [illegible] हुआ था । वह [illegible] [illegible] का [illegible] [illegible] [illegible] रहा था ।

[illegible] में वे इस [illegible] गए । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] था । उसके [illegible] [illegible] उसकी [illegible] में भी [illegible] थे । इसर सब ओर [illegible] [illegible] सुना करते थे । [illegible] में [illegible] [illegible] को [illegible] [illegible] किस प्रकार [illegible] से गए थे वह [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] सुनी थी । [illegible] को [illegible] ने इसी प्रकार [illegible] [illegible] था [illegible] [illegible] करते-करते उस [illegible] के [illegible] [illegible] था ।

[illegible] में एक [illegible] पर [illegible] [illegible] [illegible] के [illegible] इस [illegible] [illegible] [illegible] का [illegible] [illegible] उसके [illegible] इस [illegible] [illegible] [illegible] और [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ।

उस मोटे बाज़ व्यक्ति को बूढ़े ने रोका और उस राम को उठाने के लिए कहा। उस व्यक्ति ने राम को उठाया और बूढ़े ने रस्सी खींच कर राम को फिर से चलाने का प्रयत्न किया।

राम की आँखों में आँसू भर आये। उसकी पीठ पर पड़े हुए कोड़े के घावों से खून निकलने लगा था। उसके पैर थर-थर काँपने लगे थे। उसका गला सूख आया था पर उसके भीतर के दाँत जैसे थे वैसे ही जकड़े रहे। आँसुओं से भरी हुई उसकी काली आँखों का कातरतापूर्ण प्रतीक [illegible] एकाग्र था।

वह पैर पटककर चिल्लाया "मैं नहीं उठूँगा, बस नहीं उठूँगा।" वह जहाँ पड़ा था वहाँ से हिला नहीं। जो व्यक्ति उसे हटवाने को बढ़े थे उनमें से एक के हाथ में राम ने काट खाया। बूढ़े ने सुरक्षा को फिर से हाँकने का आरम्भ किया किन्तु वह सफल-मनोरथ नहीं हुआ।

अब इस बालक से अपनी समझ ही न सह सका तब अन्त में पकड़कर दासों ने राम को उठाकर गाड़ी पर बिठा लिया और बूढ़े की सवारी आगे बढ़ चली।

उस दिन से बूढ़े और उसके साथियों ने राम को सताना छोड़ दिया और उसे सुरक्षा पर ही बैठाए रखने लगे।

आठ दिन तक बूढ़े और उसके साथी आगे-ही आगे जंगल में बढ़ते गए तब सामने पर्वत मिले। उसकी उपत्यका में दासों के बहुत-से गाँव थे जहाँ बूढ़े का बहुत आदर-सम्मान हुआ। बूढ़े की सवारी पहुँचते ही ज्यों ही उसके एक साथी ने शंख फूँका कि उसकी गूँज सुनते ही सैकड़ों काले-कलूटे नंगे पुरुष-स्त्री और बच्चे इकट्ठे होकर नाचते और हुँह-हुँह की किलकारी से उनका स्वागत करते। बूढ़ा बड़ा प्रसन्न होता और कभी-कभी स्वयं नाचता भी था। फिर सब हुँह-हुँह की [illegible] किलकारी करते और पशु पकाकर खाते थे। इस प्रकार एक-एक गाँव में रात्रि का विश्राम करती हुई बूढ़े की सवारी आगे बढ़ती थी।

जहाँ यह सवारी जाती वहाँ बूढ़ा राम को सबसे आगे रखता

[illegible] के समय हम [illegible] किनारे पर भी बड़ी भयंकर लहरें उठती। [illegible] में डूबकर हमने [illegible] हुए [illegible] का [illegible] किया। [illegible] हम [illegible] [illegible] से उतारकर राम [illegible] की [illegible] लगा।

[illegible] के समय [illegible] पर हमने [illegible] कि [illegible] में से [illegible] पुरुष [illegible] स्त्रियों के [illegible] हमको [illegible] गए थे। वे [illegible] के समान [illegible] थे [illegible] राम का [illegible] हुआ। [illegible] भी पुरुष [illegible] थे [illegible] अवस्था में [illegible] था वह [illegible] था [illegible] उनके पुत्र थे। राम का [illegible] का [illegible] [illegible] गया। [illegible] पर [illegible] राम को [illegible] हँसने और तालियाँ बजाकर [illegible] लगा।

इस [illegible] राम [illegible] हो [illegible]। वह [illegible] और [illegible] था।

"बहुत अच्छा हुआ, बहुत अच्छा है। [illegible] तो कम-से-कम [illegible]" उसने [illegible] करके हाथ [illegible] हुए कहा।

[illegible] हो गया! [illegible] न [illegible] सौ-पाँच सौ [illegible] में ही [illegible]। इसको [illegible] पर भी [illegible] हैं।

"[illegible] तो तुम [illegible] पुत्र [illegible] पिता ने पुत्र को [illegible]।

राम ने [illegible] को [illegible]। उसका [illegible] वह [illegible]। [illegible] में उसने कहा, "तुम भूखे [illegible] हो [illegible]।

"[illegible] को [illegible]।" [illegible] ने [illegible] [illegible] में [illegible] था। फिर राम [illegible] का [illegible] [illegible] [illegible] गया।

वह उसके भीतर घुस गया। सबकी हँसी रुक गई। मातबराज और उसके साथी विस्मय से उसे खींचकर बाहर करने लगा। उसने भी दूसरा वह निकाला कि मातबराज को कुछ दया के लिए उसे बाहर करना कठिन हो गया।

विष्णु आँखों पर हाथ रखता हुआ मुँह से गालियों की वर्षा करता हुआ धरती पर से उठा। विनाश करने की उसकी वृत्ति तो लुप्त हो गई।

राम की मुट्ठियाँ बाँधे उमड़ते हुए क्रोध से लड़का डटा हुआ राम खड़ा रहा। मातबराज उसको पास देखकर बोला "हाँ भद्र! तुम तो बृहस्पति के पुत्र हो, क्यों तो ठीक है?"

"नहीं। राम चिल्लाया "मैं भृगु हूँ ऋषि जमदग्नि का पुत्र।"

सब लोग फिर हँसने लगे। बाद में पर मातबराज ने उन्हें रोका "हाँ, भद्र, हाँ! तुम तो हमारे गुरु हो। अब तो ठीक है न?"

जब सब शान्त हो गये तब मातबराज ने राम को रोटी खाने को कहा।

"धरती पर पड़ी हुई रोटी मैं नहीं खाऊँगा।"

"इसको जो दूसरी रोटी लाकर दे" कहकर मातबराज ने मुस्काते हुए पूछा "भद्र तुम्हारा नाम क्या है?"

"राम भार्गव"

"अच्छा, अच्छा, शान्ति से भोजन करो। तो अच्छा पानी भी लो।"

सब हाथ-पाँव धोकर पंगत में बैठ गए। मातबराज और सबने भोजन करने बैठे। राम को भी उन्होंने भरी हुई पत्तल दिला दिया और विष्णु अपने बाप के बीच में रहते हुए एक बड़े पिटारे में से दो लड़कों को बाहर से खाना उन्हें बहकाया और राम के साथ मिलकर तीनों का भोजन लिया। एक लड़का अनुमान चौदह वर्ष का था और दूसरा राम का हमउम्र था पर डील का पर मोटा था। दोनों के पैरों में रस्सी बँधी थी जिस विष्णु हाथ में पकड़ था।

चौदह वर्ष का लड़का पतला-दुबला, सुन्दर और रूपवान् था। उसका मुख चपल किन्तु म्लान था। उसके छोटे-छोटे बालों से ज्ञात होता था कि उसका सिर थोड़े दिन पहले मूँड़ा गया है। उसने मन्त्र से पहले धीरे से अग्नि का आवाहन किया और आहुति दी। इन और परिचित मन्त्र सुनकर राम को ऐसा हर्ष हुआ मानो कोई स्वजन मिल गया हो और वह हँसा। वह लड़का भी संकोच से हँस पड़ा और इस पारस्परिक हास्य से दोनों मित्र बन गए। नाववाले का परिवार भोजन करने में और मल्लाह हाँकने में लगा था इसलिए दोनों पास-पास आ गए।

'तुम कहाँ से आये हो?' उस लड़के ने राम से पूछा। उसका स्वर मीठा था।

'मैं नदी से तैरकर आया हूँ' राम ने कहा।

'तुम्हारी जाति क्या है?' उस लड़के ने कहा।

'मैं भृगु हूँ। तुम कौन हो?'

उस लड़के का मुँह मन्द पड़ गया। 'मैं... मैं आङ्गिरा हूँ' उसने हिचकिचाते हुए कहा।

'हम दोनों तो एक ही हैं' राम ने उत्तर दिया, 'तुम्हारा नाम क्या है?'

'मेरा नाम शुनःशेप' उसने नीची दृष्टि करके लज्जा से कहा।

राम हँसा, 'कुत्ते की पूँछ के बाल! कैसा विचित्र नाम है।'

तीसरा लड़का तो भोजन करके सो गया था। नाववाले का परिवार जब भोजन कर चुका और वायु बहने लगा तब विभु ने शुनःशेप को और राम को नाव में पान की आज्ञा दी और तीसरे का हाथ पकड़कर स्वयं ही उस नाव की ओर समीप ले गया।

नाव में आकर विभु ने शुनःशेप और उस सोते लड़के के पैर में बँधी रस्सी एक काठ में बाँध दी। फिर वह राम के पैर में रस्सी बाँधने

लाया। पहले तो राम ने उठा कर लाने का विचार किया पर गुरुदेव ने आँख से संकेत किया इसलिए उसने पैर बाँधने दिए।

फिर बड़ी नाववाले ने दोनों नावों के ऊपर डाल दिए और नाव किनारे से आगे बढ़ने लगी। गुरुदेव ने विमु से राम भर रस्सी खींचने का काम करवाया और बहुत दिनों का थका हुआ राम कई रातों की नींद एक ही रात में पूरी करने लगा।

प्रातः होने पर विमु ने राम को लात मारकर जगाया। राम बिगड़े हुए घोड़े के समान हिनहिना उठा। वह एकदम विमु के पैर से इस प्रकार लिपटा कि विमु नाव में धड़ाम से गिर पड़ा। विमु इतनी ज़ोर से चिल्लाने लगा कि उसके बाप चार भाई दौड़ते हुए वहाँ आये।

"यह लड़का तो [illegible] कैसा है," विमु ने कहा। "मुझे उसने गिरा दिया।"

"मुझे इसने लात मारी," राम ने क्रोध से कहा। "तुम—अग्नि के पुतले, लात लगाने वाला तू कौन होता है!" उसने गर्व से पूछा। वे मुट्ठी बाँधकर लड़ने को तैयार हो गया। उसकी आँखों में ऐसी ज्वाला थी कि नाववाले भी सकपका गए।

"विमु," बड़ी नाववाले ने प्यार से कहा, "तुम इस लड़के को बात-बात में सताओगे तो मैं तुम्हें मारूँगा। इसके मुँह का भी कुछ विचार है!" विमु सिर झुकाए हुआ खड़ा रहा। उसकी आँखों में [illegible] था।

"अच्छा लड़का! [illegible] भाई," बड़े नाववाले ने राम से कहा, "शान्त हो जाओ। अब तुम्हें विमु नहीं छेड़ेगा। समझे!"

राम जब गुरु राव के पास गया तब उसने प्रेम से राम का हाथ सहलाया। गुरु राव का हाथ मुलायम और कोमल था। ऐसा अनुभव राम को हुआ मानो वह किसी माँ का ही हाथ हो।

तीनों बन्दी लड़के ज्यों-त्यों करके नहाए। फिर बड़े नाववाले ने दो [illegible] उन्हें खाने को दिया। पर फिर नाव में रस्सी [illegible] में उन्हें [illegible]

के लिए कहा। राम ने शुन शेप की ओर देखा उसने संकेत किया।
राम भी चुपचाप पिंजरेमें घुस गया। शुनःशेप और कद्रु—तीसरा
भी उसमें उतर गया।

लो लड़को ! ये मूलियाँ खा लेना। कहकर बहुत ही उनका
नाववाले ने पाँच छ मूलियाँ पिंजर में डालीं और ऊपर का ढक्कन
कर दिया।

पिंजरा तीनों लड़कों के लिए बहुत बड़ा था। उसके छिद्रों से
पर्याप्त प्रकाश भी आता था। उसमें तीनों के बैठते ही कद्रु ने
प्रारम्भ किया। शुन शेप उसे गोदी में लेकर प्रेम से उसकी पीठ पर
हाथ फेरने लगा।

'मैं अपनी माँके पास जाऊँगा कद्रु फूट-फूटकर रोने लगा
वाले ने ऊपर के ढकन का ठोका और शुनःशेप ने कद्रु का मुँह
छाती से लगा लिया। चुप रह, चुप रह। रोवेगा तो वह मा
उसने कहा। कद्रु ने ज्यों त्यों करके अपनी सिसकियाँ दबाई।

'इसकी माँ कहा है ? राम ने पूछा।

य लोग इसकी मा के पास से कद्रु को चुरा लाए हैं
ने राम के कान में कहा।

य लोग अर्थात् ?

'य ही नाववाले।

क्यों ?

'य तो पणि हैं। हम लोगों को दूसरे गाँव में बेचने के लिए ले
जाते हैं, शुनःशेप ने कहा।

तब यहाँ य सब लोग क्या करते हैं ?

'सुवर्ण रत्न कस्तूरी कपूर आदि इन्होंने जो नावों में
इस तरह इन गाँवों में बेचने आयेंगे।

हम लोगों को बेचकर क्या करेंगे ?

, सुवर्ण या रत्न लायेंगे।

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]?"
[illegible]
[illegible]
[illegible]।"

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] है।

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

महाप्रयत्न श्लोक।

शुनःशेप सरककर पास आया "राम! क्या मैं दुःखी हूँ?" शुनःशेप ने इस प्रकार पूछा मानो उसे वेदना हो रही हो।

"हाँ क्यों?" राम ने पूछा।

"तुम मुझे फिर मारोगे तो नहीं?"

"अरे यह क्या कहते हो?" कहकर राम ने शुनःशेप को अपने पास खींच लिया।

डरते-डरते शुनःशेप पास आया और राम ने शुनःशेप का हाथ अपने हाथ में ले लिया। शुनःशेप की आँखों में जो आँसू बह रहे थे वे राम के हाथ पर गिरे।

"क्यों रोते हो?" उसने पूछा।

"कुछ नहीं।" कहकर राम के हाथों में सिर छिपाकर शुनःशेप ने दिया।

दिन भर विभु का बड़ा भाई नावों का व्यवसाय में रहा और बीच तट पर स्त्रियाँ भोजन बनाने लगीं। नाववाले के लड़के वहीं टहलते रहे। बड़ा नाववाला और उसके दोनों लड़के सिर पर रखकर आसपास के गाँवों में माल लेने बेचने चले गए।

और जब सन्ध्या हुई तट निर्जन हुआ तब पहले दिन के समान दोनों लड़कों को पिंजरे से बाहर निकाला गया। आज उन्हें नहलाया गया और नाववाले का परिवार भोजन करने बैठा। फिर बड़े नाववाले ने लड़कों को पास बैठने के लिए कहा और स्वतः उन्हें परोस दिया। भोजन करते-करते और भोजन के पश्चात् भी सदा वही बात होती थी। वह बड़ा हँसोड़ था और ऐसी बात कहता था कि सुनकर उसका परिवार हँसने लगता था।

रात हुई और धीरे-धीरे रात बढ़ती गई। पथिया ने नाव खेना प्रारम्भ किया। नाववाले का बड़ा लड़का नाव चलाने लगा और दूसरे आवश्यकता पड़ने पर उसे सहायता करने के लिए उसके पास आ बैठे।

राम लड़के के पास बैठकर उसे सान्त्वना देने के लिए झुक गया। रोकर वह लड़का भागा तब राम उठकर शुन शेप के पास जा बैठा। उस समय वह सकुचा-सा सहमा कुछ बड़बड़ा रहा था। राम ने शुन शेप का हाथ पकड़ा पर शुन शेप ने उसे चुप रहने का संकेत किया और वह बड़बड़ाता रहा। यह लड़का सुडौल सुन्दर और कोमल था। मुँह लम्बा था उसकी आँखें जैसी चमकती थीं वैसा ही दैन्यपूर्ण थीं। उसके हाथ भी बाला के हाथ के समान सुन्दर थे। राम को यह लड़का बहुत अच्छा लगा। शुन-शेप की बड़बड़ाहट- जब बन्द हुई तब उसकी बड़ी-बड़ी आँखों में आँसू भरे थे। फिर उसने राम से पूछा राम क्या सचमुच तुम ऋषि जमदग्नि के पुत्र हो?

'क्या मैं कभी झूठ बोल सकता हूँ?

'और तुम सचमुच ऋषि विश्वामित्र को पहचानते हो?

"अरे वे तो विद्यार्थी के अध्यापक हैं। मैं तो नित्य उनसे मिलता हूँ। और वे मुझ भी एसे ही बोलते हैं।

"क्या तुम्हें ध्यान है?

"याद से।

'क्या तुमने महर्षि अगस्त्य और लोपामुद्रा को देखा है?

मैंने? अरे अभी तो भगवती के ही पास पढ़ती हूँ।

"क्या तुम इन सबकी बातें बताओगे?"

"हाँ, अवश्य बताऊँगा। इसमें क्या बात है?

राम को यह लड़का बहुत आनन्द प्रतीत हुआ। पर बूढ़ा की बात के अतिरिक्त इन सबकी बातों में उसे कैसे आनन्द आयेगा यह विचार उसके मन में हुआ। शुन शेप तो राम की ओर देख ही रहा था। उसने डरते डरते पूछा "राम क्या मैं [illegible] हूँ?

'हाँ ला यह हाथ।

शुन-शेप ने क्षण भर [illegible] राम [illegible] वह रखा

और फिर [illegible] आँख [illegible] गा है [illegible]

[illegible]?

[illegible]

[illegible]?

[illegible]?

[illegible]?

[illegible]

[illegible]?

[illegible]

[illegible]

[illegible]?

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

हाँ पीछे से आते हैं।

यह सुनकर शुन:शेप को पुन: विचार आया कि राम देवर्षि हैं या [illegible] यह कुछ बतलाता नहीं।

"[illegible] पिता को महर्षि ने शाप क्यों दिया ?" राम ने पूछा।

शुन:शेप झिझका। "यह कैसे कहा जा सकता है ?" "राम यह [illegible] मैं तुम्हें फिर बताऊँगा।"

दूसरे दिन संध्या समय [illegible] लोग अपनी कमाई [illegible] इसलिए उनका परिवार प्रसन्न था। इन लड़कों को भी [illegible] बहुत खाने को दिया। वहीं [illegible] राम को देखकर बहुत [illegible] [illegible] उसने [illegible] उसका मुँह अपने [illegible] में दबा लिया। [illegible] उसने [illegible] के उत्तर में कहा। [illegible] [illegible] दिन को इच्छा हुई [illegible] शुन:शेप ने [illegible] उसने अपने मन को रोक लिया।

अब [illegible] [illegible] का नाम उसके सुनने में आया [illegible] शुन:शेप [illegible] को [illegible] समझता था [illegible] [illegible] उसने राम को [illegible] पूछकर [illegible]

[illegible] के पश्चात् [illegible] को [illegible] बहुत [illegible] को [illegible] करने लगा। [illegible] को [illegible] को दिख [illegible]

"[illegible] [illegible] है। [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] ने [illegible] के [illegible] में कहा।

"[illegible] ?" [illegible] ने पूछा।

"[illegible] [illegible] की [illegible] है। [illegible] [illegible] है ?"

"[illegible] है ?" [illegible] ने पूछा।

उसके ओठ काँपते थे। क्या उसीके उस पापी का लड़का उसके मन पतित को मंत्र सिखावेगा?

'तुम पतित कहाँ हो? पतित तो तुम्हारे पिता हैं,' राम ने लज्जापूर्वक कहा, 'मैं मंत्र सिखाऊँगा। सभी ने?'

शुनःशेप राम के पास तक बढ़ गया और उसका हाथ अपने हाथों से छुआकर आँखें बन्द करके खड़ा रहा।

'तुम सचमुच में देव हो।'

राम हँसा, 'यह मैं क्या जानूँ?'

'मुझे बहुत बार स्वप्न में ऐसा लगता है कि मैं तुमसे आकर मिलूँगा। क्या तुम्हीं तो वह देव नहीं हो?' यह बालक बालक शुनःशेप का स्वप्न कल्पना से परिपूर्ण हो गया।

राम ने हाथ बढ़ाकर शुनःशेप का सिर फिर अपनी ओर खींच लिया। 'अच्छा कभी-कभी लगता है कि मैं देव हूँ? तुमने पहचान लिया।'

'तब तो तुम अवश्य होगे,' शुनःशेप इस प्रकार बड़बड़ाने लगा मानो नींद में हो और दोनों हाथ में हाथ डालकर खड़े रहे।

मानो अभी तक स्वीकार न किया हो, इस भाव से शुनःशेप ने फिर पूछा, 'तुम्हें जितना आता है क्या उतना सब मुझे सिखाओगे?'

'हाँ, हाँ, अवश्य,' राम ने कहा।

'राम, तुम देव जैसे ही जान पड़ते हो।' मानो राजा का सम्मान करता हो इस प्रकार शुनःशेप बोला।

'पर मैं नहीं जानता,' राम ने सरलता से उत्तर दिया।

'मैं तुम्हारे साथ चलूँगा,' शुनःशेप ने कहा।

'पर गाँवों के पास भी न जाऊँगा।'

'ठीक है। सामने दूर पर यह ऊँची-ऊँची घास खड़ी है वहाँ हम लोग घरों से भागकर छिप जायेंगे। जब नाव अनुमान की ... तो हम लोग चले आवेंगे, नहीं तो नहीं आवेंगे।'

नदी में डूब गए थे तट पर बचे गए इस विषय में भी अन्य कल्पना की गई।

अन्त में बूढ़ी नाववाले ने तट पर स्थान करने की आज्ञा दी। पहले तो इसके किसी बेटे को साहस न हुआ किन्तु जब बहुत-सी गालियाँ सुनाईं तब उसके दो बड़े लड़के लूक उठाकर में लाठी लेकर तट पर उतरे। घबराए हुए वे आगे बढ़े और घास में लाठी ठोक ठोककर साहस धारण करने का उन्होंने प्रयत्न किया।

कहीं बाघ न निकल आय इससे शुन शेप मुँह पर हाथ रखकर था और भय से थरथर काँप रहा था। राम उन पथिकों के बालक को अनिमेष आँखों से देख रहा था। वे जहाँ छिपकर खड़े थे उनकी ओर पथिक आये। इधर में उतरने का उनका साहस नहीं था। लिए व पुकार पुकारकर घास में लाठी घुमाने लगे।

शुन शेप जरा खाँसा और घास हिली। पथिकों ने समझा कि घास में से कोई हिंसक प्राणी निकला। बस वे चिल्लाए लूक उनके हाथ से गिर पड़ी और घबराहट में वे नाव की ओर प्राण लेकर भागे।

नाव पर फिर कोलाहल हुआ। नाव वाले ने दस सहस्र गालियाँ बात कहकर फिर आक्रन्द किया। पर अन्त में थक जाने के कारण सो गए। सब शान्त होने पर राम शुन शेपका हाथ पकड़कर बाहर निकला और गाँव की ओर अनजान रास्ते से उस पार चलने लगा।

अब वृद्धा के पास पहुँच जायेंगे उसने हर्षित होकर कहा।

६

भृगु के आश्रम में अकेले हृदयभग्न कवि इस प्रकार इधर उधर चक्कर लगा रहे थे मानो अपनी मृत्यु की खोज कर रहे हों। अन्य ने उनके पुत्रों तथा शिष्यों ने उन्हें बहुत आश्वासन दिया पर वह सब व्यर्थ गया। उनकी सृष्टि में सूर्यास्त होगया था और सूर्योदय का कुछ चिह्न न था।

बहुत बार 'वृद्धा वृद्धा' शब्द कामदत्त कण्ठमे उच्चरित किया गया था

रहते हुए भी उग्र और विकराल—दूर अत्यन्त दूर से शान्त मधु
रहा था वृद्धा वृद्धा।

वृद्ध कवि की हताश स्थिति जाती रही। मग्न हृदय में नवीन
का सञ्चार हुआ। उनकी निस्तेज आँखों में प्रकाश के अतिरेक
निकलने लगा। एक छलांग मारकर उन्होंने बहुत दिनों से अरक्षित
और भाला लिया और उछलकर बाहर आये।

विमल दौड़ो दौड़ो!"

आश्रम में चारों ओर हल्ला गुल्ला सुन लोग उठे और कुछ
तैयार हो गए। फिर गगन भेदी रव हुआ। वृद्धा वृद्धा
भयङ्कर झंकार अधीर व्यग्र होते हुए आलोच्छवास में कम होती
भेड़िये का भी वैसा भयङ्कर और दबी हुई गुर्राहट सुनाई दी।
हृदय धड़क उठे। जिस ओर से स्वर आता था उसी ओर वृद्ध
पचास वर्षों में कभी जितने वेग से नहीं दौड़े थे उतने वेग से दौड़े।
तथा अन्य सब लोग भी जिसके हाथ में जो शस्त्र आया वह लेकर
पीछे-पीछे दौड़ पड़े।

'वृद्धा वृद्धा वृद्धा!' अवरुद्ध होता हुआ स्वर
कम्पित और मन्द पड़ रहा था। भागते हुए श्वापद की उसमें
'घरररर' भेड़िये का भयङ्कर शब्द भी सुनाई दिया।

दोनों स्वर एक के पश्चात् दूसरा सुन पड़े। वृद्धा
वास्तव में। उनका श्वास बहुत वेग से चल रहा था।

बालक और भेड़िये का मानो दोनों स्वर एक साथ सुनाई
बन्द हो गया।

जब वे आश्रम के बाहर के आँगन में पहुँचे तब
अदर्शन हो रही थी। वृद्धा का हृदय निराश हो गया
चारों ओर ताकने लगे। अकस्मात् वेदनापूर्ण एक
"ऊँ—ऊँ ऊँ।"

वृद्धा दौड़कर वहाँ पहुँचे चारों ओर से वृद्ध का

[illegible] [illegible] [illegible] हुआ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
हुई थी

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
किया । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] किया

[illegible] [illegible]

# तीसरा पहर

मित्र और समदृष्टि ऋषियों के [illegible] के प्रति वह [illegible] था [illegible] अपनी आँखों से देखेगा। उसे एक ऊँचे यूप से बाँधा जायगा। उसके निकट ही यज्ञकुण्ड में अग्निदेव विराजमान होंगे। [illegible] [illegible] पर [illegible] सिर झुकाकर उसका [illegible] करते हुए [illegible] से उसे पुकारते हुए [illegible] दृष्टिगोचर होंगे। अपने लोगों के द्वारा उसने [illegible] को पहचाना था— "[illegible] हूँ [illegible] और वे [illegible] के समान दिखाई देंगे।

उसने अग्निदेव का [illegible] था। पर [illegible] तो उन्हें यथार्थ में यज्ञस्थल के सिंहासन पर विधिपूर्वक आसीन हुए देखा। उसके सामने मनुष्यों में श्रेष्ठ और [illegible] वह पतित न होता तो उसके [illegible] [illegible] राम ने [illegible] के विषय में जो कुछ कहा था वह उसने [illegible] था। सामने विश्वामित्र [illegible] राम के साथ [illegible] मुनि विश्वामित्र का [illegible] सुनते ही उसका हृदय [illegible] हो जाता था। राम ने उनके विषय में बहुत कुछ कहा था। [illegible] मनुष्यों के मुख से [illegible] सुना [illegible] आनन्द और [illegible] के लिए [illegible] मित्र को उसने [illegible] ही [illegible] मूर्ति [illegible] थी। [illegible] मध्य में [illegible] हुए [illegible] के समान [illegible] उस मूर्ति के [illegible] में और [illegible] अपनी आँखों से देखा। [illegible]

उसके [illegible] हुए। [illegible] के [illegible] में [illegible] ने [illegible] का [illegible] वह [illegible] ......

शुनःशेप ने [illegible]। [illegible] ने [illegible] के [illegible]

अन्धकार में से उस प्रकाश के स्रोत पर प्रहार किया था। उसने ही विद्या के बिना तड़पते हुए पतित को ऋषियों के सत्कार का उपभोग कराया था। शुनःशेप की कल्पना बारह दिन के राम के साथ के मन्द मन्द पर कुण्ठित होगई थी। राम का स्मरण तो उसके लिए तृषित चातक के मुख में पड़ते हुए स्वातिबिन्दु के समान था।

यदि वह हो तो

फिर सब उस अग्नि में होमेंगे—मध्याह्न महर्षियों के स्नान हुए। उनके मंत्रों का स्वर उसके कानों में गुञ्जायमान होगा। तब प्रभुर सरस्वत्—द्वारकिम-उसको एक कम्पन का—दो हाथ फैलाकर सत्कार करेंगे और वह राम तेज के स्वप्नों के चरणों में बैठेगा।

२

राम से अलग होकर शुनःशेप ने अपने माता-पिता के पास आने का विचार किया पर ऐसा करना उसे अच्छा नहीं लगा। वह धीरज से वैसा भार ढोने लगा।

अपने क्षुद्र जीवन के प्रति उसकी अरुचि राम के सम्पर्क से बढ़ गई थी। वह ऋषि कुमार नहीं वरन् पतित का पुत्र था। जिन उन्नत भावनाओं का उसने स्वप्न देखा था वे उसने राम में मूर्तिमन्त हुई देखीं। राम कैसा था? रूपवान् तेजस्वी निर्भय कभी उस भार सदृश त्याग होते हुए भी वह का निवारण दूर करता था, राजा ऋषि और देवों के सम्बन्ध में विचार करता था विधि तप और विजय से परिपूर्ण था अन्धकार में से उस प्रकाश में ले जाता था उसको आना जाना दुस्तर था।

मृत्युञ्जय तक वह राम के साथ ही रहता था। मृगग्राम थोड़ी ही दूरी पर रह गया था कि राम होगए इसलिए राम का साथ हो तो राम को अन्य प्राप्त अथवा होने की सूचना शुनःशेप ने दी।

पर बृहा ? लिखने के लिए अधीर राम ने स्वीकार नहीं किया और उसे भृगुग्राम की ओर मान कर शुनःशेप अकेला ही बढ़ा। ।अभी

उसके माता पिता भी वहीं उस जाता था। अश्रुपूर्ण आँखों में उसने आ श्रम की ओर दृष्टि डाली। जिस सृष्टि की अधिकारपूर्ण कल्पना के आँख से उसने देखा था और जिसकी रमणीयता राम के शब्दों के प्रकट में स्वच्छ हुई थी उसी स्नेह को उसने यहाँ देखा—परस्पर का [illegible] जमदग्नि का आश्रम और ऋषि जमदग्नि—वह यदि पतित न होता तो उनके कुलपति विद्याविशारद राम को पढ़ाने के लिए आतुर रहता और सदा उनका भी प्यार करते।

आश्रम के चार कुल हिरण वृद्ध काक पायमान—'तुम्हारा पिता जो सब कुछ सिखाता था और मामा विश्वामित्र—जो दूसरे आश्रम में रहते थे जिनके बालों में जमदग्नि के मातामह और सब अध्ययन करने के लिए बढ़ते थे और जिनकी कृपादृष्टि पर राजाओं के राज्य निर्भर रहते थे और मुनि अगस्त्य तथा लोपामुद्रा जैसा उसके पिता ने कहा था सब कुछ [illegible] जिनके विषय की बात राम भी धीरे से सम्मानपूर्ण स्वर में करता था और मामा—जिसके सम्बन्ध की बात राम [illegible] करता था जो गड़बड़ करता था किसी के स्वभाव में नहीं आती थी राम का बहुत मानता था उसके साथ खेलता और उसके साथ [illegible] पर [illegible] घूमता था। शुभ रात का ऐसा आभास होने लगा मानो उसके [illegible] सुन्दर हाथों से आश्रम भर रहे थे।

सुलज्जा ने आँखें बन्द करके राम को सब बातें सुनी थीं। [illegible] के स्वाभिक स्वर को पहचानता भूलकर वह इस समय राम के शब्दों के [illegible] दूसरा [illegible] मित्र अर्जुन को सुनने से विचार कर रहा था।

[illegible] था कि उसके [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

वह सब उसी का था, उस सार हृदय। वह तो कल्पित शरीरों का पुत्र था—कल्पित सन्तान, न हत्यु।

उसको भय हुआ कि किसी दिन पूत के प्रश्नों में आग लगा जाय यहां आने। बदलकर किसी व्यक्ति के साथ या अध्ययन के लिए रह गए। किन्तु, आगे अतिरिक्त थी वह के अनजान हुए पुत्र को कौन अपने पास रखेगा? और उसके पिता और उसकी स्नेहमूर्ति माता का क्या हुआ?

रात-रात वह घर का भार ढोता। जब बहुत दिन भटकने के पश्चात् वह मातृ-पिता से मिला तब वह बदला नहीं आँखों से पुराना सपना देख न सका। एक स्वप्न श्मशान से घोड़ा हुआ दाम की झोंपड़ी के पास ही उसका स्मार था। दूसरा मर और दूर से पूछ आँखों से उसकी ओर इसने देखा सका विराट् एक पुरुष जो उसका पिता था उस किराकर रजकणों पड़े हुए वल्कल और हाथ कच्चा माटी बनाये हुए थी जो उसकी माता थी और इस दुख-जनकर साथ बढ़ने वाले दो बालक—जो उसके भाई थे—यह था उसका संसार। उसके माता-पिता और भाई सन्तान भूमि में बरसों से बस लिए रहे थे। दिशाएँ उसकी अपूर्व आनन्द-सृष्टि थीं। राम के सान्निध्य में बचपन में खेलित सृष्टि और इस वास्तविक सृष्टि के बीच के भेद का विचार करके उस साधारण मन पर भावुक भय के समान वह उत्पन्न लगा। इस वातावरण से उसके आँसू सूख गए। स्वप्न उत्पन्न के समान उस ऊपर फिर भी का भी ज्ञान नहीं रहा। वह बहुत दिनों के पश्चात् अपना इस अपराध के लिए उसके पिता ने दण्ड बहुत सहा। उसने कभी-कभी देखा था क्या वह नहीं यह सब स्वप्न था उसकी माता ने बार-बार आग्रह किया पर राम जिस सृष्टि में विहार करता था और जो उसकी कल्पना में स्पष्ट था उसमें अपना पैर रखने का साहस उन सबके मन में कर चुप रहा। उसकी माता ने कुछ वर्षों में उसने कुछ ध्यान न दिया। उस घर के बीच में सुन्दर गृह का दक्षिण

सदा प्रसारित होता था, एक स्नेहमयी सौन्दर्यमयी [illegible] था। [illegible]
मन उसकी माता के और उसके बीच जो एक तार था, वह भी [illegible]
गया।

शुनःशेप का मानस बदल गया। ऋषियों के जीवन से [illegible]
कल्पना प्राप्त हो गई थी। वह निरन्तर उन्हीं चित्रों का ध्यान [illegible]
रहता था और उस ध्यान में से जागना उसे अच्छा नहीं लगता [illegible]
इससे उसका रहन-सहन बदल गया। वह अब [illegible] घूमता [illegible]
की [illegible] की रीति का स्मरण करके अपनी रीति भी [illegible]
बनाने का प्रयत्न करने लगा। उसने [illegible] में नियमपूर्वक [illegible]
करना प्रारम्भ किया और यथासमय [illegible] का पाठ [illegible]
कल्पना का आश्रय बनाकर उसने [illegible] सरस्वती का [illegible]
स्पर्श न करने का प्रयत्न प्रारम्भ किया। [illegible]
मन्त्रों का वह पाठ [illegible] करने लगा। वह अब [illegible] का [illegible]
करता था तब उसकी आँखों के सामने राम की मूर्ति आ [illegible]
और वह उसे इष्ट मानकर अर्घ्य देता था।

फिर एक दिन उसके पिता ने [illegible] की ओर जाने का [illegible]
अब [illegible] प्रारम्भ किया। [illegible] उत्तर दिशा में आगे बढ़ने [illegible]
[illegible] आर्यों के ग्राम कम होते गए और दासों के निवास [illegible]
लगा। ज्यों-ज्यों सरस्वती का तट दूर होने लगा [illegible]
[illegible] गया। [illegible] आर्य [illegible]
[illegible] परन्तु अब [illegible] के [illegible]
[illegible] लगा। [illegible] उसका [illegible]
[illegible] तथा [illegible]
[illegible] किन्तु [illegible]
[illegible] गया।

[illegible] को [illegible] में से [illegible]
[illegible] के [illegible] के [illegible]

अन्त में हरिश्चन्द्र ने कहा कि रोहित के बदले में यदि वह अन्य बालक की आहुति दे तो भी देव उन्हें शापमुक्त करेंगे।

शापों के भयङ्कर दुष्फलों के समान नरमेध यज्ञ करने के लिए कोई न्याय ऋषि तैयार न थे। अन्त में राजा हरिश्चन्द्र ने विश्वामित्र की शरण ली और जब इन महाभाग ने नरमेध यज्ञ कराना स्वीकार किया तब समस्त आयोजन चकित होगया।

अपने पुत्र रोहित के बदले यज्ञमें होमनेके लिए राजा हरिश्चन्द्र एक युवक ब्राह्मण खोजने लगे। चारों ओर उनके दूत उसकी खोज करने लगे। अजीगर्त जहाँ रहता था उसके निकटके ग्राममें हरिश्चन्द्र के बहुत-से दूत ठहरे हुए थे। यह बात जब शुनःशेप ने सुनी तब उसे भान होने लगा कि उस की निराश अधमता का अब अन्त आगया।

घोर गुफामें अकस्मात् ठहरे हुए मनुष्य को प्रकाश दीखने पर जैसा आह्लाद होता है वैसा ही शुनःशेप को हुआ। यज्ञके यूप पर चढ़कर कभी न देखी हुई वर्षों में अपने मन में बसे हुए और केवल सभा-स्थान ऋषियों का मंत्र स्वर सुनते हुए अग्नि में होम जाने की परवाह, जीवन की इस असह्य स्थितिमें से मुक्त होने का यह कौनसा सुन्दर मार्ग उसके लिए हो सकता है? वह महर्षि विश्वामित्र के उत्सवमें के दर्शन पायगा उनकी वाणी सुनेगा और उनके आवाहन से आते हुए देवताओं के दर्शन करेगा।

दूसरे दिन सबेरे ही उठकर वह ग्राम के ग्राम में हरिश्चन्द्र के नायक से मिला। ऐसा सुन्दर और निरोग ब्राह्मण युवक यज्ञ में होमे जाने के लिए स्वेच्छा से आया है यह जानकर वह नायक बहुत प्रसन्न हुआ। शुनःशेप ने उसे अजीगर्त से मिलने के लिए कहा।

जब अजीगर्त ने नायक और शुनःशेप की बातें सुनीं तब वह बहुत गम्भीर बन गया। उसने पूरा दिवस विचार में बिताया। दूसरे दिन वह यज्ञस्थल में आ रहा था उसकी आँखों आगे से कहक रहा थी और वह बकता रहा था— विश्वामित्र ऋषि आते हैं।

'हाँ' उन्होंने धीरे से कहा। आज प्राण सूना के वंचित होने पर।
तब आपको कैसी आशा! धीरे से उन्होंने कहा।

शुनःशेप का वध करने वाला क्या कोई मिला! अमरशक्ति ने पूछा।

मैं अभी स्वयं निकला हूँ यों इन्होंने कहा।

जब दोनों ऋषि अपने निवासस्थान पर आने लगे तब दोनों के हृदय भारी थे। मार्ग में बहुत देर तक कोई एक शब्द भी नहीं बोला।

जब से विश्वामित्र अपना राजसिंहासन छोड़कर आप वन में आए सुनाम कन्या का पुत्र हृदय से स्वीकार किया तब से दूसरों ने उन पर कृपा दृष्टि की थी। राजा उनके चरणों में आकर झुकते थे। अब और दस्यु विरुद्ध अपना उनका प्रारंभ करते थे। उनके प्रताप से शत्रु भी ... कृपा के नर्मों से उत्तरोत्तर कृतज्ञता होकर शान्ति प्राप्त की थी। दस्यु भी उनके प्रताप से सहकारी बनने लगे थे।

... अपने निरपराध स्वयं को प्राप्ति में कारगर नहीं हुए थे। उन्होंने तपस्या से आप ऋषियों में श्रेष्ठत्व प्राप्त किया था। अपने ... के ... में सब उनकी पूजा करते थे। सूर्य भगवान् की किरणों के समान उन्होंने सब दिशाओं में अपना संस्कार प्रसारित किए थे। जहाँ-जहाँ अनुष्ठान होता था वहाँ-वहाँ उनका स्नेह सब हृदय दुःख दूर करने के लिये ... जाता था।

उनके आरोहण को जो परम्परा प्राप्त हुई थी उसका मूल मन्त्र था। उन्होंने सिखाया था कि मन्त्र ही ईश्वर को पृथ्वी पर लाने का परम समर्थ साधन है। यह ही शुभ और शान्ति का दाता है। यही समस्त और धेनुओं का रक्षक है। यही इन्द्र को बल देकर वृत्र का संहार करने वाला साथी है। यही मनुष्य को नवपक्व बना करके आत्म प्रेम का दाता बना है, यह ही राजा वरुण के मन को समझाने वाला ... प्रचलित करने वाला है।

... हृदय ... तक ... करने के ... किया ...

स्वर्ग समझते थे और उन्होंने सबको समझा न थे। उनके [illegible] थे ही [illegible] एक अनादि से सिखाते थे।

[illegible] मध्य [illegible] में विश्वामित्र की [illegible] हो [illegible] था कि मनुष्य [illegible] नहीं है। आगे और [illegible] नहीं है [illegible] करने वाले और [illegible] न करने वाले में ही है।

अब [illegible] ने राजा हरिश्चन्द्र से उनके पुत्र का [illegible] और [illegible] अब हरिश्चन्द्र विश्वामित्र के [illegible] करने की [illegible] [illegible] भिन्न भिन्न की [illegible] आरम्भ हुई। [illegible] यज्ञ करते हैं तो इतने वर्षों से उनके सिखाये हुए [illegible] और [illegible] [illegible] ही [illegible] करते हैं और यदि वे नहीं करते हैं तो उनके [illegible] [illegible] उन्हीं का [illegible] से [illegible] हो [illegible] इस प्रकार दोनों प्रकार से उनके [illegible] [illegible] का [illegible] था।

[illegible] का यह [illegible]

[illegible] के [illegible] है [illegible]

विश्वामित्र ने [illegible] की [illegible] को [illegible] [illegible] हुए [illegible] के [illegible] हरिश्चन्द्र को [illegible] करना [illegible] [illegible] हरिश्चन्द्र का [illegible] दिया [illegible] [illegible]

[illegible]

[illegible] कि राजा हरिश्चन्द्र के [illegible] [illegible] है [illegible] [illegible]

[illegible]

[illegible] है [illegible] हुआ है। [illegible] है कि [illegible] विश्वामित्र [illegible] नहीं [illegible]

[illegible] विश्वामित्र [illegible]। [illegible]

[illegible] विश्वामित्र [illegible] किया। [illegible] हरिश्चन्द्र [illegible]।

[illegible] हुई। [illegible] के लिए [illegible] थी [illegible] के लिए [illegible]? [illegible] हुआ कि [illegible] था।

विश्वामित्र [illegible]। [illegible] हुए हैं।

विश्वामित्र और [illegible] था। [illegible] विश्वामित्र [illegible]— [illegible] और [illegible] के [illegible] में [illegible] और [illegible]—[illegible],

विश्वामित्र इस प्रकार सुन रहे थे [illegible] ने [illegible] दिया, 'भगवान् अङ्गिरा! ऋषि [illegible] ने शाप दिया था [illegible] इस प्रकार क्यों पूछता है? शाप से अभी तुम मुक्त नहीं हो [illegible]' विश्वामित्र के स्वर में करुणा थी।

[illegible]! तुम [illegible] हो। इसलिए [illegible] ने कहा [illegible] में इस शाप से मुक्त होने के लिए [illegible] आया हूँ। आपने [illegible] के लिए मेरे पुत्र बनाया और [illegible] उसको [illegible] करने का भी [illegible] दिया है। प्रभु [illegible] स्वीकार करो।

[illegible] के [illegible] अनुरूप [illegible] विश्वामित्र ने [illegible] पूर्वक उसको [illegible] किया। [illegible] इस [illegible] हो [illegible] उन्होंने [illegible]।

"[illegible] तुम [illegible] के [illegible] से [illegible]। [illegible] कहा।

[illegible] की अनुमति [illegible] मुझे कौन [illegible] सकता है [illegible] विश्वामित्र! [illegible] के [illegible] से [illegible] करने लगा।

[illegible] कोई [illegible] नहीं [illegible] बड़ी [illegible] में [illegible] हूँ [illegible] पूछता हूँ [illegible] इस [illegible] का [illegible] इस [illegible] हूँ। [illegible] रहे हैं [illegible]?

"[illegible] कहाँ [illegible]?

[illegible] हूँ [illegible]

तब ?

उन्होंने मुझे श्राप दिलवाया। पर मैं उस लड़केको जनेऊतक तैयार नहीं था। अपनी सन्तान की अपेक्षा भी वह लड़का मुझे अधिक प्रिय था। भगवती ने मन अध्ययन में प्रश्न किया और कहा कि वह लड़का तो मर गया। यद्यपि मैंने [illegible] अध्ययन समझ लिया पर क्रुद्ध होकर मुझे शाप दे दिया।

'तुम्हारी बात मेरी समझ में नहीं आती। तुमने भगवती को सत्य क्यों न कहा? वे तुम्हें और उस लड़के को दोनों को मार रखतीं।'

वह बात बननी आ रही थी। यदि उस समय मैंने उस बातें का कुछ बता दिया होता तो पृथ्वी रक्त में बहने लगती। सत्यवती ने स्वाभाविकता से धीरे धीरे कहा। उसकी पाखण्डी आँखें विश्वामित्र के मुख के भाव [illegible] रही थीं।

विश्वामित्र दिव्य नेत्र से [illegible] की ओर देख रहे। इस व्यक्ति की बात यथार्थ से [illegible] पड़ी थी किन्तु फिर भी उसका विश्वास नहीं किया जा सकता था।

ऐसा क्या बात थी? [illegible] पूछा।

उस समय तृत्सुओं के और भरतों के बीच वैर था, वह क्या भूल गए? भरतों को भी आपको तृत्सुओं से अच्छा नहीं लगता था वह भी आप जानते हैं। यदि उस लड़केको मैंने छिपाया न होता तो भरतों और तृत्सुओं की क्या दशा होती?

'पर तुम्हारे उस लड़के से क्या सम्बन्ध?' [illegible] द्वारा [illegible] पूछा। [illegible] सत्य का [illegible] प्रकाश दिखाई देने लगा था।

वह लड़का तृत्सुओं और भरतों दोनों का उत्तराधिकारी था [illegible] जिस [illegible] विद्वत्ता वाले ब्राह्मण प्राचीन छन्द गाकर बांध [illegible] हो उसी प्रकार सत्यवती द्वारा [illegible] युक्ति से फेंके हुए [illegible] ने [illegible] आकर विश्वामित्र का हृदय बांध लिया।

राजर्षि विश्वामित्र की पृथ्वी [illegible] बांधी हुई आन पड़ने लगी।

[illegible] बहकर दूर [illegible] । [illegible] की पुत्री [illegible] समय के [illegible] के [illegible] हो गई । वह दुखी थी । [illegible] विवाह का [illegible] करती हुई वह [illegible] । [illegible] विद्रोह [illegible] थी पर फिर [illegible] कहा था कि [illegible] है [illegible] है वह ?

क्या कहा ? विवाह मैं न करूंगी ।

[illegible] वह कुछ [illegible] । उसकी पुत्री [illegible] [illegible] के साथ [illegible] मैं [illegible] में [illegible] । [illegible] विवाह [illegible] [illegible] । [illegible] हो वह [illegible] किन्तु [illegible] [illegible] [illegible] और फिर [illegible] ।

विश्वजित के मस्तिष्क में [illegible] के समान [illegible] हो रही थी । क्या वह [illegible] में [illegible] रहा है या [illegible] कर रहा है ? [illegible] हो गई । [illegible] मृत्यु [illegible] की [illegible] [illegible] मृत्यु [illegible] [illegible] समय-समय पर [illegible] के सामने [illegible] मस्तिष्क में घूमने लगा । [illegible] [illegible] अधिक [illegible] किन्तु क्या [illegible] करती ? वह

[illegible] ... धोखा देकर [illegible]
[illegible] लाये [illegible] था ?

[illegible] "[illegible]" !

[illegible] में [illegible] । उसने [illegible]
[illegible] ... [illegible] निकालकर [illegible] ।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

कुछ क्षणों तक पाँचे विमोहित दानव के समान जिस नयन से चन्द्रगुप्त की ओर देखते रहे "कहाँ है वह लड़का ?"

सब लोग कुछ देर तक चुप रहे।

वही लड़का तो सुदर्शन है जिसे आप कल रात में ढोंगन बाबा है उसने अन्त में गुप्तापूर्वक हँसते हुए कहा।

विष्णुगुप्त ने इस प्रकार ऊपर देखा मानो उनको स्वयं कठोर हाथ हो और अपना सिर हिलाया। उनका शरीर रोमांचित हो रहा था।

सुदर्शन ! य बहुरूप।

हाँ, गुरुदेव, उत्तेजना के स्वर में चन्द्रगुप्त ने कहा, वही सुदर्शन।

असम्भव असम्भव विष्णुगुप्त के मस्तिष्क में ... हुए वे स्तब्ध रह गए। उस युद्ध की दुहाई उन्होंने पहचान ली। वे कुछ स्वस्थ हुए।

"भगवन ! तेरे सामर्थ्य की क्या सीमा है या नहीं ? क्या तू मुझे ठगने आया है ? दूर हट दुष्ट ! यदि तू सचमुच था तो इस बात तक कहाँ छिपा रहा ? ओ पण्डित ! या, ब्राह्मण के रूप में तू पृथ्वी पर अन्धकार फैलाने के लिए अवतरित ?"

तलवार की धार के समान तीक्ष्ण स्वर में विष्णुगुप्त ने विरूपमित्र का कन्धा हाथ में पकड़ लिया, "इस बार के पहले विचार कर लेना। मैं जा रहा हूँ। आप कल अपने पुत्र को वश में होने का दुःख कम कीजिए।" इतना कहकर वह चलने लगा।

कुछ पग चलकर वह फिर लौटा। "पर आज बाबा वर्षों से मैं वह बात इस प्रकार क्यों नहीं कहता हूँ जो यह पूछते हो ? तो इसलिए कि इस लड़के के मूल्य का भाव अभी नहीं है" चन्द्रगुप्त पूछता रहा और बोला "अपनी आयु के पश्चात् वह मनुष्यों के दिग्दर्शन करेगा— यह उसका मूल्य है।"

इस लड़के की बातों को ठीक बनाने के लिए चन्द्रगुप्त ने उस

पास रखा था। उन्हें यह यथार्थ में महाप्राण जान पड़ा। विश्वामित्र
के मस्तिष्क में विचार घूमने लगे।

'पर कल तो उसकी आहुति दी जाने वाली है?' प्रसन्नता से
भरे हुए ऋषि ने कहा।

'जब तक मैं बैठा हूं तब तक ऐसा कैसे हो सकता है? ऐसा
हँसते हुए अजीगर्त ने कहा 'इसे मैंने इस प्रकार बलि में देने के
लिए बड़ा नहीं किया है। यह तो दासी का पुत्र है। इसका ब्राह्मण से
हो सकता है?'

इतना कहकर काँपता हुआ अजीगर्त विश्वामित्र की ओर
देखता रहा।

'दुष्ट जा निकल यहां से!' विश्वामित्र चिल्लाये। अजीगर्त
फेर वहां से चला गया।

५

ऋषिवर ने आँखें मलीं। इस अजीगर्त की बात सच थी या
कल्पना थी बनावटी थी? आँसते हुए आगे बढ़ता हुआ अजीगर्त
कार में विलीन हो रहा था। क्या वह सच कहता था? क्या उसमें
सच था? विश्वामित्र वहीं-के वहीं स्थिर हो गए। सम्पूर्ण दृष्टि
उन पर टूट पड़ी थी। वे समझते थे कि इस ने उन्हें दिव्यचक्षु
किन्तु इस समय वे दो आँखें अन्धी हो गई थीं।

धक्का देर से वे धीरे धीरे निवास से दूर जंगल की ओर बढ़े
उन्होंने समझा था कि स्व ने उन्हें आयत्व का उद्धार करने के
जन्म दिया था। जिस सत्य को किसी ने नहीं देखा था उस
दर्शन किया था—सत्य मात्र सृष्टि से परे है। सत्य-द
उसका सत्य व है सत्य ही शुद्धि प्राप्त करने का साधन है।

उन्हें ज्ञात होता था कि वह सत्य मानवमात्र का उद्धार कर
था। दुःखवों के दुःख का निवारण कर रहा था। प्राणों की अवस्था
वेदन कर रहा था।

किन्तु ... अकस्मात् यह सब असत्य प्रमाणित हुआ ... ... असत्य पूर्णतया असत्य।

उनके हृदय में प्रश्नावली उठी।

काले और गोरे मानव एक ही संस्कार के अधिकारी थे, देवों द्वारा समान रूप से रचित थे। तो फिर राजा की पुत्री उमा भी अगस्त्य की पुत्री रोहिणी जैसी हो सकती थी तो फिर उमा के पुत्र को आज भरत श्रेष्ठ के ज्येष्ठ पुत्र का स्थान क्यों न दिया जाय?

मानव-मात्र पशु से परे हैं, वे इतने पवित्र हैं कि वे न बेचे जायँ और न हनन किये जायें। यदि यह सत्य है तो फिर यह नरमेध मैं कैसे कर सकता हूँ? मैं सत्य का द्रष्टा हूँ, सत्य का आचरण करने वाला हूँ। यही मेरा जीवन-व्रत है। तो फिर शुनःशेप को भरत श्रेष्ठ के स्थान में स्थापित करने के बजाय पवित्र के पुत्र के रूप में उसे कैसे रहने दिया जा सकता है?

इस नरमेध को रोकने के बदले उस काम के लिए क्यों इस प्रकार तैयार हुआ हूँ? सत्य क्या है? मैंने समझा और समझाया है वह या जो मुझे करना पड़ रहा है वह?

तो फिर मुझे क्या करना चाहिए? एकत्रित जन-समूह को स्पष्ट कहना होगा कि शुनःशेप अजीगर्त का पुत्र नहीं है मेरा पुत्र है।

और मैं उस अजीगर्त के पुत्र के रूप में पशु को होम दूँ तो मेरे जैसा कायर और कौन होगा?

किन्तु यदि अपने पुत्र के रूप में उसे स्वीकार करूँ तो तुरन्त आज पता चलेगा कि वह दासी पुत्र है। फिर उस वस्तु में भी क्या होगा जा सकता? और रोहित भी ऐसा क्यों होवे ... सब तो उसे स्वीकार नहीं करेंगे और मेरी कैसी अपकीर्ति होगी? भरत क्या कहेंगे? क्या दासी पुत्र को भरत राजा के रूप में वे स्वीकारेंगे? अगस्त्य की ज्येष्ठ कन्या रोहिणी अपने वह पुत्र रोहित के लिए क्या आकाश पाताल एक नहीं कर देगी? क्या वह शुनःशेप का शासन कर सकेगी? कदाचित् इस

प्रश्न के कारण भरतों में अन्यभाव जागरित हो उठेंगे और वसिष्ठ की तो बन आवेगी सम्पूर्ण आर्यावर्त में प्राण भी छूट उठेगी।

पर इस भय से डरकर यदि मैं समन्य का आचरण करूँ और कायरता की सीमा होगी।

यदि मैं कुछ न बोलूँ तो ?

यज्ञ हो जाय, शुनःशेप होमा जाय और यह भय कोई कहने आवे तो ?

नहीं नहीं ! इन सबके भय से क्या मैं चुपचाप बैठा हूँ ? क्या निर्दोष बालक को होमा जाने दूँ ? नहीं नहीं मुझे जैसा धर्मभ्रष्ट और कौन होगा ?

विश्वामित्र की विचारधारा आगे बढ़ी।

मानव हवि नहीं बन सकता यदि यह बात सत्य है तो फिर मैं सहन करने के लिए क्यों तैयार हुआ हूँ ? वचन भङ्ग होने के भय से ? इसके टूटने के भय से ?

इस प्रकार विचार करते हुए विश्वामित्र भय-व्याकुल होकर स्थान पर खड़े हो गए। जहाँ जहाँ उनकी दृष्टि पड़ती थी वहाँ-वहाँ अपनी विकराल अपकीर्ति का वे दर्शन कर रहे थे।

विचार प्रवाह तो अनवरत और अविरत रूप से चल ही रहा था मैं इस समय इतना अधम क्यों होगया हूँ ? कभी मैंने असत्य का आचरण नहीं किया है फिर भी यह सब क्या है ? भय, भय मुझे सता रहा है। भय महाभय भयंकर असुरूपम भय ने मुझे घेर लिया है। मैं शुनःशेप को अपना कह नहीं सकता, और बालक रहने दूँ तो भी नहीं हो सकता। मैं आक्षेप करा भी नहीं सकता और वह सब छोड़कर चला भी नहीं जा सकता। मैं तो अशान्ति के सत्य के समान हो गया हूँ ... ...क्यों ? भय ... ...भय ...महाभय !

पर आँख के हृदय ने विराम का ध्यान भी नहीं ... नहीं——

नहीं ... ! मैं इस सारे [illegible] से आकर्षित हुआ हूँ या [illegible] हुए [illegible] किस [illegible] ? क्या मैं [illegible] के पीछे [illegible] हूँ ?

नहीं नहीं नहीं।

मेरा सत्य ही मेरा है और यही सत्य मेरा जीवन है। फिर भी [illegible] हो सकते हैं। तुम सब मेरा पुत्र है—मेरी विद्या और धर्म का स्वामी है।

और तब ! क्या मैं [illegible] करूँ

नहीं नहीं नहीं।

विश्वामित्र [illegible] मन का [illegible] गया।

नहीं नहीं मेरा सत्य तो मेरा अपना ही है। वह सत्य मैं ही हूँ। सम्राट् इसे [illegible] भी सत्य नहीं करता और वह कभी भी [illegible] भी सत्य नहीं [illegible] सकता। सत्य तो सत्य ही रहता है—अजर अमर अचल और अक्षय। तो फिर सम्राट् के आने का भय क्यों ? [illegible] का भय [illegible] !

दोनों [illegible] हो, इस प्रकार [illegible] को [illegible] —

"देवो ! [illegible] की सम्राट् [illegible] हो है [illegible] सकते हैं। मेरा सत्य [illegible] नहीं दिया है [illegible] है [illegible] प्राप्त किया है। उस [illegible] कभी नहीं ले सकता।

विश्वामित्र की [illegible] महामेरु के समान [illegible] हुआ [illegible] हुआ [illegible] करता हुआ [illegible] का [illegible] हुआ। [illegible] उनके पैरपर [illegible] उनकी कमर तक पहुँच गया था। उनकी आँखें [illegible] हो गईं। [illegible] उनके [illegible] हो गए [illegible] को [illegible] रहे हों। उनकी आँखें [illegible] के समान निस्तब्ध हो गईं। उनके मस्तक पर की भृकुटी चढ़ी हुई [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

और अन्धतमसा फुफकारती हुई आग बही। विश्वामित्र का कल्प-भाव हो रहा था उन्हें कमाल हुआ। इसी देवी सरस्वती ने इन्द्र को प्रेरणा दी थी। जब वृत्र को मारने के लिए तत्पर हुए थे तब प्रकाशवाहिनी सरिता के समान इन्द्र को पुनर्विश्वास करती हुई सरस्वती आयी थी। चूँकि व्याकुल हुआ कि इस समय इन्द्र के अंग-अंग को विकल कर रहा था। इसी हेतु। उसकी प्रेरणा से इन्द्र ने वज्र उठाया और चलाया। क्षणों में असुर वृत्र को मार गिरा। उसका काला मर्त्य शरीर और बड़ा। इन्द्र ने महाताण्डव किया। उसके स्नायुओं के जल की धारा में न टूटने के महाताण्डव किये। किन्तु प्राणविश्वासकता से शिथिल हुआ और शिथिल होकर उसका हृदय जल टूट गया। वृत्र के उस शरीर के बीच से इन्द्र बाहर निकल दिये। विजय का प्रकाश हास्य उनके मुख पर था। ऋक्ताम के सुमधुर भाव इसी सरस्वती के साथ पर उतार रहे थे और सत्य का जो अंश वृत्र ने रोक रखा था वह मुक्त होकर आनन्द से कल्लोल करता हुआ जगत् का उद्धार करने के लिए बह निकला।

विश्वामित्र ने ऋचाओं द्वारा अंग-अंग के बन्धन में से छूटने का इस प्रकार प्रयत्न किया मानो इन्द्र का अनुकरण कर रहे हों। मन का सहारा शिथिल होकर गिर पड़ा और वे स्वस्थ समय साथ कर उसके बीच में खड़े रहे।

सत्य स्पष्ट हुआ।

अजीगर्त दुष्ट है। उसके साथ व्यवहार करना अब कायम है।

शुनःशेप आर्य-श्रेष्ठ है। यह जगत् का अंश बना ही चाहिए।

शुनःशेप हवि नहीं है मानव है, पवित्र है, यज्ञ में उसका वध नहीं हो सकता। यज्ञ तो सृजन का साधन है विनाश का कुण्ड नहीं है। जिसमें मानव का हवन हो वह यज्ञ नहीं हो सकता।

स्तुति और निन्दा तो मानवता के समान केवल व्यवस्था प्राप्त होती है। प्रीति सत्य का साथ देती है, उसकी हिंसा नहीं करती।

[illegible] के [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] था। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] की [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] हुआ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] हुए हैं।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] किन्तु [illegible] [illegible] [illegible] हुए [illegible] [illegible] भी नहीं [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] में [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] था।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] नहीं देखा था। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] की [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] में [illegible] [illegible] [illegible] का [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] था। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] का [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] हुए। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] लिए [illegible] [illegible] है। [illegible] [illegible] [illegible] में [illegible] [illegible] [illegible] हुआ।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

से पर हुए प्रभाव वह उनके साथ बांध नहीं सकता था। उसको यह एक सप्ताह स्नान करने की आज्ञा नहीं। किन्तु दिन के बिना यह आश्चर्य था कि आज आ गया था। अब वह पतित नहीं था। अब वह उन सबों के समिप्य में आने के देव के चरणों में गिरने के योग्य था।

जब उस मण्डप के बीच में से आकर खड़ा किया गया तब उसका गौरवर्ण शरीर तेजस्वी मालूम था। उसको मुण्डकाण्ड किया न रहा गया। उसकी दरवाजेमय आँखों के सामने मण्डपाभाओं से सुसज्जित सब कहीं के सुन्दर शोभायमान द्वार थे। उससे थोड़ी दूर पर मण्डप के बीच में वेदी बनी थी।

उसने यज्ञमण्डप के विषय में बहुत सी बातें सुनी थीं, परन्तु … यज्ञमें उसने यज्ञमण्डप देखा। उसकी आँखों में स्वाभ उभर आये। यज्ञमण्डप के पास किस प्रकार मंत्र बोलना चाहिए सब विधि कैसे करनी चाहिए आदि उसने अपने पिता से सुना था। आज इस परम पुनीत स्थान में उसने अपने स्वामी अग्नि देव को विराजमान देखा।

यह यज्ञमण्डप उसीके लिए स्थापित किया गया था। अग्निदेव की गोद में बैठकर वह राजा वरुण के चरणों में जायगा।

देव, मैं आया आया, वह मन में बोला। परन्तु उसे प्रेत के द्वार के रूपमें दिखाई दी।

उसकी आँखों के सामने कुण्ड के चारों ओर बैठे हुए ऋषि दिखाई देने लगे। उसका हृदय भर आया। जिन्हें देखने को उसका हृदय बड़ा तड़प रहा था। वे सब उसीकी प्रतीक्षा में वहाँ बैठे थे। कैसे थे वे ऋषि! उसने जितनी कल्पना की थी उससे भी अधिक तेजस्वी थे।

ये ऋषि सबसे आगे बैठे थे। एक विशालकाय थे। उनकी छाती कितनी ऊँची थी। उनका स्वर गम्भीर और मोटा था। वे इधर देख रहे थे। उनके पास ही दूसरे ऋषि थे—साधारण डील के, पर …

थे आगे बढ़ रहे थे। इनकी दृष्टि [illegible] थी। [illegible] शुनःशेप [illegible] थी। इनके [illegible] अनुसार प्राप्त हुए थे।

शुनःशेप की दृष्टि उनकी ओर [illegible] फिर हटाई। वह दृष्टि [illegible] हटा नहीं सका। उस मुख का अद्भुत [illegible] भी [illegible] थी और आज उस [illegible] तेज [illegible] हो रहा था। उनकी सुन्दर काली आँखों में [illegible] विभिन्न [illegible] जिन थे, वे आँखें उस पर जितने अत्याचार किये थे [illegible] विचार किया। उन आँखों में [illegible] केवल उसकी [illegible] ही थी। उन आँखों के करुणापूर्ण [illegible] तेज ने शुनःशेप [illegible] कर दिया।

इस स्नेह का [illegible] कभी अनुभव नहीं किया था [illegible] नहीं था। इन आँखों के आलिङ्गन में उस [illegible] हुआ मानो वह [illegible] हुए [illegible] के हाथ में हो।

शुनःशेप का हृदय उमड़ आया। उसकी आँखें भीग गईं। उसे ऐसा जान पड़ा मानो उन [illegible] और करुणापूर्ण आँखों में वह समा रहा हो।

स्नेह और [illegible] के [illegible] उसका गला भर आया। उसके [illegible] हो गई।

वे विश्वामित्र थे या [illegible]? वे [illegible] के राजा [illegible] नहीं। [illegible] तेजस्वी [illegible] तथा [illegible] में [illegible] थे? शुनःशेप के हृदय में [illegible] शान्ति मिली। वह [illegible] उसने [illegible] के सामने प्रणिपात किया।

शुनःशेप को इस प्रकार [illegible] लगा [illegible] यज्ञ के [illegible] उस [illegible] के लिए [illegible] एक [illegible]?

[illegible] करुणापूर्ण आँखें [illegible] दुःखित होकर [illegible]

वह व्योम में ही है। विकसित नयनों से वह वरुण के आने की प्रतीक्षा करता रहा। अभी आवेंगे अभी अभी ही इस बालक ने उसका शिरच्छेद किया कि बस वे तुरन्त ।

विश्वामित्र मंत्र बाल रहे थे पर उनकी आँखें शुनःशेप पर ही लगी थीं। यह सुकुमार और सुन्दर युवक क्या उनका पुत्र है ? कितना सुन्दर सिर कितना मनोहर मुख, कमल से कमनीय और धीर नयन। स्वर्ग से उतरकर आये हुए देव के समान वह यूप पर खड़ा था और गर्व से चारों ओर देखता हुआ आनन्दातिरेक में मग्न हुआ रहा था। क्या यह मानव है ? क्या यह देव है ? निश्चित मृत्यु भी उसे भयभीत नहीं कर रही है।

विश्वामित्र ने अपना कर्तव्य अन्तिम पशु के लिए एक ... कभी-कभी वे हरिश्चन्द्र की ओर देखते थे। अन्तिम पशु में देर न करें और प्राणों का वध लें लो !

मन्त्रोच्चार हुए। आहुतियाँ पूरी होने को आईं। विश्वामित्र ने जो निश्चय किया था उसे पूरा करने के लिए वे तत्पर हुए। उनके हृदय की धड़कन इस समय वेग से चल रही थी। उन्होंने मन का ... क्या जान लिया था। उनकी दृष्टि के सामने कर्तव्य निष्ठा खड़ी है ... ब्रह्मा के पुत्र को बचाना असम्भव न होने देना अपकीर्ति का ... पर चढ़ाकर मरने के लिए सर मिटना।

मन्त्रोच्चार पूरा होने को आया।

वरुणदेव से मिलने के लिए शुनःशेप की आतुरता बढ़ी जा रही थी। उसकी दृष्टि तो नभ से पारस्पर श्याम मार्ग पर स्थिर थी। ... कब आवेंगे ?

चारों ओर क्या हो रहा था इसका उसे भान न रहा। उसे श्याम मार्ग ही दिखाई देता था। उसके उस द्वार पर वह अनिमेष ध्यान दिये बैठा था। और देव कब आवेंगे ? कब ? कब ?

उनके सामने बैठे हुए कुँवर वे म भी उस ओर देखा जाता था। मानो नारी उस रूप पर भव उतर पड़ा था रहे हों। क्या यह सम्भव हो सकता!

तीन दृश्यों को उसने पाने में—अ त कक्ष पर बैठे कैसे था मनुष्य रूप हुए—उस तरफ भव पड़ा मानो उस स्निग्धचन्द्र प्रभा हुए हों हों, होते गये थे। उन्हों पोरों से उतर—धर उनके निकालकर नवपुल लगा स होते हुए उसको ओर पाने का सुमनस्य के उसका था इतर—सम्पन्न हो। उनके ब म म स्नित स्वरों का पहचाना—व हो सब पहरे—जिनके द्विप उनने नोव हृदय को था भार स्निग्ध जिनके मन देख पे व हा का रहे थे।

सब के कार का वश नहीं था इस कान्यवर्ती स्व का कान्ति इतन बड़ी है मा वह भूला नहीं था वह ही उनके स्व सब वस्तु रूप—बाद उसको बात उसका बड़ी-बड़ी आँखों का वह भूला नहीं था भ कि शिवा सबन्धी मयराह । उनमें हुए कायवो के समान पैनापन थी। वही सुख—स्निग्धता मन भाव वह बन्द हुआ पैदा स पुकारता था। —रा —हीं व हा व बन्द राजा

सब वह वन म उसको बात था रहे थे कीया उसमें का रागमय करते हों—कैसा देख है!

सुमनस्य के सब म इन्द्र विकल सेवक रस मधुर वरण

सम्पन्नता करते हुए इन्द्र नगर इक रूप सब अरुन्धती निकर खाते निनाद किये। वहाँ का आ गए सुमनस्य के हृदय म कहा हुआ था वह पत्र पर लिखा। आ मन उनने कवि सुन्दर स पाप पहुँचा में लिखा राख दिया था, व कविकुमार भरा पर कमल दाल पत्र जब में हा उनके सुख म निकलकर विहार था।

मधुर अनुभाव स्वप्न और अन्य हो। इस पत्र देखकर मधु मन काम

यूप से बंधा हुआ नराधम का पुत्र इन्द्र के समान दैदीप्यमान होने लगा। उसके मधुर कण्ठ से राजा वरुण का आवाहन करनेवाले मन्त्र गूँज रहे थे। वे मन्त्रोच्चारण में स्वरशुद्ध थे और मानव के बच्चों के कण्ठ में जो उत्साह और भक्ति का कम्प नहीं था वह उसके स्वर में था।

शुनःशेप के कण्ठ में से उसके समस्त जीवन की आतुरता उमड़ रही थी। वह ज्यों-ज्यों मन्त्र बोलता गया त्यों-त्यों स्पष्ट होने लगा।

देवता आ पहुँचे थे—एकदम यज्ञमण्डप के सामने। सामने देखा उषा थी। बादल और स्वर्ग में श्रेष्ठ इन्द्र थे।

उसने अपने कण्ठ से प्रजापति-स्तोत्र को, उसने उषा का स्तवन किया। मन्त्रों से इन्द्र की आराधना की, अग्नि का आवाहन किया। उसके कण्ठ में से विद्या की सरिता अविरत बह निकली।

ऋषिवृन्द स्तब्ध होकर इस मन्त्र-दर्शन—नये मनोहर मन्त्रों के नये दर्शन—को सुनते रहे। यह नया मन्त्रद्रष्टा कौन है?

शुनःशेप राजा वरुण की तरफ़ दूर बड़ी-बड़ी आँखें फैलाकर देख रहा था। ये ही, ये ही, ये स्वयं आये, तिमिर में से उसे त्राण देने के लिए।

सब दङ्ग होकर देखते रहे। विश्वामित्र की आँखों में से आँसू बहने लगे।

शुनःशेप अपने देव से मिलने के लिए छटपटाने लगा। इस मन्त्रोच्चार से थका हुआ वह साँस लेने के लिए रुक गया।

मैं ही देव वरुण, आया, आया, आया, होते हुए शुनःशेप बोला और कूद पड़ा।

तत्काल उसके बन्धन टूट गए—ऊपर का, बीच का और नीचे का। वह यूप पर से उछलकर देव के हाथों में जा गिरने के लिए दौड़ा और गिर पड़ा। विश्वामित्र खड़े हो गए।

धुव धुव धुव। मिसलियाँ बने हुए थे दंड। ऋत्विक बंद हो गए। लोगों में हाहाकार मच गया।

शुनःशेप ज्यों ही गिरा त्यों ही मूर्छित हो गया। विश्वामित्र दौड़े और उसे हाथ में उठा लिया। राजा हरिश्चन्द्र का पाप जलोदर होते होते रुक गया था। उसके मुख में से आवाज़ निकली आ आ आ।"

वन में आकर निस्तेज आँखों से वे देखने लगे। राजा वरुण ने इन्हें शाप से मुक्त कर दिया था।

# अभय-संगोपन

१

विश्वामित्र के तप का चमत्कार और उनका [illegible] ऋषि का मन [illegible] इन्द्र इत्यादि लोग चकित हो गए और मन्त्र [illegible] है [illegible] कौशिक और वसु मुनि [illegible] दो बड़ा दिन था। राजा हरिश्चन्द्र का [illegible] यज्ञ में नरमेध के बिना ही शान्तिपूर्ण कर लिया। विश्वामित्र के प्रताप से [illegible] का पुण्य प्रत्यावर्तन करने लगा। नरमेध करना नहीं पड़ा। अब [illegible] तीनों लोकों में एक ही बात है—विश्वामित्र [illegible] बातें [illegible] करने लगे।

विश्वामित्र अब शुनःशेप को लेकर [illegible] में [illegible] सब समस्त जनता उनके चरण-वन्दना करने लगी। यह उनके [illegible] का अन्य पद था [illegible] उनके हृदय में केवल [illegible] थी। देवों ने [illegible] की समता कर दी थी।

शुनःशेप को उन्होंने अपने स्थान पर ले आए थे। उस कुटी में [illegible] के प्रबन्ध करने लगे। बार बार इस कान्तिवदनी और सुकुमार पुत्र की मुखश्री में उन्होंने उमा के दर्शन किए।

उन्होंने शुनःशेप के शरीर पर बँधा हुआ वस्त्र उतार डाला। उसके वक्ष की [illegible] ओर उनकी दृष्टि पड़ी। वहाँ एक [illegible] चिह्न उन्होंने देखा।

ऋषि की आँखों पर धुँधला पर्दा छा गया। उसके बायें स्तन के पास एक बड़ा सा काला चिह्न दिखाई दिया। [illegible] के [illegible] में एक बालिका दिखाई दी—काली सुकुमार और [illegible] में पागल।

विश्वामित्र शुनःशेप को देखते रहे। वात्सल्य के भाव में लिपटकर

[illegible] आँखों में उसकी आँखों [illegible] में उसके [illegible] का संस्कार था और वह [illegible] चिह्न—मुद्रा—उसकी माता की साक्षी दे रहा था।

[illegible] के पास से [illegible] उन्होंने [illegible] के सिर पर हाथ फेर [illegible] किया।

[illegible] के गर्भ का पता नहीं था [illegible] पति के [illegible] परिणाम निकला। उसका विवाह [illegible] है। [illegible]

[illegible]

[illegible]

माना आपका नैराश्य हो हा ! अनजान में रोहिता ने शुनःशेप के त्रिभुव का प्रसंग दिया। कितना सुन्दर सदाचार वह करता था ! उस शान्ति के रूप में ऐसी थी जब आप छूट से फिर क्यों नहीं हुआ।"

सच बात है रोहिता, तब तो भगवान् है। मेरा मन इसने कभी शुभ लिया तो नहीं।

"आपका मन !" आश्चर्य से रोहिणी बोल उठी, वह कैसे ?

"हाँ मेरा ! रोहिणी ! वह मेरा पुत्र है। विश्वामित्र ने शुनःशेप की ओर दृष्टि डालते हुए कहा।

आपका ! और अब इस नए रहस्य का क्या होगा यह समझने में असमर्थ रोहिणी ने कहा।

"हाँ विश्वामित्र ने धीरे से कहा "मेरा बेटा था।

क्या कहते हो !" मानो चकित होकर उसी कह रहे हो इस भाव से रोहिणी ने पूछा।

"हाँ इसके जन्म के समय मनस्वी ने इस अज्ञात बालिका को सौंपा था। भगवान् वरुण ने आज बतलाया है।

क्या ऐसा भी हो सकता है ? क्या ऐसा कभी सुना भी है ? आश्चर्य से आँख फाड़कर अगस्त्य की पुत्री रोहिता बोल उठी।

कुछ कम रोष अजीगर्त ने बताया।

कुछ कम है वह बूढ़ा है। रोहिता चिल्लाकर बोली। पर उसकी चिल्लाहट अपने सामने पड़े हुए युवक को देख आज पार भस्म हो गई। उसके मन में महान् आनन्द हुआ और उसके हृदय का धड़कना

"नहीं रोहिणी सच बात है। इस विषय में मेरा के लिए शंका की कारण नहीं है। तुम जिस बालक के साथ अगस्त्य के आश्रम में आई थी वह यहाँ है ? उसके साथ इसके मुखड़ा करके तो देखो।

ही कर सकता है ? सुदास दाशराज्ञों के राजा वसु के साथ इसका विवाह करना चाहता था।

शुनःशेप मन में आया और राम को देखते ही वह उससे जा मिला। उसका पुराना भय तो अब नहीं रहा दूर हो गई। शुनःशेप बोला वह बालक मामा मामा क्या कुछ लाया।

राम ने बता दिया हाँ शुनःशेप ! मैं तेरे मामा की बात करता था वह अभी नहीं है। बहुत रुदन करता है

मामा ने शुनःशेप के मस्तक पर हाथ रक्खा। वह आँखें बन्द कर के मुसकराए। और शुनःशेप पुनः शान्त होकर आँखें बन्द करके सो गया।

विश्वामित्र मन में हँसे यह बालक उनका और उन्हीं का है उसका शरीर गाधिपुत्र और उनके रक्त से बना है। राजा हरिश्चन्द्र को पुत्र यदि वह विवाह करता तो आर्यावर्त में और विप्र निकल आते परन्तु यह हो कैसे सकता है? क्या सम्भव हुआ लिए जाय तो पृथ्वी पर स्वर्ग ही आ जायगा। वे बलवान थे।

इतने में ऋषि अमर्षित आ गए। पहले इन विश्वामित्र का बनाव बिना विशेष अर्थ के न रहा गया। उस दिन इनका मुख लाल था इनकी आँखें लाल। उनका स्वर सुना। क्या विश्वरथ को स्मरण नहीं होता और इनके ही पर इनका आना को क्या है ? उन्होंने कहा।

आर्य देव वरुण ने तुम्हारे पास इसे दे दिया

हाँ पर मेरे तपो-कर्मों से यह स्वर्ग हो गया आकस्मिक विश्वामित्र ने कहा।

क्यों अब क्या रह गया !

क्या तुम इसे भरतखण्ड के रूप में स्वीकार करोगे ?

भारतखण्ड ! चौंककर अमर्षित बोले पर वह तो दस्यु-पुत्र है।

'हाँ' कड़ाई से विश्वामित्र ने कहा "हाँ वह शाधीपुत्र ऋषि श्रेष्ठों के पुत्र द्वारा भरतों में श्रेष्ठ होने के योग्य भी हो आप तो ...

है तो कम ही थे। आज तक बहुत पुरुहार स्थान में ही है हुए थे पर आज इनका परिणाम स्पष्ट दिखा गया ? राजाहीन आ... निःसत्व होकर हैं। मनुष्यों के पास राजा कहे पुरोहित भी हैं। तुम्हारी बात सत्य है।

“तो आप यह सब होकर आज ... का सत्कार क्यों नहीं स्वीकारते ?”

मैं ? क्या देव ! कहकर विश्वामित्र हँस पड़े ... उनका स्वर ... कुछ भावों के असमान राजाह की अपेक्षा अधिक प्रिय है।

किन्तु विश्वामित्र का भाव इन सब बातों में आज ... नहीं मिल सकता था। कहीं वे स्वयं आज वन को ... रहे थे वहीं कोई ... का भेजा हुआ दूत यह समाचार कहने के लिए वहाँ पर आ पहुँचा। वशिष्ठ के आश्रम में ... ने ... का हरण कर लिया मुनि वशिष्ठ ने स्वयं ही ... मानकर ... स्वीकार कर लिया ... का विनाश करने के लिए उन्होंने युद्ध ... करी तथा आस राजाओं को आमंत्रित किया। ये सब बातें दूत ने विस्तार से कह डालीं।

ये सब भयंकर समाचार थे। उनका पुरोहितत्व आज ही जिस प्रकार से हीन हो चुका था वह सब सोचकर विश्वामित्र मन में हँसे—और क्या हो सकता है ? रोहिणी ... । उसकी आँखें सूखी हुई थीं। अपना रूप करने का ऐसा साधन ... था। वह पतिव्रता थी और पति के प्रति उसने जो अविश्वासी आचरण किया था उसका ... हुआ न हुआ था। अपने पति के दुःख की व्यथा तक वह स्वयं नहीं पहुँच सकी थी इसे नहीं समझ सकती थी इसका उसे न दुःख था न चिन्ता था।

विश्वामित्र अपने विचार में मग्न थे। उन्होंने निःश्वास छोड़ा। इक्ष्वाकु का ... पुत्र ... सम्राट् हरिश्चन्द्र के पुत्र ... की रक्षा का भार ले गया। वशिष्ठ को ... की आज्ञा प्राप्त हुई

'और यदि गुरुदेव 'ना' कह देते तो ?' रोहिणी ने कहा।

'भरत हाथ में नहीं रहेंगे।' जयन्त ने गम्भीर स्वर में कहा।

'जयन्त !' रेणुका ने कहा, 'भरतों पर विपत्ति आई है। तुम भी इस प्रकार घबरा जाओगे तो क्या होगा ?'

'रेणुका ! यह बात कुछ उम्र जैसी नहीं है।'

'पर इसमें से तुम्हें ही मार्ग निकालना होगा।'

'गुरु ने तो कोई मार्ग निर्दिष्ट नहीं किया। भरतों के भाग्य की अन्तिम घड़ी आ पहुँची है ?' जयन्त ने कहा।

'भाग्य की अन्तिम घड़ी नहीं आई है, भाग्य फूट गया है।' रोहिणी ने सिर पर हाथ रखते हुए कहा। जयन्त चकित होकर देखता रहा।

'जयन्त ! घबराओ मत।' रेणुका ने मीठे शब्दों में कहा, 'भरत भृगु और समाजों स्वयं दूसरे संकटों में पड़े हैं। धीरज बिना मार्ग नहीं मिल सकता। शान्ति से सोचकर आगे बढ़ना।'

'यह दूसरा कौन सा संकट है ?'

'देवदत्त का बड़ा भाई मिल गया है।'

'देवदत्त का बड़ा भाई ?' जयन्त ने आश्चर्य से पूछा।

'हाँ ! उग्रा का पुत्र।'

'उग्रा का पुत्र !' जयन्त मूर्छित होता-सा बोला।

'हाँ ! जिसे मरा हुआ समझा था वह जीवित है।' रेणुका ने कहा।

'कहाँ ? कौन ?'

'शुनःशेप।'

'ऐं !'

'और अब वह भरतों का राजा होने वाला है।' रोहिणी ने क्रुद्ध होकर कहा।

सहसा जयन्त सब समझ गया। उसकी आँखों से चिनगारियाँ निकलने लगीं। क्रोध से वह खड़ा होगया।

'आप की यह स्वतन्त्र का पाना हाथ धाय है। इसका करा दाय।'

'मेरा भी ऐसी इच्छा है किन्तु आत्मा भी स्वतन्त्र के हृदय की किसी ने पाया है ?'

'स्वतन्त्र तो इसके लिए घातक है। आज जन्म लेना चाहे है एवम इसको चाहे इस पर हो लिया है। इतना कहा दोनों तो आज अब तुम्हारा अच्छा होगा।

'पर लड़का का माथा फिरा हुआ है इच्छा ने कहा।

'तो भी पारका कन्या अवश्य मारेगा।

४

मन्वन्तर पर ऋषि विश्वामित्र बहुत चक्कर लगा रहे थे। उनके हृदयमें अपना श्रद्धा प्रकट हुई थी। अब वे निर्मल बन हुए थे। आज सब आप हुए स्वर्गों का उन्हें दुःख नहीं था। वसिष्ठ आदिको गुणगान भरत भृगु प्रभृति ब्राह्मणों के सामने वे वृहस्पति द्वारा वर्णों के समान समस्त रहे थे। उन सबको स्पष्टतः उन्हें आज वासित जान पड़ती थीं। आज वे सब से निर्लिप्त और पृथक् रह थे—अकेले किन्तु सत्य की दृष्टि से सबको अवलोकन करते हुए समस्तीत हृदय से सबका सम्मान करते हुए।

विश्वामित्र आज आनन्द में थे क्योंकि वे बंधनमुक्त हो चुके थे। मूर्खो! तुम दुःख के लिए एक दूसरे का काटने के लिए तैयार हुए हो ? इतना भी नहीं जानते कि आनन्द तो हृदय में रहता है, सम्पदा में नहीं। मन्वन्तर यदि मेरा पुत्र न होकर किसी दास का पुत्र होता तो भी उसका प्यार उसके उपचारक उसकी विद्या व उसका हृदय कौन छीन सकता था ? शताब्दियों का अनवरत काम बनाना राजा मेरा यदि आप होता तो वही यार पुरुष बन जाता। सहस्रों धर्म इन्द्रियों से विवाह करके आनन्द मान रहे हैं और सबसे पार्थिव दासों के साथ सुख मना रही है। उ [illegible] मरकर भी न हो वहाँ वैराग्य न बना [illegible] है। समस्त जगत् [illegible] हो गया है।

"क्षमा कि बहुत-से कार्यों ने किया—

आप सबको आप क्या क्या हो कहने वाले हैं ?

"नहीं। यह सुनने का जिसे अधिकार होगा उसे ही कहूँगा। रागिनी! मैं केवल तुम्हें ही कहता हूँ क्योंकि तुम मेरी अर्धांगिनी हो। मेरी बात जब तुम्हारी ही गले नहीं उतरती तो दूसरे की क्या बात है?"

पर आपका यह विचार यदि सब जानें तो क्या होगा?

मेरी अपकीर्ति होगी। मेरे पुरोहितगण छोड़ेंगे। मुझे त्याग देंगे। बस और क्या करेंगे?

हमारे बालों का क्या होगा? हमारे बाल-बच्चों का क्या होगा?

उनका क्या होगा? यही देखकर सब हँसेंगे कि साठों में सर फिरा भौंका, उन्मत्त हो गया है और क्या! यदि हँस दें।

हे राम! यह आप क्या कह रहे हैं! आश्चर्यपूर्वक रागिनी ने कहा।

"रागिनी! आश्चर्य में पड़ो! उद्वेग न करो। हम दोनों का जीवन भर का साथ है। अनन्त जन्म से मेरा मित्र है। ... मेरा सहचर है। तुम जब अपने साथ मुझे समझ रही हो तो अवश्य इसका चाहती हो। तो इस प्रकार मुझे उखड़कर रखने से लाभ क्या होगा? तुम यदि मुझे पागल समझती हो पर मैं तुम्हें सबका पागलपन स्पष्टतया दिखा सकता हूँ। इन लोगों का मन ही कैसे सकता है! यदि तुम मुझे अपने साथ रख सको तो मैं आत्मद्रोही न बनूँगा। ... मस्त रहा तो भी क्या और न रहा तो भी क्या?"

"यह क्या करने बैठे हैं आखिर! आजतक का किया-कराया सब धूल में मिला रहे हैं? आपकी कीर्ति और प्रतिष्ठा तक कौन पहुँच सका है?"

कीर्ति और प्रतिष्ठा! यह तो मेरी शक्ति का भूषण—मुझे दोनों ने ... वह ... और तो ये दोनों कैसे रहेंगे?

धन्य हो गालव।

"नहीं रोहिणी! आज तो सिन्धु की तरंगों से न कुछ नया संगीत मुझे सुनाई दे रहा है तुम जाओ, मैं भी आ जाऊँगा। तुम तो जाओ रोहिणी मेरी रोहिणी मैं चाहे जैसा होऊँ पर वहाँ भी मुझे अपने हृदय में स्थान देना।

नाथ! आपको कोई नहीं समझ सका तब मैं कैसे समझ सकूँगी? देव! मुझे आवास तक पहुँचा दीजिए।

रोहिणी को पहुँचाकर लौटते समय कोई उनके पीछे पड़ा।

"कौन है?

"मैं हूँ शुनःशेप।

शुनःशेप, तुम अभी तक यहीं।

"मैंने मार्ग के बहुत प्रयत्न किये पर मुझे नींद ही नहीं आती। इसलिए मैं आपकी प्रतीक्षा करता था।

वत्स! तुमने यह सब विद्या कहाँ से प्राप्त की?

"देव! मैंने तो कितने ही पाप करके यह विद्या प्राप्त की है।"

विद्या प्राप्त करने में जो पाप किया जाता है वह पाप हो ही नहीं सकता। मुझे बताओ तो सही वत्स! कि पातक के भय से डरकर तुमने ये संस्कार क्यों न प्राप्त किये?

सिन्धु के तट पर चलते चलते शुनःशेप ने ऋषि को अपनी पूर्ण आत्मकथा कह सुनाई। उसने अपने मार्ग के रोड़े बताये, विद्या प्राप्ति का उत्कट हठ और शब्द-शब्द की समझ कठिनाइयों को पार करने की उसने अपनी आतुरता का वर्णन किया और अपने को वेचन का पात्र करके सुरक्षित पिता के पास से विद्या प्राप्त करने के कठिन प्रयत्नों का विस्तारपूर्वक वर्णन किया। उन्होंने यथार्थ विद्या तपस्वियों के मुख से एक बार सन्त्वानार सुनने की अभिलाषा को सम्पूर्ण करने के लिए अपने को अर्पित करने का भी अपना संकल्प कह सुनाया। यह सुनकर

कि पुरुरवस में बिना कहीं तो मेरी कीर्ति और प्रतिष्ठा न जाय। पुरोहितपद भी छोड़ना न पड़े

विश्वामित्र हँसे : यह सब क्यों तो ?

नहीं, नहीं! तुम्हें तो अपने लक्ष्य के ही पथ पर चलना चाहिए— [illegible] ही कहलाए—अपने ही विनाश के मुँह में वहीं सुख-शान्ति मिलती।

३

उस दिन भृगुओं के राजा [illegible] के साथ मन्त्रणा करते थे। राजा [illegible] और लोपामुद्रा की माता के भाई होते थे। हिमालय की कन्दराओं के प्रदेश में रहने वाले ये वृद्ध पुरुषश्रेष्ठ हिमालय के अवतार के समान थे। पहाड़ के समान उनका शरीर अभी तक अजेय था। बहते हुए मान से अङ्कित सिकुड़न उनके पूरे शरीर पर थीं। और उनके सिर के निकलते बाल हिमालय का स्मरण करा रहे थे।

जमदग्नि की चिन्ता का पार न था, इसलिए उन्होंने भृगुओं में विद्या निधि मान आज [illegible] वृद्धों को बुलाया [illegible] विश्वामित्र के बड़े पुत्र देवरात [illegible]। भरतों के सेनापति [illegible] इत्यादि को भी उस समय वहाँ बुला लिया था।

भरतों पर भृगुओं का—[illegible] कभी नहीं आया था। उस समय राजा गुरु और [illegible] विश्वामित्र इस समय [illegible] थे। तथा [illegible] में विश्वामित्र का भृगुओं का पुरोहित पद छोड़ना यह [illegible] था। तो भी इस पद का पुरोहित [illegible] विश्वामित्र की इच्छा तक नहीं [illegible] थी; [illegible] सब कुछ इस प्रकार व्यवस्थित कर दिया गया था कि विश्वामित्र स्वयं भी इस पद को छोड़ना स्वीकार नहीं कर सकते थे।

और इस समय—जिसके अस्तित्व का किसी को सपना भी नहीं था वह ऋचा का पुत्र भी प्रकट हो गया। [illegible] भरतों ने तो [illegible] को ही [illegible] माना था। भूतपूर्व सेनापति प्रतर्दन और [illegible] न

है इस समय ईश्वर नहीं। यदि हम इस समय शासन में रहे तो हमारी दुर्दशा होगी।

"[illegible] को हम कोन अपने साथ [illegible] फिर भी हम [illegible] है? अर्जुन के [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। इस [illegible] के [illegible]। [illegible] निकालते हैं। यदि उनके हम सब [illegible] [illegible] हम ही [illegible] नहीं करना होगा।"

"पर अब क्या होगा?" [illegible] ने कहा। "मुझे इस [illegible] वाला [illegible] का विश्वास नहीं है।"

इस [illegible] को तो बुलाया। वह [illegible] इस [illegible] में [illegible] [illegible] है वह तो [illegible] [illegible] ने कहा।

आओ [illegible]। हम [illegible] आओ [illegible] ने कहा।

[illegible]। [illegible] नहीं से [illegible] [illegible] को बुलाने [illegible] गया।

[illegible] तो हम समय पर [illegible] ही है। हम [illegible] [illegible] में हम क्या करना [illegible] [illegible] ने कहा।

[illegible] [illegible] की [illegible] [illegible] है तब तो [illegible] [illegible] की [illegible] कभी नहीं [illegible] [illegible] ने कहा।

"[illegible] भी नहीं [illegible] और न [illegible] [illegible] तो [illegible] [illegible] भी [illegible] [illegible] ने कहा।

"[illegible] तो [illegible] हो" [illegible] ने कहा।

"[illegible] भी [illegible] और [illegible] भी [illegible]। [illegible] [illegible] के साथ सुभद्रा का बहुत अच्छा सम्बन्ध है।

वह तो मेरी [illegible] का अर्जुन के साथ विवाह करना चाहता है। [illegible] इस प्रकार [illegible] नहीं है" [illegible] ने कहा।

"[illegible] ने हमारे [illegible] के साथ [illegible] विवाह करा दिया होता [illegible] की [illegible] कम हो जाती।"

[illegible] के [illegible] पर [illegible] हो गई।

तुरन्त ही आप सबको वहाँ चला जाना चाहिए, ऐसा प्रभु की आज्ञा है।'

'अच्छा।

"और अगले दिन मद्र देश के राजा धनु न भी तीन मन्त्र वीरों के साथ आ पहुँचे। ऐसा ज्ञान पड़ता है कि ये सब यादा वे कष्ट को दे देंगे।'

"अच्छा! मुनिवर ने आरम्भ तो बहुत सुन्दर किया है" मित्र हँसे। ज्यों-ज्यों कथा बढ़ती जा रही थी त्यों-त्यों वे अधिक उत्सुक होते जा रहे थे।

और सूतकवि ने कहलवाया है कि शेष ने लोमहर्षिणी को देख कर कहा 'राजा सुदाम ने वशिष्ठ मुनि की सम्मति से राजा धनु न के साथ लामाक्षी का विवाह निश्चित किया है।

"मैं उससे विवाह नहीं करूँगी, लोमा ने क्रोधपूर्वक कहा।

इधर वे स्वयं लामाक्षी को बुलाने यहाँ आनेवाले हैं।

इस अहंकार के राजा से मेरी पुत्री कभी विवाह न करेगी" इन्द्र बोल उठे, मैंने सुना है कि वह बहुत ही दुष्ट व्यक्ति है।"

राजा सुदाम की आज्ञा हो चुकी है दीर्घ ने कहा।

मैं नहीं जाऊँगी लोमा ने दृढ़ता से कहा।

धनु न इसके योग्य नहीं है। लोमा के जैसे संस्कार हैं उससे तो यह उसे जीवित मार डालने जैसा काम होगा अमन्द ने कहा।

थोड़ी देर तक कोई कुछ नहीं बोला।

राजा फिर रेणुकान कहा, तो लामा को किसी प्रकार भी बचना चाहिए।

"मैं तो दूर रहा, कुम्भ ने कहा।

'लामा वास्तव में कठिनाई में पड़ गई है यहाँ विचार करो

"पागल बनाने वाले पति लाएँ ही क्यों! आप कहें तो मात में रम [illegible] को भेज दूँ। इस गौड़ धूप में मन मोहक यहाँ स्थिर होकर इस [illegible] होगा।" रेणुका ने कहा।

'हाँ हाँ राम को भेजो। उस को मैं दो चार शब्द सिखा [illegible]— जिसका तुम किसी को नाम भी नहीं है। कुश इतना कहकर [illegible] हँसे।

'हाँ हाँ ठीक है। मैं भरत के साथ दादा के यहाँ चली जाऊँगी' सोमा ने अपना अन्तिम निर्णय सूचित किया।

"रेणुका!" जमदग्नि ने कहा "तुम इन बच्चों के साथ [illegible] बहुत दिनों से दादा के यहाँ गई भी नहीं हो, और सोमा को दोनों भेजोगी तो सुदास उस शान्ति से रहने भी नहीं देगा। तुम साथ रहोगी तो ठीक होगा।"

"भृगु श्र [illegible] जो कहते रहे हैं वह सत्य है। सुदास कब क्या कर दे, इसका कोई [illegible] नहीं है" त्रिमद ने कहा।

"रेणुका भी मेरे यहाँ बहुत वर्षों से नहीं गई [illegible] क्यों देर है रेणुका? तुम तैयार हो जाओ" राजा कुश ने कहा।

"क्यों रेणुका?" जमदग्नि ने पूछा।

"जैसी आपकी इच्छा" रेणुका ने कहा।

"त्रिमद! तुम लोगों को लेकर [illegible] प्रस्थान करो। [illegible] दादा और रेणुका [illegible] आगे [illegible] उसी [illegible] मिलेंगे। [illegible] कोई [illegible] नहीं होगी न?" [illegible] ने पूछा।

"नहीं होगी।" त्रिमद ने विश्वास दिलाया था।

"[illegible] के समय [illegible] शान्ति से रहेगा तो [illegible] अच्छा ही लगता।"

"पर मैं अब कुछ समय लूँगा" राजा कुश ने कहा।

इस जनसमूह में भरत, भृगु, अनु और द्रुह्यु अपनी पुरानी भूमि में घूमने लगे। पाञ्चालों का सुराज देखने के लिए उत्सुक थीं।

सबको ऐसा भास हुआ मानो भरत और भृगु आज दासता से मुक्त हुए हों। जमदग्नि जिनके पुरोहित थे वे अनु और द्रुह्यु भी इससे प्रसन्न हुए थे। सबके मन में यही विचार समा रहा था कि चलो तृत्सुओं के शासन से मुक्त तो हुए।

केवल विश्वामित्र ही अकेले दुःखी थे। उनका पुरोहितपद इन लोगों की जातियों को एकता में बाँधने वाला बन्धन था। आज वे बन्धन टूट गए और वे अल्प बुद्धि इस प्रकार प्रसन्न हो रहे थे मानो मुक्ति मिल गई हो। वे नहीं जानते थे कि भरतों और तृत्सुओं के मध्य युद्ध होता और एक पुरोहित होने से ही सप्तसिन्धु में सुदास एकछत्र राज्य करता था और असीम सुख और शान्ति व्याप्त थी। अगस्त्य और लोपामुद्रा की दूरदर्शिता द्वारा रचित संहति से ये इस प्रकार बद्ध हो रहे थे—और ये मूढ़ आनन्द का अनुभव करते थे। पर इसका परिणाम क्या होगा? वैमनस्य, विग्रह, हाहाकार—और क्या!

इस प्रकार विश्वामित्र का हृदय खिन्न था, पर गाधिजी के हर्ष का पार नहीं था। देवदत्त की आँखों में नया तेज चमक रहा था। उसके गर्व की सीमा नहीं थी। इस प्रकार विश्वामित्र के सभी गुरु और शिष्य सब मुक्ति के आनन्द का अनुभव कर रहे थे।

विश्वामित्र के ऊपर उनके अपने गिने जाने वालों में आज विष उतार स्पष्ट दिखाई देता था। इतने वर्षों तक उन्होंने विशाल आर्यों का एकत्र करने का जो प्रयास किया था वह निष्फल सिद्ध हुआ। वे कहीं और सब नहीं समझ रहे थे और वे सबके आनन्द का नहीं अनुभव कर रहे थे। उनके घर इन सबके बीच में एक सुन्दर सागर देता हुआ था। पर उनके हृदय में कहीं कटुता नहीं थी, कल्पना नहीं थी, क्योंकि उन्होंने स्वयं अपने हाथों रचा था। अपनी निष्फलता को उन्होंने सहा था। मुक्ति में उन्होंने अपना कल्याण और आनन्द माना था। वे

इम्पाद में पा लिख स्त्री पुरुषों को इस प्रकार देख रहे थे मानो स्वत तट पर खड़-खड़ नदी में डूबते हुए मनुष्यों को देख रहे हों। अब वे भी दुःख द्रवित थे। उनकी रखी हुई सब वशिष्ठ के स्पर्श से नष्ट होगई थी। यह भी उनके खिन्न हृदय का कारण था। यह सृष्टि उन्हें कालाग्नि में प्रवीण होती थी। स्वयं अब क्या करें यही एक प्रश्न रह गया था।

और वह उमा का पुत्र

उसके लिए तो अब भृगुओं में ही व्यवस्था करनी पड़ेगी। भरतों में कोई उस सुख में रहने नहीं देगा। सब उस चंद्रिका मानते थे। इसी लिए जमदग्नि ने उसे भगाया था। मुनि वृद्धश्रवा भी उसमें रस लेते थे। किन्तु प्रात काल के भस्म रथ के समय इस बालक को उन्होंने देखा। उसकी आँखें उस पर ही स्थिर थीं—अर्जित मंत्र में पूर्ण भाव से। वे पथ भी उस ही स्थिर नयनों से देख रहे थे। उनका मन चाहे तो वे उसे अपने ही साथ रक्खें उसे अपनी विद्या का स्वामी बनावें। पर प्रात काल मंत्र में साथ रहे थे उसमें उसका स्थान नहीं था।

८

दोपहर को सत्युओं का सम्राट् दृढ्व्रत अपने पुत्रवधुओं के साथ काम्यकियों को ले जाने के लिए आ पहुँचा।

सम्यों ने विश्वामित्र पर जो कृपा की थी और हरिश्चन्द्र का जो अपमान हुई थी उस विषय में उसने सुना नहीं था। वह तो यह आशा था कि अब वह हरिश्चन्द्र के ग्राम में पहुँचेगा तब तक मित्र मित्र आमंत्र पर चुके होंगे और देवताओं आदि तुरन्त आत्मा को दिखला देंगे।

पर हरिश्चन्द्र के ग्राम के निकट आते ही उसके आनन्द का पार नहीं रहा। वहाँ उसे स्वच्छ और दुःखी [illegible] रूप सुन्दर दिखा, और अधिक निकट आने पर उसने सभी [illegible] यहाँ कर्म करते देखा। उसका आश्चर्य हुआ सभी [illegible] युद्ध की तैयारी में हैं। वह काया और पुत्रवधू के [illegible] देखा [illegible]

हे देव ! मैं क्या कर सकता हूँ ? [illegible] के [illegible] भी यदि आर्यावर्त में न समझाए [illegible] तो मैं [illegible] को [illegible] कैसे शान्त कर सकता हूँ [illegible] अपने आप सुख स्वीकार नहीं करते तो समस्त आर्यावर्त उसे कहाँ से स्वीकार कर सकता है [illegible]

"हे देव [illegible] तो तुम छोटे [illegible] हो क ?" [illegible] ने धीरे से कहा [illegible] तो मुनिवर से [illegible] कहना।

मुनिवर [illegible] के द्वारा [illegible] मुझे ही आपका [illegible] आपका [illegible] कह दिया है।

देवव ! विश्वामित्र [illegible] मुनिवर को [illegible] कहना कि देव ने [illegible] मैंने [illegible] किया है और [illegible] भी करूँगा [illegible] के कहने से और [illegible] के [illegible] के लिए पुरोहित स्वीकार किया था [illegible] मुनिवर को इक्ष्वाकु प्रधान होकर वह [illegible] रहा हूँ। [illegible] का स्वामित्व भी [illegible] है। [illegible] पर सुरक्षित रखूँगा। किन्तु अब [illegible] सार्वदेशिक सुन्दर और समृद्ध [illegible] उत्तरदायित्व मेरे सिर पर नहीं रहेगा।

देव [illegible] सुनता रहा।

"[illegible] ने [illegible] किया है [illegible] किया है यह सब ठीक है [illegible] विश्वामित्र ने [illegible] कहा "किन्तु [illegible] के विषय में [illegible] का [illegible] कैसे प्रसन्न हो सकते हैं ? किन्तु मुनिवर इस समय [illegible] हो सकते [illegible] है ! इस विष को उतारने का मैं प्रयत्न करूँगा— तुम्हारी रीति या [illegible] की रीति से नहीं पर अपनी रीति से—केवल अपनी ही रीति से।

मुस्काना कठिन होगा।' फिर थोड़ी देर पश्चात् वे धीरे-धीरे ... न की इच्छा।

## ९

पांच सौ चुने हुए हैहय घुड़सवारों समेत अर्जुन इस देश में आया था। सुदास ने रोका था पर अर्जुन लोमा को लाने के अधीर था और हठ करने पर अर्जुन को कौन समझा सकता था!

अर्जुन तो प्रचण्ड योद्धा था। उसके हलायुध प्रत्यञ्च ... दिखाते थे। उसकी भयङ्कर मुखमुद्रा त्रास फैलाती थी। उसके ... यन्त्रायोंकी गर्जनासे सनाट् करती थीं। सप्तसिन्धुकी सीमा से दूर ... पर बहती हुई रेवा के तीर तक उसका धाक जमी हुई थी।

बहुत वर्षों से सुदास ने उससे मैत्री कर रखी थी। आर्यों ... उनके मित्रों से लड़ने का प्रसङ्ग आने पर अर्जुन को साथ रखने से ... विजय प्राप्त होगी इस कारण उससे अच्छा सम्बन्ध रखने के लिए ... बहुत बातें सही भी थीं।

अर्जुन के सामने सप्तसिन्धु के राजाओं की कोई गिनती नहीं ... पर उनके संस्कार उनका सौजन्य और उनका शिष्टाचार देख ... उनके साथ मैत्री जोड़ने की इच्छा होती थी। उसे अपनी शक्ति ... बहुत गर्व था पर इसी इच्छा से वह गर्व भङ्ग हो जाता था। ... सुदास ने उससे सहायता मांगी तब उसने तुरन्त हां तो कह दिया ... एक ही शर्त पर कि लोमा उसकी पत्नी बनेगी।

अनूपदेश के जङ्गलों में बसनेवाले राजा के रहन-सहन का सुदास ... तनिक विचार नहीं था। उसकी अनेक स्त्रियां थीं इस प्रकार ... किंवदन्ती भी प्रचलित थी। उसमें संस्कार बहुत ही कम थे वह तो ... ही दिखाई देता था। तप और आचार जैसी भी कोई वस्तु उसके ... में होगी यह भी शङ्कास्पद था। मुनि अगस्त्य और भगवती लोपामुद्रा ... वहां आश्रम बनाकर निवास कर रहे थे इसके अतिरिक्त इस देश के ... विषय में और कोई अच्छाई सुनने में नहीं आई थी। सप्तसिन्धु के

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

इच्छा थी। किन्तु सबसे विशेष इच्छा यह थी कि वह [illegible] की
कन्या के साथ विवाह करे। राजा दिवाकर की पुत्री उसकी [illegible]
उसको पाकर [illegible] पावन करे उसके चरण [illegible] —[illegible]
समय यही एक बात उसकी महत्त्वाकांक्षा की सीमा थी।

इसके कान वनराज के समान सावधान थे। दूर से आते हुए कोला-
हल [illegible] उसने [illegible]। उसने कान ऊँचे किये। [illegible]
प्रकार [illegible] किया जाय ? इतनी दूर में [illegible]
आ सकता है ? उसने [illegible] की आज्ञा दी और [illegible]
[illegible] लेकर जिस ओर से [illegible] आती थी उस ओर चल पड़ा।
उसके सैनिक तो [illegible] में [illegible] इस प्रकार [illegible]
[illegible] नहीं था। [illegible] रात [illegible]

[illegible]

[illegible]

ओह ओ !" अर्जुन ने कहा। क्योंकि उसके दादा के गुरु थे यह स्मरण करके उसने बड़ों का उचित सत्कार किया।

मैं भाग्यशाली हूँ, जहाँ जाता हूँ वहाँ मुझे लाभ ही होता है।

विमद् ने आँखों के संकेत से राम और लोमा को चुप रहने की सूचना दी।

"तुम तो हमारी लोमहर्षिणी को लिवाने के लिए आये होगे ?

'हाँ

'लोमा नहीं है इसलिए सेनापति इसको लेकर ही जायेंगे,' विमद् ने कहा।

लोमा सहम गई और नीचे देखती हुई अम्बा के पास सरक गई।

'हाँ लाऊँगा ही। नहीं लाऊँगा तो जाऊँगा कहाँ !

अर्जुन बोलते बोलते रुक गया। राम के मुख पर भयंकर निष्ठुरता व्याप्त हो गई थी। उसकी आँखें विकराल होकर अर्जुन को देख रही थीं। अर्जुन को उसकी दृष्टि देखकर क्रोध आ गया।

वृद्ध ! मेरी ओर तुम इस प्रकार क्यों देखते हो ?

और तुम दस्युओं के समान बातें क्यों कर रहे हो ! राम ने कहा।

किन्तु अर्जुन और निर्भयता के कारण वैसा ही ...कर के एक दूसरे को देखते रहे। फिर अर्जुन मूँछों पर ताव देकर हँसा।

जानते हो तुम्हारे दादा हमारे गुरु थे ?

'तुम्हारे दादा के आचरण से मेरे दादा तुम्हारा ...खाकर बड़े आए थे यह भी मैं जानता हूँ।

'हा हा हा दादा गये।' अर्जुन ने हँसते हुए कहा अब रहे हम लोग।

'हाँ अब रहे हम लोग।' राम ने उसके शब्द कण्ठ से दोहरा दिये

[illegible] है।
[illegible] नहीं है
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible] नहीं है [illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible] है [illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]

"[illegible] नहीं है [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

"[illegible]
[illegible]
"[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
"[illegible]
[illegible]

विवेकचंद्र की आँखों में [illegible] [illegible] से उठे। दुख की [illegible] उसका सिर घूमा।

उमा— उमा —उमा——! उसके हृदय में प्रतिध्वनि गूँज रहा।

# पाचवा पवाड

सरस्वती में मल गए। आर्य ग्राम से आये लोग सब आश्रम छोड़कर सरस्वती में सुसज्जित होकर अग्नि के विकास के लिए नवग्राम में आने लगे और तप तथा विद्या के धाम, ऋषियों के आश्रम नव पल्लव उग रहे थे। सर्वत्र आर्य-संस्कारों की विशुद्धि साधन के प्रयत्न होने रहे।

भरत और भृगु बड़े गए थे परन्तु उनके स्थान पर अब दूसरे लोग कैसे थे। पहले के समान ही गृत्समद से आर्यों का मुख्य नगर बन गया था। अन्तर केवल इतना ही था कि पहले यह सौम्य था अब क्रूर बन गया था।

राजा सुदास की अभिलाषा का दिन निकट आ गया था। उसने चक्रवर्ती पद प्राप्त किया था। गाँव गाँव में उसका शासन माना जाने लगा। सब आर्यों ने दासों को गाँव से बाहर निकालना और दान दक्षिणा का अधिकार नष्ट करना प्रारम्भ कर दिया था। आर्य कुल के आचार विचार की शुद्धि की रक्षा के लिए नये नियम बनाए और स्वीकार किए जाते थे। प्रत्येक संस्थान में सब राजा लोग सुदास की इच्छा हुए सभा में सम्मिलित हो रहे थे।

जब मुनि पर्यटन करके लौटे तब सुदास ने उनसे कहा कि हैहय के नये हैहयों का राजा मृत्यु से भी गया है। मुनि को यह बात अच्छी न लगी। स्वच्छाचारी मृत्यु ने से उन्हें अविश्वास था। उनके बार दूसरों की आराधना करके उन्होंने इस भयंकर राजा का हृदय निर्मल करने के लिए साधना की थी। आर्यावर्त की विजय में वह एक अंकुश था। उसकी मैत्री का स्तम्भ दृढ़ करने के लिए उससे लोमा का विवाह आवश्यक था और मुनि का यह भी ख्याल था कि लोमा के साथ विवाह करने से मृत्यु एक संस्कार जागृत होंगे लोमा जैसी आत्मसम्मान युवती उस पर शासन करेगी। दूर स्थित माहिष्मती नगरी की जब वह रानी बन जायगी तब उसके कारण सारस्वता से भी अधिक विशाल रेखा के पार विद्या और तप का प्रचार होगा, और यदि इस की इच्छा होगा

तो उन्हींके हाथों आयावर्त का समाप्त होना नहीं के और तक फैल जायगी।

अनेक बार मध्यरात्रिमें मन्त्रोंका ध्यान करते समय उन्हें प्रतीत हुआ थी कि अर्जुन और लोपामुद्रा के द्वारा आर्यत्व की विजयका एक कदम था। इसमें आयावर्त की जय अवश्य था। और उनके द्वारा अर्जुन का हृदय संस्कारयुक्त करनेकी शक्ति उनके लिए वे देवोंकी प्रार्थना करते थे। उन्हें कभी-कभी ऐसा लगता भी था कि वह शक्ति देव उन्हें प्रदान कर रहे हैं।

तो भी जब वे अर्जुन से मिलते तब उनका हृदय काँप जाता था। उसमें धर्म या संस्कार के बीज थे या नहीं इसमें भी उन्हें शंका थी। किन्तु देवों को यह काम कराना ही था इसलिए उसे शुद्ध करने की शक्ति देव अवश्य प्रदान करेंगे ऐसा मुनिवर वशिष्ठ मानते थे।

तो भी लोपामुद्रा के पीछे अर्जुन का जाना उन्हें तनिक भी अच्छा न लगा।

एक दिन सन्ध्या समय उन्हें समाचार मिला कि अर्जुन कुछ सैनिकों के साथ कुछ दस्युओं को पकड़ कर तृत्सुग्राम और आया है। इसके और उसके सैनिकों का भारी न बन्दी किया था और बहा हुआ था अस, शिल्प आदि इनमें जीते थे।

यह अपूर्ण बात सुनकर वशिष्ठ आश्चर्य चकित हुए। दूसरे ही क्षण यह अकल्पित युद्ध बन गया, इससे वे खिन्न हुए। आकर अर्जुन उनसे मिलने क्यों नहीं आया यह भी उनकी समझ में न आया। वे की बनाई हुई योजना में बाधा उन्हें अच्छी न लगी। मुनिवर ने सुदास के पास समाचार सुनने मनुष्य भेजा किन्तु उत्तर मिला कि इस सम्बन्ध में सुदास को कुछ पता नहीं है और जब उनके इस समाचार प्राप्त भेजा तब अर्जुन पकावट के कारण सो गया था इस से वह नहीं मिल सका पर इतना ज्ञात हो गया कि वह पोतों का दस्यु हो का ही पकड़ कर लाया था।

वशिष्ट का विश्वासघात न था। यह प्रभु न किया कहे चला गया बिना पूछे चला जाना और जा जाना भी नहीं था वह कर आया। वह जो आर्यों को अवगणना कर रहा है इसका भी उन्हें विचार नहीं था। तब तो बस एक ही मार्ग रह गया है—खाला को उसके साथ त्याग के अतिरिक्त उसके उद्धार का कोई उपाय नहीं था।

आतः राजि मुनि ने देवाराधना में व्यतीत की। उन्होंने देव से प्रभु के लिए सद्बुद्धि और अपने लिए शक्ति की याचना की। जिस मनुष्य पर आर्यावर्त का बल और विस्तार अवलम्बित था उसे अपना वहा मानने की प्रेरणा करने के लिए उन्होंने बहुत देर तक देवों की आराधना की।

प्रातःकाल स्नान-सन्ध्या करके जब मुनि स्वस्थ हुए तब एक शिष्य समाचार लाया कि कवि चायमान भार्गव का पुत्र विमद आया है और तत्काल मिलना चाहता है।

ऋषि ने विमद को तुरन्त ही बुलवाया।

बहुत दिनों तक घोड़े पर अथक यात्रा करने के कारण वह धूलि धूसरित हो गया था। उसने ज्यों-त्यों मुनि का प्रणिपात किया।

"इस समय कैसे आए विमद?"

"मुनिवर्य लोपा कहाँ है? राम कहाँ है?"

"क्या कहा है?"

"प्रभु ने हृदय के टुकड़े बलपूर्वक यहाँ उठा ले आया है।"

ऋषि की भौंहें तन गईं। राजा दिवोदास की पुत्री और ऋषि जमदग्नि के पुत्र पर ऐसा अत्याचार हुआ! बाहर से शान्त रहने का प्रयत्न करते हुए मुनि ने कहा, "क्या हुआ विस्तारपूर्वक कहो। ऋषि विश्वामित्र का क्या हुआ? और यह सब क्या है?"

विमद ने संक्षेप में सब कह सुनाया। हरिश्चन्द्र का उद्धार, शुनःशेप का मन्त्र दान, ऋषि विश्वामित्र का निर्णय, देवदत्त का रा या नेपक बनना, पुत्र-प्राप्ति की ओर प्रस्थान, लोमहर्षिणी, राजा कुत्स अम्बा, राम

द ६ ३ क युद्ध पक्ष में पर मा पात का पकानाना नहीं भी रहेगा, मुनि ने कहा। 'हम तो अब युद्ध करने निकले हैं। शत्रों के विनाश के लिए हमने जो युद्ध ठाना है उसमें धर्म निर्पेक्ष युद्ध का अवश्य परिणाम होगा।

'इसका क्या परिणाम होगा?'

"ये सब विरुद्ध पक्ष में मिल जायेंगे।"

"मैं लोक सहस्र पुरुषवर और पुत्रवत् लूँगा।"

'परन्तु इस प्रकार यदि प्रत्येक व्यक्ति न अपनी इच्छानुसार मनमाना युद्ध करना तो हमारी शक्ति क्षीण हो जायेगी। यह युद्ध भगवान देव की इच्छा के अनुसार होना था, न कि मनुष्य की इच्छा के अनुसार नहीं। नहीं तो यह अधर्म का युद्ध हो जायेगा।

अर्जुन हँसा। 'अब तो जो होना था हो गया, और हमारा पक्ष तो बहुत बड़ा पक्ष होता है।'

'यही तो दुःख है। अहा यह मेरा नहीं पापाक्ष कहा। तुमने शालन्या और उसके बच्चे का वध कर कितना अनुचित काम किया?' मुनि ने कहा।

अर्जुन चुप रहा। ऋषि की पत्नी और बच्चों का वध करने के समय उसका मन भी कुछ तो दुःखा ही था। और फिर ये अर्जुन तो उसके गुरु के आश्रित ही थे। और बच्चे थे। परन्तु किए हुए व्यवहार पर पश्चात्ताप करना तो अर्जुन का स्वभाव नहीं था।

'क्या आप जानते थे कि वे श्रीराम के मित्र बच्चे हैं?'

'पर उस समय उन्हें पकड़ा क्यों? और मारा क्यों?' मुनि ने पूछा।

'मैं जानता ही था कि यह आपको अच्छा नहीं लगेगा।' हँसकर अर्जुन ने कहा।

इस प्रकार के प्रश्न उसमें कोई उत्तर नहीं सकता था। अर्जुन सत्य

"[illegible]" [illegible] [illegible] निष्कपटपूर्वक [illegible] [illegible]।

"तुम [illegible] [illegible] हेम राजा [illegible] [illegible] हमारे धर्म का [illegible] है [illegible]

वशिष्ठ कहते रहे "[illegible] बिना [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

जा सकता है धर्म का [illegible] नहीं किया जा सकता।

[illegible] अपने [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] उसका [illegible] क्या? उसने कहा।

"[illegible] उसका प्रायश्चित।

"[illegible] [illegible] [illegible] प्रायश्चित [illegible] तो तैयार बैठा [illegible] है [illegible]

[illegible] में हँस दिया। वशिष्ठ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

[illegible] के पश्चात्ताप के [illegible] [illegible] प्रायश्चित स्वीकार नहीं करते।

[illegible] का [illegible] प्रायश्चित नहीं [illegible] [illegible] उसका [illegible] नहीं [illegible]। "और

[illegible] [illegible] करते समय [illegible] के [illegible] में देवी [illegible] का आवेश

[illegible]।

"तुम [illegible] हो [illegible] हो तुम्हारा [illegible] [illegible] है [illegible] है पर

[illegible] के [illegible] पर [illegible] [illegible] है उसकी [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] क्या [illegible] [illegible] सकोगे?"

[illegible] के [illegible] में [illegible] नहीं थी [illegible] जैसी [illegible] थी।

[illegible] के [illegible] पर [illegible] [illegible] का प्रभाव पड़ा। वह अपनी [illegible]

[illegible] और [illegible] [illegible] मैं [illegible] [illegible] [illegible] में [illegible] गया।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] का [illegible] [illegible] से तुम

[illegible] [illegible] को [illegible] [illegible] [illegible] का [illegible] [illegible]। पर फिर उन्होंने स्वर

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] का [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] का पार

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। तुम क्या कर

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] तुम नहीं [illegible]। [illegible] [illegible] मुनि

[illegible] को [illegible] [illegible] [illegible] गई। [illegible]

[illegible] प्रकार बाँसुरी के [illegible] से [illegible] [illegible]

[illegible] शब्दों से [illegible] [illegible]

…के लिए आए थे पर कारणों ने कहा माता और फिर उ हुआ
…न सामने हो में ?

"व कन्दर में और आज के अन्दर रहा था थे … उस प्रकार पर
… सकते।"

"इस बात का कष्ट नहीं करेंगे," सुमन ने कहा।

"अर्थात् आता काम उपयोगी थाने ?" अर्जुन ने कहलाता में

"…"

"अब सब काम को अपना लब छोड़ता। इस लाल आप समर्पित करेंगे। तुम उपाय और होइयो में आता कर राम का अपना …

… हो विषय यह कि स… उस में हृदय में रू …"

"अच्छा को … रस को" अर्जुन ने बड़बड़ाया।

"अच्छा को तुम्हें अपने पास रख। हाँ अभी यहाँ पर था। तुम्हारे स्वरूप में कुछ क्या नहीं है ?" वह हँस के कहा।

"मैं क्या उस राय होकता हूँ ?" अर्जुन ने व शान्त कहता। …ह द गया पर उसने … के बार सुमन के मुख पर करारा देखा। … की स्वतन्त्रता कम नहीं हुई थी। उसके मुख पर के भावों में परिवर्तन हुआ। उसको उतना शान्त हुई और उस पर स्वाभाविक हास्य … हो गया।

हाँ हाँ… भी भूल हुई भूल हुई। मैं यहाँ आया हूँ तब से भूल हो करता आया हूँ। उन दोनों का मैं क्या अभी लिए आता हूँ। … के … बड़बड़ाया। मैं … आया था … दूर में। … उठा … बाहर निकला।

## ४

राम और … की सहा अर्जुन जब … की बार देखा उसमें पहले हो काम बड़ा घबराए हुए थे किन्तु राम का तनिक का कष्ट नहीं था। राम ने उस साहस बँधाया कर … ने चुपचाप … की। …से जैसा अर्जुन … से विवाह करना चाहता

न हाथ रखता हूँ तो क्या तुम्हें कष्ट होता है ?" राम को सुविधा के
का सम्भवत विचलित होना था।

"क्या मदुष्य के समान अन्य भी दुष्ट हैं ?" राम ने पूछा।
अम्ब ने कुछ आश्चर्यान्वित होकर उस बालक की ओर देखा।
पर बालक उसके राजा का अपमान कर रहा था। उसके मन की सा
मन में उस विचार आया और वह राम पर क्रुद्ध होगया।

"हम लोग दुष्ट नहीं हैं" वह हँसा।

"तब अन्य लोगों ने अरुणा को मत कहने को और मुझे क्यों
दस ?" राम ने पूछा।

दूर के मन में जो शंका थी वह राम ने स्पष्ट की। जब से आलोक
स्तूर हर दुखहर गये और हृदय बिना गुरु के होगए तब से इस
अन्य लोगों में की इच्छाएँ यहां नई थीं उन्हा सब समझकर अपने
हृदय में समझते थे। अर्जुन भी अपने बाप दादा के समान मनस्वी
थे। इसके बीच से हृदयों ने बड़ा राज्य प्राप्त किया था, तो भी हृदयों
के मन में मनुष्यों को ले ई हुई इच्छा पुनः प्राप्त करने की आकांक्षा कम
नहीं हुई थी और इसीलिए उनको उसी अत्यन्त इच्छा थी कि यदि
अर्जुन से सम्बन्ध स्थापित हो तो अच्छा हो। दूर अदृश्य राम
की मैत्री के लिए को टटोलता रहा।

क्या तुम हमारे यहाँ चलोगे ?

राम का हृदयों से मिलने का यह पहला ही प्रसंग था पर वह
स्वयं उनका गुरु था और किसी प्रकार भी उन लोगों की दुष्टता कम
करना उसका ही कर्तव्य था, इस सम्बन्ध में उसके बालक मन में तनिक
भी संदेह नहीं था। अब वह समझने लगा तभी से उसने सामान्य लोगों
में एक अनोखी था अद्भुत एक विचित्र प्रकार की श्रद्धा थी कि मैं
अद्भुत का पुत्र हूँ सबसे भिन्न और अद्भुत हूँ, एक प्रकार का देव
हूँ। इस श्रद्धा के विषय में उसने गंभीरता से विचार नहीं किया था तो
भी एक बार के लिए भी वह अस्पष्ट नहीं हुई थी। इस समय अपने

[illegible] की उपस्थिति में [illegible] ने [illegible] मुझको अधिकार दे दिया।

"क्या आप लोगों का [illegible] होकर [illegible] रहना [illegible] है? [illegible] की आज्ञा आप लोगों ने मानी नहीं थी। मैं [illegible] और आप लोग मेरी आज्ञा न मानें तो?" राम ने पूछा।

[illegible] के इस गम्भीर बालक के शब्द और [illegible] से [illegible] [illegible] का अनुभव हुआ।

"हम मानेंगे?" [illegible] राम को समझाते हुए कहा।

"तो फिर आप लोग [illegible] को और उसके बच्चों को इस प्रकार क्यों पकड़ते हैं?" [illegible] कोई [illegible] देता हो [illegible] प्रश्न उपस्थित हुआ।

[illegible] के हृदय में परिवर्तन होने लगा। [illegible] वह [illegible] ? [illegible] से [illegible] हृदय की [illegible] निकाला।

[illegible] वह अब नहीं करें।"

"[illegible] हो सकते हैं?"

[illegible]

[illegible]

[illegible] दिया [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] हैं? [illegible]

ानं दौर। जब तक च प हाल प्रायश्चित्त नहीं करते तब तक वे सो र   रह र सकते हैं ?

"य   तुम्हार जिनका स्वीकार न करें तो तुम्हें  स्वीकार  करने में का ा, कारण त ह ?  भद्रसेन ने राम को बताया।

राम कुछ देर चुप रहा मानो न्याय करने या न करने पर विचार  कर रहा।

"ऊँच नीच लोगों की बाति  अच्छी  नहीं लगती    उसने  कहा  "ग  ा गों  का  राजा  मन पार करता स्व र तब यह हो सकता है।"

य मव स्वर यह छोटा-सा बालक बोल रहा था या उसके  मुख  से ायस्वत स्वयं तिकल ह म बाल र े थे, यह  भद्रसेन  न  समझ सका।

थोड़ा देर में राम ने कहा  'हम दोनों को सदा एक ही दाई  पर न र्यों  दिया  ?  मुझे इस प्रक र सदा अच्छा नहीं लगता। हम दोनों को ही ा पद पर बदला जा  ा ह।

"तुम क ा भाग जाओगे तब ?  भद्रसेन न हँसकर कहा।

"भाग क्यों जाऊँगा ? राम न कहा   अच्छा तो हमार  घोड़े  की  सदा मेरे हाथ में रहता।

"क्यों ?

"नह  पहा आर लोगों के गुर य। आर क न लाने  म  भी  मार सबों का गुरु बनूँ।

"वर मन्दपदवला का तो न्य क दर्शन होते थे, तुम्हें देव दर्शन कहाँ  ा है ?

 ीप स्व ह। मुझे भी न्व दर्शन होते हैं। मैं  बहुत  बार  उनमे बात भी करता हूँ। और  ा व व्यक्तियों क समान मुझे  उनका  आवाह- हन  भी  नहीं करना पड़ता। बहुत ब र जब मैं अकेला घूमता रहता हूँ तब वे मुझे मिलते हैं।

[illegible] । अर्जुन और [illegible] [illegible] का [illegible]
[illegible] देश में [illegible] ।

अम्बरीष और [illegible] ने [illegible] [illegible] का [illegible] का
[illegible] कि [illegible] राम का [illegible] अर्जुन [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] करें ।
[illegible] ।
[illegible] । [illegible]
[illegible] अर्जुन [illegible] [illegible] कर [illegible] ?
[illegible] । [illegible]
नहीं है

[illegible] अम्बरीष की [illegible]
[illegible]

[illegible] । [illegible] में [illegible]
[illegible] । मैं [illegible] । [illegible]
[illegible] नहीं [illegible] । और [illegible]
[illegible] अर्जुन का [illegible] [illegible]
[illegible] के [illegible]
[illegible] के [illegible]
[illegible]

५

[illegible] ।

[illegible] नहीं [illegible] । [illegible] और [illegible]
[illegible] । [illegible]
[illegible] । [illegible]
[illegible] । [illegible]
[illegible] । [illegible]
[illegible] ।

मैंने तुम्हारे लिए सब व्यवस्था कर दी है।

मुझे किसी व्यवस्था की आवश्यकता नहीं है।

पर तुम यहाँ कहाँ से आए?

'मैं आपके आश्रम के बाहर ही था। आपके पीछे-पीछे मैं भी चला आया।

पर मुझे किसी की आवश्यकता नहीं है। अकेला ही जाऊँगा।

मैं आपके साथ नहीं चलूँगा, पीछे-पीछे आऊँगा। आप मुझे रोकेंगे भी नहीं।

ऋषि की आँखों में आँसू आ गए।

'पर वत्स, तुम्हें तो शिक्षा सीखनी है न?

जहाँ आपके चरण पड़ेंगे वहीं रज सिर पर धारण करूँगा। इसी से सरस्वती माता स्वयं प्रसन्न हो जाएँगी।

विश्वामित्र का हृदय भर आया। अहा—यह सम्पूर्ण शास्त्री पुरुष कब से—पुत्र बन गया?

पर मेरा कोई ठिकाना नहीं है, तुम्हें बहुत कष्ट उठाना पड़ेगा।"

आपके बिना मैं भी सुखी न रह सकूँगा।

उठो, उठो, उठो! आपके हृदय में यह आवाज़ सुनाई दिया।

"चलो।"

"क्या आज्ञा है?

विश्वामित्र हँसे, "एक जगह चलना। तब तो मैं ने देखा नहीं।

भगवन्! मैं तो कहती थी कि मैं आपका पुत्र हूँ।

विश्वामित्र चकित।

शुनःशेप ने गद्गद् स्वर से कहा, "मैं जानता नहीं चाहता इतना नहीं चाहता उसके देकर मुझे शिक्षा मैं न पा सकूँगा।"

यह ही इस बात को कहते थे।

"भगवन्! क्या मैं आपका शिष्य बनकर साथ रह सकता हूँ?" उसने पूछा शुनःशेप ने आँखें ऊँची करके।

वसिष्ठ को चिन्ता का पार न था। वह अर्जुन बिना कहे चला गया किन्तु पुत्र चला आया और आशा भी नहीं था वह कर आया। वह मेरी ओर दृष्टि की अवगणना कर रहा है इसका भी उसे विचार नहीं था। तब तो बस एक ही मार्ग रह गया है—लोमा को उसके साथ ब्याहने के अतिरिक्त उसके उद्धार का कोई उपाय नहीं था।

सारी रात्रि मुनि ने देवाराधना में व्यतीत की। उन्होंने देव से अर्जुन के लिए सद्बुद्धि और अपने लिए शान्ति की याचना की। जिस मनुष्य पर आर्यावर्त का बल और विस्तार अवलम्बित था उसे अपना बना मानने की प्रेरणा करने के लिए उन्होंने बहुत देर तक देवों की आराधना की।

प्रातःकाल स्नान-संध्या करके जब मुनि स्वस्थ हुए तब एक शिष्य समाचार लाया कि ऋषि आप्नवान भार्गव का पुत्र विमद आया है और आपसे मिलना चाहता है।

ऋषि ने विमद को तुरन्त ही बुलवाया।

बहुत दिनों तक घोड़े पर अथक यात्रा करने के कारण वह धूलि धूसरित हो गया था। उसने ज्यों-त्यों मुनि का अभिवादन किया।

'इस समय कहाँ से आये विमद?'

'गुरुदेव! लोमा कहाँ है? राम कहाँ है?'

'यहीं कहीं है?'

'अर्जुन हैहय उन्हें पकड़कर कहीं ले जा रहा है।'

ऋषि की आँखें लाल हो गईं। राजा दिवोदास की पुत्री और ऋषि जमदग्नि के पुत्र पर ऐसा अत्याचार हुआ! ... के ...

प्रणाम करते हुए मुनि ने कहा, 'क्या हुआ, विश्वामित्र

विश्वामित्र का क्या हुआ? और ... क्या है?'

विमद ने ...

का अंतरङ्ग

अपना पुत्र न

और अपने बन्दी होनेकी कथा, भृगुओं और पुरुओं का धावा, लामा और राम का अपहरण आदि सब बातें मुनि ने ध्यान से सुनीं।

भरतों और भृगुओं ने तृत्सुओं से विग्रह प्रारम्भ किया क्यों ?"

'विग्रह ! विमद ने आश्चर्यान्वित हो पूछा, भृगु ह भ" ने शशीयसी का जो अपहरण किया है उससे हम सब भृगु श्रेष्ठ भी— बहुत क्षुब्ध हैं। क्या वह पातक अक्षम्य नहीं कहा जा सकता है ?

"ऋषिवर क्या कहते हैं ?"

'उन्होंने हम लोगों से कहा कि इस विषय में तुम्हारी जो इच्छा हो करो। उन्होंने पुरोहितपद और भरतों का राजपद दोनों छोड़ दिये।'

'भरतों की क्या वृत्ति है ?

अब क्या बतलाई जाय ? सबकी वृत्ति तो आपकी ही ओर है।"

वशिष्ठ ने मनुष्य-पाप देवों का उपकार माना। देव सभी कुछ कर सकते हैं ! आपावत उ ह एक दाता जान पड़ा। किन्तु विमद के शब्दों पर उन्होंने पुन विचार किया। उन्हें शंका हुई।

अब क्या बताया जाय कहो ?'' उन्होंने पूछा।

राजा कुत्स, कन्या राम और लामा पर अत्याचार हुआ है। अब और क्या कहा जा सकता है ?"

'मैं अर्जुन को समझाऊँगा। वह क्षमा माग लेगा। प्रायश्चित करेगा। उसे अपने आचार विचार का कम ज्ञान है।

मुनिवर ' आप—आचार के प्रणेता—क्या उसे क्षमा करेंगे ?

क्षमा करने वाला मैं कौन हूँ ? जिसे देव क्षमा करें वही सच्चा। लोमा या उसकी पत्नी होने वाली है। यह लोमा को ले आया इसमें मुझे देव का हाथ दिखाई देता है।

मुनिवर्य, यह आप क्या कहते हैं ? विमद ने उच्च स्वर से पूछा।

उनके पुत्र राम को पकड़कर महापाप किया है। जमदग्नि जैसे सौम्य महापुरुष ने ऐसा काम क्यों किया होगा यह मैं समझता हूँ। तुम शान्त हो जाओ। मैं अभी अर्जुन को यहाँ बुलवाता हूँ और जामदग्नि तथा राम को भी यहाँ बुलवा लेता हूँ।

२

विमद के जाते ही मुनि ने सुदाम को बुलवाया और अपने पौत्र पार्थिव को अर्जुन को बुला लाने के लिए भेजा।

क्षण पर क्षण बीते। थोड़ी देर में सुदाम आया। मुनि ने उससे सब बात कही सुनाई और अर्जुन को बुलाने के लिए दूत भेजे।

अन्त में अर्जुन आया।

'आइए हैहयराज बैठिए' मुनिवर ने कहा।

'यह सब क्या कर आये?' सुदाम ने पूछा, 'भार्गव कहाँ हैं?'

हैहय तो पाण्डु रह गया। 'मैंने तो पुर के राजा सुमन और जमदग्नि की स्त्री पुत्र और पुत्री को बन्दी किया था। पर फिर कोई बड़ी सेना आई। मैंने अपने सैनिकों को लड़ने दिया और उस लड़के और लड़की को लेकर यहाँ चला आया।'

'पर अपने मित्रों पर तुमने आक्रमण किया इसका परिणाम क्या होगा?' मुनि ने धीरे से पूछा।

'और क्या होगा? मैंने उनके मनुष्यों को कैद कर लिया। उन्होंने मेरे मनुष्यों के प्राण लिए। बस लेखा बराबर।'

'यह अनुकम्पा नहीं है और हम लोग बिना कारण मनुष्यों के प्राण नहीं लेते। और पुरञ्जन तथा ऋषि पत्नी?'

"उन्हें तो मैंने छोड़ दिया था।" निश्चिन्त अर्जुन हँसा।

'पर इससे तो अपने ही मित्रों में फूट पड़ेगी' सुदाम ने कहा।

'उसकी अब क्या चिन्ता है?' अर्जुन ने कहा, 'तुम्हारे इन सब मित्रों के बदले मैं क्या कम हूँ?'

अदृश्य इस लड़के की ओर ध्यान से देखने लगा। वह पागल नहीं था इसका उसे विश्वास था। उसने राम का कहा मानकर लोमा को और उसे एक ही घोड़े पर बिठा लिया।

सबसे आगे अर्जुन घोड़ा दौड़ाये चला जा रहा था। उसके पीछे उसके सैनिक थे। राम और लोमा भी उसके साथ ही थे।

अर्जुन को ऋषि के इन बच्चों के प्रति कोई रस नहीं था।

५

उस रात को राम और लोमा जीन पर सिर रखकर पास पास सोये। आस पास सैनिक सोये। और थोड़ा दूर पर अर्जुन सोया। थोड़ी देर पश्चात् लोमा ने कहा।

राम! ये सब मुझसे क्यों ब्याह करना चाहते हैं?

कौन सब?

देखो न! कल वह देवदत्त मुझसे विवाह के सम्बन्ध में कहने आया था।

अच्छा क्यों?

क्यों! तुम्हारा सिर फोड़ने क्रुद्ध होकर लोमा ने कहा। अब वह भरतों का राजा हुआ अब रानी भी तो चाहिए न इसीलिए।

और अर्जुन भी तुम्हें ब्याहना चाहता है क्यों?

वह दुष्ट तो व्याघ्र के समान विकराल है।

राम हँसा तुम व्याघ्री बनो तो बड़ा आनन्द आ जाय।

बस तुम्हें तो हँसी छोड़कर कुछ सूझता ही नहीं। ये सब मुझसे ही क्यों विवाह करना चाहते हैं? मेरी समझ में तो कुछ नहीं आता। और सब कहते हैं कि इस अर्जुन की तो इतनी स्त्रियाँ हैं कि एक पूरा गाँव बस जाय।

राम ने आँखें मूँदीं तुम सबसे अच्छी हो न इसलिए।'

'पर मुझे विवाह नहीं करना है।'

राम ने जँभाई ली। उसकी आँखों में नींद भर आई थी। उसने

प्रकट हुई। विरहाग्नि द्वारा विदग्ध हुई दशरथ में मृत्यु को [illegible] है इसका दुःख अपने के साथ हुआ। इस प्रकार के दो को उस से नाथ इस वचन का [illegible] किया [illegible] करी है वह परम [illegible] सबको दृष्टि में [illegible] हो गया। [illegible] में [illegible] एकत्रित होने लगी।

धनदुर के सरोवर [illegible] जाने लगे। मुनि वसिष्ठ और राजा [illegible] के सम्मुख में [illegible] उपस्थित होकर खड़े होगए। श्वेत वस्त्र पर [illegible] मुनि वसिष्ठ राजाओं और मन्त्रियों को आदेश देने लगे।

"आज का दिन तो देव द्वारा निर्दिष्ट है हम लोग तो निमित्त-मात्र हैं। [illegible] का स्मरण ही हमारा कर्तव्य है। आप विशुद्ध मन [illegible] रहें यही हमारा मत है। आपों की शक्ति द्वारा रक्षित [illegible] ही हमारा [illegible] है। [illegible] का [illegible] ही हमारा धर्म है।"

इन शब्दों का उच्चारण करके मुनि श्रेष्ठ ने मौन की [illegible] दी और [illegible] के [illegible] के लिए मृत्यु, अस्त्र आदि की [illegible] [illegible] पर टूट पड़ीं।